मातबर

अशोक

MAATBAR : A COLLECTION OF MAITHILI SHORT STORIES.

BY

ASHOK

प्रकाशक	:	**सुशील स्मृति**
		लोहना (मधुबनी)
स्वत्वाधिकार	:	पूर्णकला झा
प्रथम संस्करण	:	जनवरी, 2001
पुस्तक प्राप्तिस्थान	:	सी 407, आफिसर्स फ्लैट, बेली रोड, पटना
मुद्रक	:	कला मुद्रण
		बुद्धा कालोनी, पटना
मूल्य	:	साधारण—तीस टाका
		सजिल्द—साठि टाका

'सगर राति दीप जरय'क
सभ सहभागी कें
जे कथा सुनलनि आ
विचार केलनि

एक सँ एकैस

शताब्दी एक सँ एकैस भ' गेल। ई ओकर विकासक लक्षण अछि।

2. विकासक ई लक्षण मैथिली कथा मे सेहो देखबा मे अबैत अछि। प्रारम्भ मे मैथिली कथाक अर्थ छल मैथिली भाषा मे लिखित कथा। किछु दिनक बाद भाषाक संग क्षेत्र जुटि गेल आ मैथिली कथाक अर्थ भ' गेल मैथिली भाषा मे लिखित मिथिलाक कथा। स्थिति आरो आगाँ बढ़ल। मिथिलाक क्षेत्रीय परिधि टूटि गेल। तखन मैथिली मे लिखित मैथिलक कथा मैथिली कथा बनि गेल। किन्तु, मैथिली कथा जाहि परिभाषाक संग एकैसम शताब्दीक प्रारम्भ क' रहल अछि तकर व्याप्ति आरो बेसी छैक। आजुक मैथिली कथा मैथिले कैं नहि, सम्पूर्ण मानव समुदाय कैं सम्बोधित अछि। भाषिक एवं शैल्पिक संरचना मे मैथिल आ दृष्टिकोण मे सार्वभौम–मैथिली कथाक वर्तमान परिचय यैह अछि।

3. अशोकक प्रस्तुत कथा-संग्रह मैथिली कथाक वर्तमान परिभाषाक प्रमाण थिक। मैथिली कथा एकैसम शताब्दीक प्रारम्भ एहि संग्रह सँ क' रहल अछि से रेखांकित कर'वला महत्वपूर्ण बात अछि। एहि संग्रहक कथा कैं एकैसम शताब्दीक आधार-कथा कहि सकैत छी।

4. अशोक विकास मे विश्वास करैत छथि। मनुक्खक विकास हुनक अभीष्ट छनि। किन्तु, ओ विकास कैं पुनरावृत्तिक रूप से नहि देखैत छथि। विपरीत तत्वक एकताक रूप मे विकास कैं देखब हुनक विशेषता छनि। यैह कारण अछि जे अशोक मैथिल समाजक, आ ओहि बहाने सम्पूर्ण मानव-समुदायक, कार्यकलाप मे निहित अन्तरविरोधी विन्दु कैं कथाक विषय बनबैत छथि आ ओकरा एहि रूप मे प्रस्तुत करैत छथि जाहि सँ ओकर अन्तरनिर्भरता तथा संघर्ष देखार भ' जाय।

5. अशोकक कथा मे ई विशेषता ओहिना नहि आयल अछि। ओ जनैत छथि जे वस्तुगत यथार्थ ज्ञानक मूलाधार थिक। तैं ओ अपन कथा मे यथार्थवादी धरातल कैं कखनो नहि छोड़ैत छथि। किन्तु, हुनका ईहो बूझल छनि जे यथार्थ

कोनो जड़ वस्तु नहि थिक। ओ गतिशील होइत अछि। मनु आ मार्क्सक युगक यथार्थ सँ आजुक यथार्थ भिन्न अछि। सामन्तवादी कालक वस्तु-सत्य सँ पूँजीवादी आ साम्राज्यवादी समयक वास्तविकता फराक अछि। यथार्थक गतिशीलताक यैह तत्व आ ओकर परिचय अशोकक कथा कैं अपन समकालीन कथाकारक कथा सँ पृथक् क' दैत अछि।

6. सामाजिक यथार्थ आ संघर्षक अनेक आयाम अशोकक कथा मे रेखांकित भेल अछि। जेना कहि चुकल छी, संघर्षक मूलाधार थिक अन्तरविरोध। आजुक समाजक एहि अन्तरविरोध कैं अशोकक कथा बहुत बारीकी सँ पकड़ैत अछि। उदाहरणक रूप मे संग्रहक पहिले कथा कैं लेल जाय। आजुक पूँजीवादी युग मे मातबर बनबाक लेल मारि भ' रहल अछि। घर सँ ल'क' गाँव धरि, राज्य सँ ल'क' देश धरि आ महादेश सँ ल'क' विश्व धरि मातबरीक लेल युद्ध मचल अछि। एहि सामाजिक यथार्थक व्याख्या थिक मातबर कथा। महाराज नाम सँ सम्बोधित सवा सेरक एकटा चरित्र लग पौआही आ अधसेरी चरित्र सभ जमा होइत अछि। महाराज आ हुनक चौकड़ीक ई चरित्र सभ एहन अछि जे सहजे नीक लोकक प्रतिरोधी तत्वक रूप मे देखार भ' जाइत अछि। स्पष्ट लगैत अछि जे समाज मे नीक आ अधलाह लोकक अन्तरविरोध छैक। किन्तु, बात एतबे नहि अछि। अधलाह लोकक बीच सेहो अन्तरविरोध छैक जे ओकर बजबाक भाषा आ मुद्रा सँ ध्वनित होइत अछि। कथाकार अधलाह लोकक अन्तरविरोध कैं त' देखार करिते छथि, ओकर अन्तर-निर्भरता आ संघर्ष के सेहो सोझाँ राखि दैत छथि। यैह द्वन्द्वात्मक स्थिति समाजक विकासक आधार थिक। विकासक प्रतीक रूप मे धनेशर आ कविक बेटाक चरित्र अछि। एहि तरहैं कथाकारक दृष्टि मे माइनजन के अछि–ई समस्या गौण भ' जाइत अछि, मुख्य होइत अछि अधलाह लोकक बीचक अन्तरविरोध, विपरीत तत्वक अन्तरनिर्भरता तथा संघर्ष आ एहि सामाजिक यथार्थक भीतर सँ सामाजिक विकासक संकेत।

ई तथ्य आ कथ्य आनो कथा मे व्यक्त भेल अछि–अपन-अपन ढंग सँ। सहज-असहज, जिनिस, हिस्सक, सीबन रजकक हितचिन्तक, महतो, सनेश, राग-विराग, आबेस आदि कथा मे अन्तरविरोध आ अन्तरद्वन्द्वक जे तत्व अछि सैह ओकरा बेछप बना दैत छैक। कथाकार घटने कैं नहि, घटनाक संग कार्यरत मानसिकता कैं सेहो सामाजिक यथार्थक रूप मे लैत छथि। जेना-तानपूरा, हरिसिंह देवी आ बूढ़ा जीबैत रहलाह। तानपूरा सांस्कृतिक मूल्यबोधक ह्रासक कथा थिक। विनोदबाबूक बेटा तानपूरा किनबाक लेल व्यग्र छनि आ ओ नहि कीनि दैत छथिन से कोनो खास बात नहि अछि। तानपूराक माध्यम सँ विनोदबाबू सांस्कृतिक चेतनाक विकासक आवश्यकताकैं नकारि रहल छथि। ओ उच्च पदाधिकारीक भौतिक सुख-सुविधाक लौलीपौप देखिक' मातल छथि। एहि सामाजिक यथार्थक अन्तरविरोध तखन आरो धरगर भ' जाइत अछि जखन देखैत छी जे विनोदबाबूक पिता विनोद बाबू कैं संगीतकार बनयबाक लेल की-की ने कयने रहथि। वैह विनोद बाबू अपन बेटा गौतमक संगीतकार होयबाक सेहन्ताक प्रसंग पत्नी कैं बुझबैत छथि–"अहाँ बात बुझबाक कोशिश करियौक। हम कोनो ओकर दुश्मन छियैक? बापे छियैक की ने! अपन बेटा के दूरि होइत हम कोना देखि सकैत छी। संगीत सिखला सँ की होइवला छैक? बड़का ओस्ताद बनत। मुदा आइ. ए. एस. त' नहि होयत। पैघ लोक त' नहि होयत? हाकिम नहि कहाओत। अहाँके नीक लागत की?" पूँजीवादी व्यवस्थाक ई खलनायक बाप बनि क' जाहि तरहें साम्राज्यवादी विस्तार क' रहल अछि से ककरो खून खौला दैत छैक। मुदा, विनोदबाबू एकसरे नहि छथि। हुनका संग हरिसिंहदेवी व्यवस्थाक ओ सोच सेहो अछि जाहि मे बूढ़ि कहाइयो क' सोति बनल रहब प्रतिष्ठाक विषय बूझल जाइत छैक। एतबे नहि, एहि व्यवस्थाकं अभिशाप भोगैत ओ बूढ़ो छथि जे बिआहक नाम पर लोक सभ कैं बजा-बजा क' खुअबैत अपन मन बहाटारबाक व्योंत धरबैत रहैत छथि। विनोदबाबूक धन-लिप्सा जतेक अश्लील अछि ताहि सँ कनेको कम अश्लील बूढ़ाक धन-उपयोग नहि अछि।

7. अशोकक कथाक फलक बहुत व्यापक अछि। नेताजीक कोठा सँ हाकिमक औंठा धरि। गामक श्राद्ध सँ नगरक विधवा धरि। किन्तु, अशोकक विशेषता सामाजिक यथार्थकैं बिटिया क' रखबे धरि सीमित नहि अछि। असल मे ओ समाजक ओहि नाड़ी कैं पकड़ैत छथि जे ओकर जीवन्तताक प्रमाण दैत अछि। एहने धड़कनक कथा थिक प्रतिलोम आ राँड़। प्रतिलोम गामक कथा थिक। गामक सम्पन्न आ विपन्न वर्गक अन्तरविरोधक कथा थिक। किछु गोटेक कहब छनि जे गाम मे आब सामन्त नहि रहल, तैं सामन्ती शोषण आ तकर प्रतिरोधी संघर्षक कथाक जमाना समाप्त भ' गेल अछि। सैद्धान्तिक स्तरपर एहि कथन मे आंशिक सत्यता अछि, किन्तु अशोक कोरा सिद्धान्त मे विश्वास कयनिहार प्रगतिवादी रचनाकार नहि छथि। ओ सिद्धान्त कैं वर्तमान स्थितिक यथार्थ धरातल पर देखैत छथि आ तखन ओहि पर टिप्पणी करैत छथि। गाम मे आब सामन्त भने नहि हो, मुदा सम्पन्न लोक एखनो अछि। बेगार लेबाक ओकर शक्ति भने क्षीण भ' गेल होइ, मुदा बीस टाकाक मामूली दर पर खबासनुमा मजदूर एखनो ओकरा भेटि जाइत छैक। कहबाक अर्थ ई जे सम्पन्नवर्गक कार्यपद्धति मे परिवर्त्तन आयल अछि, किन्तु मानसिकता ठामहि अछि। अशोक एहने मानसवला सम्पन्न लोकक बुद्धिवादी कौशल आ दलित वर्गक जागल चेतनाक टकराहटिक कथा कहैत छथि। कथाक खूबी ई अछि जे सम्पन्नवर्गक शोषण-पद्धति मे आयल महीनीक संग

दलित-वर्गक प्रत्युत्तर-क्षमताक विकासो एहि मे मुखर भेल अछि। सम्पन्न घरानाक बउआक संतुलन दलित वर्गक जबहिराक जाहि उक्ति सँ ढ़नमना जाइत अछि से थिक—'मालिक! एकर जीह बदलि दिऔ ने!' बस, यैह छोटछिन वाक्य बउआक मानसिक सन्तुलन बिगाड़ि दैत छनि। ओ अव्यवस्थित भ' जाइत छथि। एहि अप्रत्याशित प्रत्यस्क्रमण सँ तिलमिला जाइत छथि। हुनका बुझा जाइत छनि जे पेंच कसबाक बुधियारी ओ जनैत छथि त' ओकरा खोलबाक लूरि दोसरो कें आबि गेलैक अछि।

8. अशोकक समाज-अध्ययन कतेक अद्यतन छनि तकर एकटा झाँकी भेटैत अछि राँड़ कथा मे। ऊपर सँ देखला पर ई मनीषक कथा लगैत अछि, मुदा ई थिक ओकर मामीक कथा। ओना, ई ओकर मामीओक कथा नहि थिक—ई अछि एकटा स्नेहशील आ संघर्षशील महिलाक कथा। कर्मठता आ संघर्षशीलताक माटि-पानि सँ बनल मामीक जखन पति मरि जाइत छथिन तखन मामीक जीवन मे कनेक हलचल त' अबैत अछि, किन्तु हुनक दिनचर्या मे कोनो खास परिवर्तन नहि होइत छनि। विधवा भइयो क' हुनक व्यवहार पूर्ववते रहैत अछि। हुनक आचरण शोकाकुल नहि होइत अछि—ठीक ओहिना जेना मनीषक विधुर पिताक कार्यकलाप नहि बदलैत छनि। तेँ राँड़' वस्तुतः ओहि सामाजिक अन्तरविरोधक कथा थिक जाहि मे विधुर आ विधवाक जीवनशैली मे भिन्नता होयब अनिवार्य मानल जाइत अछि। कथा एहि अन्तरविरोध कें अत्यन्त सूक्ष्मता एवं तीव्रताक संग प्रस्तुत करैत अछि। ई अन्तरविरोध पुरुष मातबरीक प्रतिफल थिक। एकर सीर ततेक निच्चा धरि धँसल अछि जे मनीष सन प्रगतिशीलताक आग्रही लोक जखन मामी कें विधवा रूप मे नहि देखैत अछि त' क्षण भरि लेल स्तब्ध रहि जाइत अछि। ओकर पुरुष अहं पर चोट पहुँचैत छैक। किन्तु, ओ अविलम्ब अपना कें सम्हारि लैत अछि। ओकर इच्छा मामीक रूप मे भकरार भ' जाइत छैक।

एहिठाम एकटा विन्दु विशेष रूप सँ उल्लेखनीय अछि। विधवा-जीवनक दयनीयता के अपना ओहिठाम धार्मिक आवरण देबाक रीति-रेवाज अछि। यैह कारण थिक जे कथा मे अनेक धार्मिक-प्रसंग आयल अछि। नेपोभाटिनक प्रसंग मनीष कें धार्मिक जड़ता पर विचार करबाक अवसर दैत छैक। धर्मक सम्बन्ध मे ओकर धारणा बदलैत छैक। तेँ ओ मामीक कार्य-कलाप कें सही साबित करबाक क्रम मे मोक्षकामी मैथिलक काशी अयबाक प्रसंग हुनक आर्थिक क्षमताक उल्लेख करैत अछि। मामीक धर्म-ज्ञान एहि सँ प्रभावित होइत छनि। हुनक दृष्टि बदलैत छनि। माने ई जे विधवा अथवा मात्र नारीक रूप मे मामी एकटा सामाजिक यथार्थ छथि। ओहि यथार्थ कें चेतना मे परिवर्तित होयबा मे मनीषक इच्छा सेहो प्रेरक होइत छैक। तखन मामी एकटा सामाजिक चेतना बनि जाइत छथि—एहन सामाजिक चेतना जाहि मे विधवा अथवा महिला होयबाक कारणे नारीक अवहेलना नहि होइत छैक। एहि तरहें राँड़ सामाजिक चेतनाक कथा भ' जाइत अछि। ई तथ्य कथाक तानी-भरनी बनि क' कथा मे ताहि तरहें आयल अछि जे ओ पाठकक संवेदना-संसार मे प्रवेश क' जाइत अछि—स्वतः, अनायास, अलक्षित। यैह विन्दु थिक जे अशोकक कथा कें बेछप बना दैत अछि।

9. समकालीन कथाकार मे अशोकक विशिष्टताक एकटा आरो कारण अछि। हिनक कथाक कथ्य सार्वभौम होइत अछि, मुदा ओकर बनाबटि मैथिल रहैत छैक। कथाक तानी-भरनी अर्थात् संरचना मे मैथिल सुवास रहैत अछि। ई काज अशोक दू तरहें करैत छथि—खिसक्कड़ बनि क' आ यथार्थ-वर्णनक विस्तार मे जा क'। हिनक कथाक कथा-शक्ति (नरेटिभ इनर्जी) अद्‌भुत अछि। गाम-घर मे खिस्सा कहऽवला जेना श्रोता कें बान्हि क' रखैत छल तहिना अशोकक कथा पाठक कें अपना मे लपटा लैत अछि। हिनक कथा एहि तथ्यक प्रमाण थिक जे जकरा हिन्दी मे 'किस्सागोइ' कहल जाइत छैक से आजुक कथा-रचनाक सेहो एकटा सबल तत्व अछि। अशोकक कथा कहबाक ढंग आ भाषा खाँटी मैथिल खिसक्कड़वला होइत अछि आ से ओकर आकर्षण कें दोबर क' दैत छैक।

अशोकक कथा-शिल्पक दोसर विशेषता, जे ओकरा मैथिलीक कथा बनबैत अछि, से थिक यथार्थक विस्तृत वर्णन। हमसभ देखि चुकल छी जे प्रगतिवादी दृष्टिकोण सँ सामाजिक यथार्थक उपस्थापन हिनक कथाक मुख्य विशेषता थिक। प्रगतिवादी कथाकार विपन्न वर्गक कथा लिखबाक क्रम मे सम्पन्न वर्गक यथार्थ कें बुझबाक प्रयास नहि करैत छथि। फलतः हुनक प्रस्तुति एकांगी भ' जाइत अछि। अशोकक कथा एहि सीमा सँ मुक्त अछि। ओ सामाजिक यथार्थ कें सम्पूर्णता मे जनैत छथि, तेँ कथा मे जत'-जे प्रयोजन होइत छैक तकरा विस्तार सँ रखैत छथि। उदाहरणक रूप मे प्रतिलोम कथा कें देखल जाय। कथाकार सम्पन्न आ विपन्न वर्गक प्रतीक-पात्रक पूरा खानदान कें, खानदानी चालि-चलन आ मानसिकता कें राखि देलनि अछि। तकरा बाद ओ अबैत छथि श्राद्धस्थली पर। ओहि ठामक क्रियाकलापक वर्णन करैत छथि। चाय पिलाक बाद हाथ धोबाक मुद्दा पर बहस चलि रहल अछि। अर्जुन स्वाभाविक ढंग सँ काज क' रहल अछि। मुदा, काज आ स्थितिक सहजता असहज भ' रहल छैक। कथाकार छोट-छोट घटना आ टिपौतीक द्वारा वर्गीय स्वभावक तापमान बढ़ा रहल छथि। तकरा बाद अबैत अछि भोजनक प्रसंग। भोज्य-सामग्री सँ ल' क' भोजन कयनिहार धरिक माइन्यूट डिटेल द' क' सम्पन्न लोकक वर्गीय स्थिति कें ओ खोंइचा छोड़ा क' राखि दैत छथि। भोगवादी गजगोहि लोकक वर्गीय चरित्र गजगज कर' लगैत अछि। तखने जबहिरा बउआ कें अर्जुनक जीह बदलबाक बात कहैत छनि। ओ तिलमिला जाइत छथि। कनेकटा

बात पर एतेक बमकब वर्गीय सत्ता पर प्रहारक कारणे होइत अछि। बउआ बमकैत छलाह, मुदा जे पाँती मे बैसल रहथि, भोज खतम भेलो पर उठि नहि सकलाह। जड़ भेल बैसले रहलाह। ओम्हर छोटका सभ हँस' लागल रहय। ओ सभ बउआक व्यथाक स्वाद ओहिना ल' रहल छल जेना नोथारी सभ भोजक संगीतमय स्वाद लेने रहथि। स्पष्ट अछि जे वर्गीय स्थितिक एहन धराह प्रस्तुति दुनू पक्षक गंभीर परिचयक अभाव मे संभवे नहि अछि।

एकटा बात आओर। अशोक यथार्थवादी रचनाकार छथि, मुदा समाजक वर्गीय व्यवस्था सँ उपजल मानसिकता कैं सेहो ओ यथार्थ मानैत छथि। जाति आ धर्म विकास-विरोधी अवधारणा थिक, मुदा जातीय आ धार्मिक मानसिकताक लोक मिथिला कि भारत मे अछि से यथार्थवादी मान्यता थिक। यैह कारण अछि जे अशोक हरिसिंहदेवी, राग-विराग आ सनेश सनक कथा लिखैत छथि। किन्तु, ध्यान देबाक बात ई थिक जे मानसिकताक कथा कहियो क' ओ मनकथा नहि लिखैत छथि। मनोगत व्यापारक वस्तुगत आधार होइत छैक, आ अशोक ओही मूलाधार कैं कथाक विषय बनबैत छथि। हिनक शिल्प आ भाषा मानसिकताक यथार्थ कैं वस्तुवादी बना दैत अछि। कहबाक प्रयोजन नहि जे ई हिनक निजता थिक।

10. अशोकक समाज-चेतना आ तकर कथात्मक अभिव्यक्ति हमरा लेल आह्लादकारी अछि। विश्वास अछि, ओ एक सँ एकैस होयत।

आर ब्लौक
पटना
5 जनवरी 2001 इ.

मोहन भारद्वाज

कथा-क्रम

मातबर

सूर्य डूबि गेल छल। अन्हार पसरि गेल छलै। बिजली दू दिन सँ निपत्ता रहय। लोक कहै छल भयंकर ब्रेकडाउन भ' गेलैक अछि। ब्रेकडाउन होइ कि सिगनलडाउन आब महराजक ओहिठाम पहुँचबाक बेर भेल जाइत छलैक। सभ पहुँचियो गेल हेतै। ओकरा सभ दिन पहुँचै मे देरी भ' जाइत छैक। ओ बड़बड़ाए लागल रहय।

ई साहेबो नमरी हरामी अछि। हमरे सभटा काज लादि देत। एहन-एहन काज जइ मे भूरबला एक्को पाइक आमदनी नहि। आइ महराज के कहबै। कनी हमर साहेब के रगड़ि दहक। लटकल प्रमोशन द' देत। साला, आमदनी बढ़ि जायत त' हमहूँ महीना मे पाँच दिन रम वा व्हिस्कीक जोगार क' सकब। कने इज्जति आर बढ़ि जायत। आइ जरुर कहबै महराज के। मुदा पहिने चली त' जल्दी। पहुँचिते महरजबा पहिने चारिटा गारि देत। ओ सोचैत अछि।

अरे, कविया, कविता कर' लगलीही की रे ? अरे तोरा बुत्ते त' साला दियासलाइयो रगड़ल नहि होइ छौ। अरे, तूँ कविता की करै छीही रे ? ढहुरी भाइ! कहिक' महराज ठहक्का लगाओत। तकरबाद तन्त्र-मन्त्र शुरुह भ' जेतैक। साला, पक्का वाममार्गी अछि। मंत्र पढ़ि के शराब पीबैए। मन्त्र पढ़िक' पहिने चारूकात शराब के छीटत जेना जमीन के शुद्ध क' रहल हो। तकरबाद कोनो अदृश्य के गोड़ लागत। तखन शुरुह हैत। ओ सोचैत चल जा रहल छल।

महराजक दरबारक परमानेन्ट पैसेंजर अछि ओ। कहियो पाँती जोड़ैत छल। मुदा आइ धरि कवि कहबैए। दोहा, फकड़ा आइयो बहुत मोन छै ओकरा। बेर-कुबेर काज दैत छै। साँझ के नित्य महराजेक ओहिठाम ओकर बैसारी होइ छै। बिहाड़ि, पानि, पाला-पाथर कियो ओकर डेग रोकि नहि सकैए। जहिना ओ, तहिना गंगा, जीवन, रामचन्दर, महबूब आ धनेशर सेहो परमानंट पैसेंजर अछि। सभक अड्डा ओतहि जमै छै। सभ अपन-अपन काज-धन्धा निपटाक' महराजक

दरबारमे जूमि जाइये। साँझ होइत देरी। एहि मे नोकरी ओएहटा करैत अछि। तैं ओकर मोरल डाउन रहैत छै। मोरल अप करबाक लेल एक पेग खतम होइत-होइत ओ झाड़-झूर शुरुह क' दैत अछि। एक हाथ एम्हर देलक त' दू हाथ ओम्हर चलेलक। ककरो चुट्टी कटलक त' ककरो कने गुदगुदा देलक। एहि मे ओ महराजो के नहि छोड़ै छनि। महराजो के नीक लगै छै। खिसिआइतो अछि त' कोनो खोंच नहि रहै छै। कोनो चेन्ह नहि पड़लै अछि आइ धरि। मोन मे कोनो बात नहि रखैए महराज। पूरा महादेव अछि। सभ कहैत अछि। पूरा महादेव। मुदा बप्प रे बप्प ! ओ बाजल करैत अछि,

'हमर आफिस मे जे गुंहचोरा सभ अछि से जे गोड़ि के रखैए बात के। एकदम्मे पेट मे सड़ा दैइये। गुम्हरैत रहैए। साइत एही दुआरे सभ कब्जियत के शिकार अछि। गैस सँ तबाह रहैए। जांघ कने अलगा क' भटाक......।'

ओ सप्लाइ डिपार्टमेंट मे अछि। आपूर्ति पदाधिकारी के मातहत। गंगा डीलर अछि। जन वितरण प्रणाली के। सौंसे कोटा बिलैक क' दैत अछि। अफसर सभ के महिनबारी बान्हि देने छनि। जीवन ठीकेदारी करैए। बिजली बोर्ड मे सिमेंटक पोल सपलाइ करैए। रामचन्नर के भाड़ा पर रिक्शा चलै छै। पन्द्रहटा रिक्शा छै। फी रिक्शा बैसलठाम तीस टाका लैत अछि बारह घन्टा के। महबूब गिट्टी आ बालु के धन्धा करैए। धनेशर चमरा सप्लाइ करैए। बाटा कम्पनी के। कहाँदन नेपाल सँ चोरा के माल-जाल, बाछा-बाछी टपा लैए। महराज त' महराज अछि। राजा अछि। कतेक आ कोन धन्धा करैए से के कहि सकैए। जे वस्तु चाहब सभ सपलाइ क' देत। आइ काल्हि त' रैली सभ लेल लोको सपलाइ कर' लागल अछि। जे काज कहबै। चिक्कन जकाँ क' देत। एकदम ओस्ताद अछि। यारक यार। एहन दिलदार नहि देखल अछि। ठीके-ठीके दरभंगा महराज। धनि दरभंगा, दोहरी अंगा।

ओ महराजक ओहिठाम पहुँचल त' ठीके सभ तावत जूमि गेल रहैक। कोनो बात पर ठहक्का लागल रहए। ओकरा देखिते महराज हर्ष सँ होहकारा देलक,

'अरे आ गिया, आ गिया। कविकाठी आ गिया। बिना कविकाठी के जीयब बेकार। पीयब बेकार।'

'वाह, महराज ! कविकाठी के अबिते तोहूँ दोहा भाख' लगलह। आदमी-आदमी के असरि होइ छै।' जीवन पिचकारी छोड़लक।

'मुदा तोहर त' असरि किछु भइए ने रहल छह हौ जीवन। ई साला, लाइन त' निपत्ता भेल छै। तूँ खाली पोले किए सपलाइ करै छह। लाइनो सपलाइ करह। खाली ई पोल की करतै ?'

ओ एकटा खाली कुरसी पर अपन आसन जमबैत जीवन के कहलकै। बगल मे एकटा स्टूल पर पेट्रोमेक्स जरि रहल छल। कातिक मासक कारणे गरमी

त' नहि रहैक। मुदा लाइनक बिना मजा किरकिरा जरुर भ' रहल छलैक। जे बात बिजली मे छै से कत' पाबी। ओकर बात पर जीवन ठिठिआए लागल छल। ई ओकर आदति छैक। दू पेगक बाद त' बात-बात पर ठिठिआएत। महबूब कहलकै,

'त' महराज, आब देरी कथी के ? शुरुह हो जाय तंत्र-मंत्र। चलह रामचन्दर निकालह।' आइ रामचन्दरेक पारी रहैक। रामचन्दर थ्री-एक्स रम के एकटा बोतल निकालि के टेबुल पर रखलक। सभ देखि के प्रसन्न भेल। आह की चीज छै। धनेशर कहलकै,

'अरे, ई कहाँ सँ टपेलही रे ? कैंटीन सँ मारलीही की ? तोहूँ बड़का ओस्ताद छैं। बरगाही भाइ कहाँ-कहाँ सँ निम्मन चीज उठा क' ल' अबै हए।' रामचन्दर मुदा किछु नहि बाजल। अनको एहि सँ कोनो मतलब नहि रहैक जे माल कत' सँ आएल छैक। माल, माल होइ छै। नीक आ बेजाए होइ छै। ओ कत्त' सँ अबै छै ताहि सँ कोन मतलब ? कोन काज ? ई भुसकौलहा गप्प सप्प एत' नहि होइ छै। धनेशरो के एहि सँ कोनो खास मतलब नहि रहैक। ओ खाली अपन खुशी व्यक्त क' रहल छल।

महराज बोतल के' उठाके किरिया-करम केलक। सीलि तोड़ि क' मंत्र पढ़ैत थोड़ेक निकालि क' छिटलक। आ गिलास मे ढार' लागल। पहिल पेग तैयार भ' गेलै। ताबत सूरजा टेबुल पर उसनल अण्डा, तरल माछ आ भूजल चिनिया बदाम आनि क' राखि देने रहैक। महराज कहलकै,

'खीरा आ कनेटा पियाज काटि क' लेने आ। टमाटर रहौ त' सेहो द' दिअहिक।' सूरजा चल गेल। महराज गिलास उठौलक आ बाजल,

'चल शुरु हो जा.....। चीयर्स....।' सभ एक-एकटा गिलास उठा लेलक। एक घोंट क' पीलक। चिनिया बदाम के मुँह मे रखलक। दाँत तर दबौलक। सोन्हगर बदामक स्वाद रमक स्वाद पर सान चढ़ौलकै। जीह छुरी जकाँ लपलपाए लगलैक।

ओकरा संग छुरी बनैत जीहक पैघ परम्परा चल आबि रहल छैक। ओकर बाबा दरभंगा महराजक मोसाहेब रहथिन। महराजक संगे ओहो राशि-राशि क' शराब पीअथि। दरबार मे चलैत खेल तमाशा मे भाग लेथि। एहने एक खेल-तमाशा मे भाग लेला पर हुनका दस बीघा जमीन भेटल रहनि। पदोत्तर...। दस मिनट धरि ओ पदैत रहल रहथि। फस्ट केने रहथि एहि मुकाबला मे। महराजक एकदम विश्वस्त लोक रहथिन ओकर बाबा। बाबो के महराज पर बहुत विश्वास रहनि। ओकर बाप सेहो विश्वासक एहि परम्परा के नहि तोड़लनि। मुदा पदोत्तर भेटल जमीन ओ कायम नहि राखि सकलाह। दरभंगाक दिन घटलैक त' ओहो निस्व भ' गेल रहथि। बापक ओहि अदिनता के ओ पुन: सुदिन मे बदलि देबाक लेल

प्रयासरत रहय। बाबाक परम्परा के बढ़ा रहल छल। युगानुरुप परम्परा के विकसित क' रहल छल। थ्री-एक्स रम आ सोन्हगार बदाम सँ जीह पर सान चढ़ा रहल छल। जीह के छुरी बनेबाक कला ओकरा अबैत छलैक। ई कला ओकर रक्त मे रहैक। महबूब बाजल रहय,

'महराज, ठंढी मे रम सँ बढ़ि के कोनो चीज नहि छै दुनियाँ मे। अलबत्त गरमी आनै हय बदन मे।' महराज किछु नहि बाजल। खाली मुसकुरा देलकै। कोनो बात पर मुसकुराएब ओकर आदति छैक। ऐनमेन दरभंगा महराज सन। ओ सोचैत अछि। ओकरा महबूबक गप्प मे प्लौट भेटि गेल रहैक। कहलकै,

'महबूब भाइ, ई गरमी कहाँ धरि जाइ छह? कहाँ-कहाँ अटकै छह?' महबूब बकर-बकर ओकर मुँह ताक' लागल रहैक। बात ठीक सँ बुझा नहि रहल छलैक। ताबत ओ तीन-चारि घोंट जमेबा पर लागल रहय ताबड़तोर। महबूब संग स्टार्टिंग ट्रबुल छैक। गाड़ी कने मोबिल बेसी खाइ छै। चाभी बेसी मार' पड़ैत छैक। मुदा जखन स्टार्ट भ' जाइए महबूब त' अलबत्त चालि छै ओकर। लागत कन्टेसा पर बैसल छी। लेकिन एखन त' घों-घों.. क' रहल छल। ताबड़तोर रम के घोंट ल' रहल छल। उसनल अण्डा मुँह मे द' रहल छल। तैं ओकर बात दिस सांइत महबूबक ध्याने नहि गेलैक। बूझि नहि सकल। बकर-बकर ओकर मुँह दिस तकिते रहल। ओ कहलकै,

'तोरा गरमी आनि क' हेतह की ? तोरा बूत्ते आब की होइ बला छह?' एहि पर सभ ठहक्का द' देने रहै। महबूबो दाँत चिआरि देने रहए। जेना भीतर किछु ठेकिते नहि होइक। सभटा जेना कोनो गादि मे जा क' बिला जाइत होइक।

से एहिठाम ठेकै ककरो नहि छैक। चौलक त' कोनो गप्पे ने। कोनो बात नहि ठेकै छै। आ ठेकतै किएक ? ठेकला पर बड़ झंझटि छै। तामस होइ छै। तामस कोनो नीक गप्प त' नहिए छियैक। तामस सँ बड़ घाटा होइत छैक। घाटाक सौदा कियो नहि कर' चाहैत अछि। नफा लेल तामस बिख छै। त' तामस क' किए कियो अपन नोकसान करत? ई सभ बात रहरहां ओ सभ बजैत रहैत अछि।

दू दिन पहिनेक त' गप्प छियैक। साँझ मे एहिना जुटल रहैक। महाराज ओहि दिन पूरा मूड मे रहय। अकस्मात् शेख साहेब आबि क' ठाढ़ भ' गेल रहथि। बड़कीटा दाढ़ी हुनकर झूलि रहल छलनि। ओ अबिते महराज पर बरिस' लागल रहथि,

'की हो महराज, तोबा ! तोबा ! जमानाभर के लफन्दर सभ के जुटाके ई कोन महफिल सजउले छह? डेली के डेली एही किरिया। एही काम। कियो निम्मन आदमी संझिया के तोरा सँ मोलाकात न' करि सकै छह। कोनो कामो-उम के बात न' हो सकै हय।' शेख साहेब बजने चल जा रहल छलाह। मुदा सभक लेल धन्न सन। ओकरा त' शेख साहेबक क्रोधाएल मुँह आ झूलैत दाढ़ी देखि क' हँसी लागि रहल छलै। क्रोधे नहि भेलै। ककरो कनियो तामस नहि भेलैक। मुदा हँसल कियो नहि। महराज उठि क' ठाढ़ भेल रहय। शेख साहेब के अरियाइत क' बाहर ल' गेल रहय। फेर पाँच मिनट मे आपस आबि गेल। ओ सभ एहि बीच मे शराबक चुसकी लैत रहल। उसनल अण्डा खाइत रहल। महराज आएल त' लागल सभ के बोकियाब',

'अरे, तूँ सभ एतबे काल मे पूरा गिलास खाली क' देलही रे, ढहुरी भाइ सभ....।' आ जोर सँ ठहक्का लगौने छल। सभ हँसि पड़ल रहय। जेना किछु भेलै नहि हो। आइ अकस्मात् शेख साहेबक मूड कोना एते खराब भ' गेल रहैक? की केलक महराज ? कोना शेखके विदा केलक ? कथी लेल शेख आएल रहैक? ई सभ कोनो प्रश्न मोन मे उपजले नहि रहैक। सभ के विश्वास रहैक जे महाराज मामिला सलटिया लेलक। शेख कोनो जर्बदस्त तोप अछि त' हमर महराजो मशीनगन अछि। एक्के बेर मे हजार-हजार गोली झोंकि देबाक सामर्थ छैक ओकरा।

आब ओकर दोहा आ फकड़ा चल' लागल रहैक। सभ पूरा मूड मे आबि गेल छल। ओकरा सभ सुनेबा लेल उकसा रहल छलैक। दाद द' रहल छलैक। वाह-वाह अनघोल भेल छल। ओ दोहा पर दोहा, फकड़ा पर फकड़ा झोकने चल जा रहल छल...।

पबनी कर गए पबनी कर।
कहाँ से करब गए कहाँ सँ करब ?
रीन पैंच कर गए, रीन पैंच कर।
कहाँ सँ सधाएब, गए, कहाँ सँ सधाएब ?
खएने जो पड़ाएल जो, खएने जो पड़ाएल जो।

X

सात सेर सँ सात पकाओल
चौदह सेर सँ एक्के गो,
तों कुलबोरना सातो खएलें,
हम कुलवन्ती एक्के गो।

X

माय गुन धी, पिता गुन घोड़
ने किछुओ त' थोड़बो थोड़।।

एहि दोहा-फकड़ा सभ पर सभक ठहक्का चलि रहल छलैक। मुदा अकस्मात अन्तिम दोहा पर धनेशर चुप भ' गेल छल। ओ कनियो नहि हँसल। एको बेर वाह नहि बाजल। सभक आँखि धनेशर दिस घूमि गेल छलै। रामचन्दर पुछने रहै,

'की बात छै धनेशर। तूँ काहे एकदम्मे चुप्प हो गेलह ? बेटा के माए मोन पड़ि गेलह की ?'

'माए नहि। बेटा मोन पड़ि गेल रामचन्दर। साला, हमर कउनो बाते ने मानै हए। हम कहबै इर घाट त' ओ जायत वीर घाट। कहै हए जे हम ई चमरा-उमरा के काज नहि करबह। हम कोनो हुनर सीखबह। मशीन चलेबह। हमर त' मिजाजे गरम हो जाइत हए। हमर कोनो गुन नहि हए ओकरा मे। ई फकड़ा एकदम झूठ हए। एकदम्मे झूठ....।'

'तूँ बुझाबै काहे नहि छहक ? बुझउला सँ बात बनै छै।' गंगा कहने रहैक।

'की बुझाबियौ। कहलियै जे चमराक सपलाइ मे सेहो बहुत हुनर के काज पड़ै हए। बिना हुनरे कुच्छो नहि होइ छै। कैसन चमरा हइ। चमरा के हिसाब से केतना दाम होतै। फेर रस्ता के झंझट। चुंगी के तरपट। ई सभ वैसेही बिना अकिल के हो जा हइ ? काम करबीही त' बुझबीही। पर ओकरा त' एक्के रटनी लागल हइ। एसन व्यापार नहि करता। मशीन चलाओत। मशीन चलाबे के हुनर सीखत। पत्ता के थरिया बनाओत। पिलेट बनाओत। साला, कोनो अक्किले नइ हइ ओकरा। मजूर बने चाहैए। मजूर। बाप के कोनो बात निम्मन नहि लागै हइ।' धनेशर बहुत दुखी भ' गेल रहए। एकदम पराजित सन। थोड़ेक काल आइ-काल्हुक छौंडा-छौंड़ी सभ पर गप्प चल' लागल रहैक। सभक अपन-अपन शिकाइत रहैक। सभ अपन धिया-पूता सँ अकच्छ रहए। दुनियाँ के दोख देबा पर वित्त छल। सभ अपन दुख बाहर निकालि रहल छल। गम गलत क' रहल छल। एकाएक महबूब चिकड़ि उठल रहए,

'अरे, छोड़ ! कहाँ से किस्सा उठा के ले अएलह तूँ लोग। औलाद जाए साला चूल्ही-भांड़ मे।' आब महबूबक गाड़ी स्टार्ट भ' गेल रहैक। ओ अपन चालि पकड़ि लेने छल। शुरु भ' गेल रहय।

'जनल' महराज ! कल रात दू गो ख्वाव देखने रहिय'। सभ उत्सुकता सँ महबूब दिस देख' लागल रहय। जीवन पुछने रहैक,

'कोन ख्वाव, महबूब मियाँ ? की देखलहक ?'

'अरे देखली जे दस-बीस ठो हूर जन्नत से धरती पर उतरल हए। सभ के पैर मे घूंघरु बान्हल रहय। सभ सुर-ताल मे नाच कर' लागल। नचैत गेल। नचैत गेल। दिन दुनियाँ के कउनो फिकिर नइ। देखली सभ नाच रहल हए। ई धरती। ई पेड़-पौधा। हजारो-हजार चिड़िया सभ....। पानी मे मछरी सभ। धरती के जनावर सभ। सभ नाच मे मगन। हमरा त' महराज तराटक लाग गेल। पलक गिरबे ने करए। एहनाती नाच नचनिया चलैत रहल। एक्के बेर सभ थम गेल रहय। साइत हम्मे देख लेले रहय हूर सभ। झटपट नाच बन्द क' देले रहय। हाली हाली अपन लहंगा उठा के चेहरा तोप लेले रहय।'

गंगा पूछि देने रहैक,

'से किए हौ। तोरा देखि क' हूर सभ चेहरा काहे तोप लेलकहं? की भेलै?'

'आर की होतै। शरम लाग गेल होतै।' महबूब जेना सपना मे एखनो रहबे करय। ओकर सपना चलिए रहल छलैक। सभ के आनन्द आबि रहल छलै। एक्कोरत्ती नहि लागि रहल छलै जे महबूब फूसि बाजि रहल अछि। फूसि त' ओ बाजिये नहि सकैत अछि। महबूब कहने जा रहल छल,

'अब दोसर ख्वाब के हाल सुनाबै छियह महराज ! देखली जे ख्वाब मे सीधे खुदा परवरदिगार आ के कुछ कह रहल छथ।'

'की कहि रहल छलथुन, महबूब मियाँ ! की कहि रहल छलथुन ! तों सुनने रह' कि नै ?' ओ पुछने रहैक। महबूब त' बजने चल जा रहल छल,

'अरे, की पुछै छह ! खुदा के आबाज के नइ सुन सकै हए ? एकदम एक-एक शबद सुनि रहल छली हम। परवरदिगार हम्मे पूछ रहलाह रहए।

'महबूब, मांग ले जे मांगना हौ। मांग ले। आज जौन मांगबह तौन मीलि जेतौ। मांग ले। हमरा त' महराज एक्को मिनिट के देरी नइ होअल रहय। ठीके-ठीक मांग लेले रही।

हे मौला ! हे गरीबपरवर ! हे परबरदिगार ! खुदा ! देना छह त' एक्के गो चीज द' दैह। हम्मर महराज के एकबाल बुलन्द रहे मौला ! महराज के एकबाल बुलन्द रहे। महराज के एकबाल रहतै त' हमरो आउर के एकबाल बनल रहतै। महराज के एकबाल बुलन्द रहे परवरदिगार ! मौला !! हम्मे खुदा के सिजदा मे झुकि गेल रहिय' महराज !

खुदा के चेहरा से नूर टपकि रहल रहय। एसन तेज रहय जे हम्मर दूनो आंख बन्द हो गेल। खाली कान मे शबद जा रहल रहय,

ठीक हइ महबूब ! एसने होतै। महराज के एकबाल बुलन्द रहतै। जा, खुश रह'। आँख खुलल त' खुदा गायब हो गेल रहथ। पूरा कमरा गुग्गुल के सुगन्ध से भरल रहय।'

सभ महबूबक सपना सुनि मस्त भ' गेल रहय। शराबक निशां मे महबूब एकदम फरिस्ता सन लागि रहल छलै। महराजक आंखि बन्द भ' गेल रहैक। ठोर पर मुसकी ओहिना कायम रहैक। ऐनमेन दरभंगा महराज सन। सभ के होइत छैक।

ओ महराजक ओहिठाम सँ चलल त' रातिक बारह बाजि गेल छलै। जयप्रकाश चौक सँ असगर अपन डेरा दिस बढ़ल रहय। गंगा, जीवन, महबूब, धनेशर, रामचन्दर सभ अपन-अपन घर दिस मुड़ि गेल छल। शहर एकदम निसबद्द रहय। जेना सौंसे मरछाउर छींटल होइ। कतहु कोनो सुगबुगी नहि। पहरुदार सभ सेहो जेना सूति रहल छल। सुनसान अन्हरिया राति मे शराबक निशां मे चूर ओ जखन अम्बेदकर चौक लग पहुँचल त' एक्कहि बेर बड़का-बड़का

टार्चक रोशनी ओकर आँखि पर पड़लै। ओकर आँखि चोन्हरा गेलै। ओकरा आब किछु देखा नहि रहल छलैक। लगलै पाँच-सात टा आदमी ओकरा घेरि लेलकै अछि। मुदा जेना कतहु ठनका खसल होइ। सभ एक्के बेर चौंकल रहय। एक गोटा बाजल रहैक,

'दूर, साला ! ई त' कबिया छिअउ रे ! महाराज के आदमी। मरदे, जतरा बिगाड़ि देलकौ। छोड़, चल, भाग..।' आ सभटा टार्चक रोशनी मिझा गेल रहय। ओकरा आब पड़ेबाक आवाज सुनाइ द' रहल छलै। पाँच-सात जोड़ी जूताक आवाज..। आँखि मे जखन रोशनी अयलै त' फेरो घर दिस विदा भेल रहय।

घर पर पहुँचल त' अपन कोठली मे इजोत देखने रहय। ओकर जेठका बेटा लालटेन बारिक' पढ़ि रहल छलैक। ओ सोझे बिछान पर जा क' खसि पड़ल रहय। बाप के देखि बेटा किताब सभ समेटि कोठली सँ निकलि गेल छल। ओकर आँखि मे घृणा भरल छलैक। पत्नी अयलै त' ओकर बकार फूटलै,

'बांचि गेलहुँ आइ..। महाराज..के..एकबाल सँ..बांचि गेलहुँ..आइ..।' ओ बजबाक कोशिश क' रहल छल। मुदा बाजल नहि भ' रहल छलै। ओ पत्नी दिस तकलक। पत्नीक आँखि मे कोनो भाव नहि रहैक। ने गौरव..ने कोनो उसांश..। ओ जोर लगा क' कहुना पत्नी सँ पुछलक,

'अहाँके..खुशी नहि भेल ?'

पत्नी कोठली सँ बाहर निकलबाक लेल तैयार छली। लालटेन उठौने रहथि। बजलीह,

'खुशी ? खुशी किएक नहि हैत ? अहाँ बांचि गेलहुँ। एहि सँ पैघ खुशी आर की भ' सकैत अछि।' कहैत ओ विदा भ' गेल छलीह। कोठली मे अन्हार पसरि गेल छल।

ओकरा भेलै जे पत्नीक स्वर मे कोनो व्यंग नहि छैक। ठीके खुशी भेल हेतै ओकरा। सोचि क' ओ प्रसन्न भेल। ओ ई सोचि क' आरो प्रसन्न भेल जे पत्नी लग ओकर मोजर बाँकी छै।

ओकरा फेर सँ एक बेर अभिमान भेलैक। ओ अपन जांघ पर सरिया क' एक चाट लगौलक। वाह, चोट नहि लगलै। ओकरा फेर खुशी भेलै। ओ बिछान पर पड़ल छल। मुदा देह तर बिछान नहि रहै....।



दसखत

—'संचमंच भ' कए रहब से नहि। हरदम आंगुर सबसबाइत रहैए ? हटाउ हाथ....।' सुनीता पतिक आंगुर अपन पेट दिस बढ़ैत देखि कृत्रिम क्रोध सँ बजलीह। पतिक आंगुर मुदा नहि मानलकनि। पेट धरि चल अएलनि। आचार्यजी के कनियाँक पेट मे गुदगुदी लगेबा मे बड़ मोन लगैत छनि। दूध मे अलता घोरल रंग सन पेट देखि हुनकर आंगुर सबसबाए लगैत छनि। गुदगुदी लगबैते सुनीताक अनार दाना सन धवल दंत पंक्ति देखार भ' जाइत अछि। आचार्यजीक मोन होइत छनि गाल मे पड़ल डिम्पल के नोंचि ली। आंगुर बढ़बै छथि त' सुनीता रोकि दैत छथिन।

—'उ....हूँ...कने डिम्पल के छूब' दिअ' ने। किए रोकि दैत छी अहाँ ? की हेतै छुबिए लेब त'....।' आचार्यजी आँखि गुड़ारिक' मुसकुराइत छथि।

—'नहि, हमरा नहि नीक लगैए ई सभ। अहाँके त' गत्तर मे कोनो लाज नहि अछि। कनियां होश नहि रहैए। कखन के चल आओत। ओहि दिन जुअनका चपरसिया देखि लेने रहए। अहाँ त' एकदम....' सुनीता मुँह बनबैत छथि।

—'अरे, की हेतै जे कने देखिए लेलक। सार, ओहो तरि गेल हैत। असल मे बात ई छै जे हमर आंगुर हरदम सबसबाइत रहैए। अहाँके देखिते अपने आप आंगुर बढ़' लगैए। देखियौ ने सबसबाइत कत्ते नाम भ' गेलए। लगैए बियाहक बाद कने आर लम्बा भ' गेलए हमर आंगुर सभ..। अहाँके नहि लगैए ?' आचार्यजी प्रश्न आ बदमासी भरल आँखि सँ सुनीताके देखि रहल छलाह।

—'हँ, हमरा सरिपहुँ लगैए। बियाहक बाद सँ अहाँक आंगुर चारि अंगुरी पैघ भ' गेलए मुदा चाकर एक्कोरत्ती नहि भेलए। जाहि हिसाब सँ ई आंगुर सभ बढ़ि रहलए लगैए एक-दू बरख मे खिड़की केवाड़ टपि जायत।' सुनीता चौल केलनि।

सुनीता अपना मने भले ही चौल केने होथि। मुदा भ' गेल से सत्य। रवीन्द्र कुमार आचार्य, भारतीय प्रशासनिक सेवाक दसो आंगुर बढ़ैत गेल। बढ़ैत गेल आ

खिड़की केवाड़ टपि गेल। आब हुनका खाली सुनीताक पेट मे गुदगुदी लगेला सँ संतोष नहि भ' रहल छलनि। दोसर-तेसर पेट दिस सेहो आंगुर बढ़ैत गेल।

X X X

आचार्यजी रइस लोक छथि। भगवान विभवो देलथिन अछि। ऐश्वर्य मोती सन झहरैत छनि। एकर ई अर्थ नहि जे शुरुहे सँ आचार्य जी एहिना रइस छथि। खानदानी रइसक विशेषण त' हुनका पर कथमपि नहि लागि सकैत अछि। मोन रखनिहार के मोन छैक जे हुनकर पिता घनश्याम आचार्य कीर्त्तन कएल करथि। एकटा हाथ दहिना हुनकर कने छोट रहनि। कने टेढ़ सेहो। नेना मे बड़द पटकि देने छलनि। जाहि सँ हाथक हड्डी टूटि गेलनि। ठीक सँ जोड़ल नहि जएबाक कारणे टेढ़ रहि गलनि। छोट त' भरिसक जन्मे सँ रहनि। जखन हरमुनियाँ बजबथि ओहि हाथ सँ त' नेना सभके नीक लागै। कतेक त' कीर्त्तन सँ बेशी हुनकर हरमुनियाँ पर चलैत हाथ के देखबाक लेल आबए। मुदा कण्ठो नीक रहनि हुनकर। गबितो नीक छलाह। 'मोहि लेलकै सजनी मोरा मनमा, पहुनमा राघो....।' भगवान रामचन्द्रक वियाह प्रसंग सँ अभिभूत भेल जनकपुरक नर-नारीक भावना के जखन स्वर देथि घनश्याम आचार्य त' बूझू रस बह' लागए। भक्तगण भीज' लागथि। कतेक जाबिर लोक त' रामचन्द्रजीक मुकुट मे सँ बुन्न टपकैत देखबाक दाबा करए। रामक मुकुट भीज' लागए जखन घनश्याम आचार्य तन्मय भ' भक्तिभाव सँ पद गाबथि। दशमी मे घनश्यामक भाव एकदम्मे बढ़ि जाय। गाम-गाम सँ साटा बन्हेबाक लेल उपरौंझ हुअए। एवंप्रकारें भगवानक कीर्त्तन करैत आ अपन जीविका चलबैत घनश्याम अपन तेजस्वी बालक रवीन्द्र के पढ़ौलनि-लिखौलनि। एक-एक क्लास फर्स्ट करैत रवीन्द्र कुल, खानदान, इलाका, समाज के धन्य केलनि। भारतीय प्रशासनिक सेवा मे अएलाह। बापक प्रसन्नताक सीमे नहि हो। असीम आनन्द सँ ओ आर भजन-कीर्त्तन मे लागि गेलाह।

बाद मे कतबो कहलथिन रवीन्द्र आचार्य गामे-गामे घूमि कीर्त्तन नहि करबाक लेल मुदा नहिये माननि एहि मामिला मे बेटाक बात। ओहिना घुमैत रहलाह। गबैत रहलाह। हरमुनियाँ पर हुनकर आंगुर नचैत रहल। हो.... हो... पहुनमा राघो....सिया के सजनमा राघो....। कीर्त्तन करैत गामे-गाम घुमैत घनश्याम आचार्य जखन स्वर्ग गमन केलनि तखन रवीन्द्र कुमार आचार्य, भा० प्र० से० कमिश्नर रहथि। श्राद्ध मे पिण्डदान काल कतेक बेर कनलाह। हिचुकि-हिचुकि क' कनला कमिश्नर साहेब। सपिण्डीकरणक समय त' आर हृदयद्रावक स्थिति उत्पन्न भेल रहए। सभक आँखि मे नोर भरि आएल रहैक। बहुत ठाठ सँ वृषोत्सर्ग श्राद्ध केलनि। साँढ़ के दागि के छोड़ल गेल। बड़का भोज केलनि। भरि परोपट्टाक लोक दू दिन धरि कचरैत रहल। गुणी सभके फराके सँ पाता देने छलाह। एक सँ एक विद्वान-पण्डित। पूर्ण आदर-सम्मान, विदाइ-जैतुक। सभ बुद्धि, विवेक आ पितृश्रद्धाक जयजयकार क' उठल। यश-प्रतिष्ठा मे अपार वृद्धि भेलनि। गाम सँ

विदा हेबाकाल बापक कोठली मे राखल हरमुनियाँ के देखलनि। बापक छवि उभरि आएल। गबैत स्वर आ हरमुनियाँ पर नचैत आंगुर मोन पड़लनि। अपन आंगुर दिस देखलनि। हरमुनियाँक पटरी पर आस्ते सँ आंगुर रखलनि। आंगुर काँपि रहल छलनि। जेना बहुत कमजोर भ' गेल हो। हुनका भेलनि ओ हरमुनियाँ नहि बजा सकैत छथि। लगले हरमुनियाँक प्रति एक वितृष्णा भाव आचार्यजीक मोन मे जोर सँ उभरि आएल। गेनालालक बेटा के बजौलनि। ओ हरमुनियाँ ल' गेल। हरमुनियाँ आचार्यजी ओकरा द' देलथिन। बूझल छलनि छौंड़ा नाच करैए।

X X X

आचार्य जी बहुत आबेस सँ अपन मकान बनौने छथि राजधानी मे। मकान की भव्य महल। आधुनिक सुख-सुविधाक सभ इंतजाम केने छथि ओहि मे। रहितो छथि सपरिवार ओही मे। ओ एहि मामिला मे ककरो आंगुर उठेबाक मौका नहि दिअ' चाहैत छथि। हुनकर सेवाक आन सदस्य लोकनि जेना सरकारक पाइ सँ अपन मकान बना किराया पर उठा दैत छथि आ अपने सरकारी क्वार्टर मे रहैत छथि से नहि पसिन्न छनि आचार्यजी के। जहिये मकान बनि क' तैयार भेल आ रहबा जोगर भ' गेल ओ ओही मे चल अएलाह। ओहि समय मे निगरानी आयुक्त रहथि। भिजिलेंस कमिश्नर। एक सँ एक दिव्य समान सभ सँ मकान के सजौलनि। इंटीरियर डेकोरेशनक मास्टर छथि ओ। एहि विषय पर कतेक किताब पढ़ने छथि से हिसाब राखब कठिन अछि। असल मे आन्तरिक साज-सज्जाक संग वास्तुकलाक सेहो अपूर्व अध्ययन छनि आचार्यजी के। अपन एहि ज्ञानक भरपूर उपयोग भवन आ साज-सज्जा मे केलनि। जे एहि विषय सभ मे पूरा कोर्स केने अछि आ डिप्लोमा लेने अछि ओकर बोलती बन्न करब हुनका खूबे अबैत छनि। कोन रंगक पेंट हेबाक चाही देबालक। देबाल सँ मैच करैत कोन रंगक गलैंचा अथवा फर्नीचर हेबाक चाही। गमला कत' राखल जाय। गमला कोनो माटिक नहि, चमचम करैत पितरिया। ओहि मे पैघ-पैघ पातबला मिनियेचर। एक सँ एक 'ड्वार्फ भेराइटी' के ज्ञान छनि हुनका। क्रियेचर इन मिनियेचर। सुन्दर छोट-छीन हँसैत खिलखिलाइत वृक्ष। फूल...पात...। टी० भी० कत' राखल जाय। स्टीरियो सिस्टम कत' रहए। किताबक आलमारी कोनठाम रखला सँ वातावरण मे 'टर्निंग' आओत। प्रभाव छोड़त। कुशनक रंग सँ ल' कए ओकर डिजाइन आ' रखबाक स्थान सभक विस्तृत चर्चा जँ आचार्यजी संग करी त' एकटा पोथी त' केवल कुशन आ सोफा पर लीखि सकैत छी। देवाल परहक पेंटिंग सभक मादे आह, की टेस्ट छनि हुनकर। पद्मश्री जगदम्बा देवीक बनौल मिथिला पेंटिंग सँ ल' कए रविवर्माक स्थूल चित्र, पोट्रेट होइत मकबूल फिदा हुसैनक मिथकीय स्पर्श लेने बनौल आधुनिक चित्र धरि विशिष्टताक एक-एक रेशा उघारि-उभारि के रखबा मे पारंगत छथि ओ। वाह, अलवत्त ! आचार्यक विशद् ज्ञान सँ छगुन्ता मे पड़ने बिना कियो नहि रहि सकैए। संगहि हुनका इहो बूझल छनि जे मिथिला पेंटिंग कत' लगौल जाय। हुसैन अथवा रविवर्माक चित्रकला कत' शोभा बढ़ाओत।

उत्तेजना अथवा नीरव शांति उत्पन्न करत। टेंशन फ्री करत। सभटा दिमाग के कमाल। अध्ययन-अवलोकनक जादू। छने मे हुनकर निर्देश पर कनेक 'एन्टीक'क ऐंगिल बदलि देने कोना पूरा वातावरण के रुखिए बदलि जाइ छै से देखबा सुनबाक जोगर होइए। अपना सँ हुनका किछु कर' नहि पड़ैत छनि। कोन दुखे करताह ? ईश्वर एकदम्मे दहिन छथिन। एतेक रास अमला-चपरासी कर्मचारी कथी लेल छैक। मुँह सँ खसल नहि की सेवा मे हाजिर। खाली आर्डर के आदति छनि आचार्यजी के। अपना कर' किछु नहि पड़ैत छनि। इच्छा आ आदेश सैह टा काफी अछि। शरीरक प्रयोजन नहि पड़ैत छनि आब। घर सँ आफिस धरि सम्पूर्ण राज्य मे हुनकर दिमाग टा काज करैत छनि। दिमाग अर्थात माँस-मज्जा, शिरा-धमनीक एक पिण्ड। जीवन्त ! जतन सँ हड्डीक बक्सा मे राखल। हाथ आ पैरक प्रयोजन क्रमशः कम होइत गेलनि अछि। आब आचार्यजीक आंगुरो कोनो कड़ा वा रुक्ख चीज पर नहि पड़ैए। सौभायक वर्णन नहि हो। खाली गुदगर आ छाल्ही-मक्खन सन मोलायम वस्तु पर फिरैए-बुलैए। सेहो मात्र स्पर्श..। आर किछु नहि..। आस्ते, मोलायम सँ स्पर्श..। आंगुर छोड़ि आन कोनो अंग सँ अभिव्यक्तिक मामिला मे आचार्यजी लाचार भ' रहल छथि से बात ओ आब अपनहुँ बूझ' लागल छथि। खास क' कए अपन स्त्री-मित्र सभहक उपेक्षा सँ भरल आँखि सहन करब आब हुनकर बाध्यता भ' रहल छनि।

X X X

योग्य, विश्वासी व्यक्ति सभ के छाँटि क' बेरा लेब आ तकर सूक्ष्मता सँ उपयोग करब आचार्यजी के खूब अबैत छनि। एहि मामिला मे हुनकर घ्राणशक्ति अप्रतिम अछि। कौशल प्रशंसनीय। जाहिठाम कत्तौ पदस्थापित भेलाह। चाहे कलक्टर होथि। कोनो राज्यस्तरीय संस्थाक प्रबन्ध निदेशक होथि अथवा कमिशनर होथि। अपना आगू-पाछू चारुकात योग्य-सक्षम पदाधिकारी आ कर्मचारीक पतियानी ठाढ़क' लेब आचार्य जीक वामा हाथक खेल छनि। एहि मे एक सँ दू मास मात्र लगैत छनि। अपन एकटा सुविधा सम्पन्न प्रकोष्ठ (सेल) बनेबा लेल ओ योगदान करिते तत्पर भ' जाइत छथि। सेल मे स्टेनो, एकटा अतिरिक्त टाइपिस्ट एकटा रिसेप्शनिस्ट सह डायरी डिसपैच कर' बला अथवा प्रायशः प्राथमिकता मे कर' वाली। टेलीफोन सेहो तखन यैह एटेण्ड करैत अछि। कखनहुँ के जँ सुविधा भ' जाइत छनि त' डायरी-डिसपैच लेल फराक सँ कर्मचारीक व्यवस्था करैत छथि। ओना सेल मे त' मात्र गोपनीय अथवा अत्यावश्यक पत्रेटा क डायरी-डिसपैच होइए। टेलीफोन एटेण्ड करबा लेल निश्चिते नारी स्वर जरुरी अछि। कहियो टेलीफोनक सीधा कनेक्शन हुनका टेबुल पर नहि रहल। सदैब 'बजर'क सहायता लेब उचित बुझैत छथि। एहि मामिलामे नारी स्वर सँ अपनहुँ के अथवा फोन करै बलाके उल्लसित रखबा मे सभ दिन विश्वास केलनि। काँचक चूड़ी सन खनकैत अथवा जलतरंग सन बजैत स्वर सभ दिन आचार्यजी के पसिन्न पड़लनि। आचार्यजी रिसेप्शनिस्टक चयन मे स्वर परीक्षा सेहो लैत छथि। ई एक आवश्यक

गुण मानल जाइत अछि एहि पदक चयन मे। हुनकर सम्पूर्ण कैरियर मे कतेक रिसेप्शनिस्ट बदलल। लगभग दर्जन भरि त' सभके मोन छैक। मुदा ई कांच के चूड़ी सन अथवा जलतरंग सन स्वर नहिये बदलल। एकटा सचिव, आप्तसचिव त' सभठाम रहलथिन। सचिवक चयन मे भद्रता ओ शिष्टाचारक संग क्षमता सेहो जरुरी रहैत छैक। एही आप्तसचिवक माध्यमे गप्प होइत छनि वेशीकाल अधीनस्थ सभके आचार्यजी सँ। ई बहुधा हुअए जे पहिने सँ काज करैत स्टाफ सभ आचार्यजीक पदस्थापनक बाद बदलि जाय। ओ छाँटि के नव स्टाफ सभ राखथि। चुस्त-दुरुस्त। तीक्ष्णताक संग अभिजात्य शिष्टता हुनकर सेलक प्रत्येक सदस्य सँ सहजे उम्मीद क' सकैत छी अहाँ। आचार्यजी त' एहि सभ गुणक सिरमौर रहबे करथि। अपन सेलक निर्माण आ स्टाफक चयन मे आचार्यजीक दृष्टिक जँ विश्लेषण करी त' एकटा तथ्य खूबे उभरि क' समक्ष आओत जे ओ कहियो स्टेनोक चयन मे फेयरसेक्स के प्राथमिकता नहि देलनि। एहि मामिला मे ओ सर्वदा मेल माइण्डेड रहलाह। असल मे स्टेनोक आवश्यक गुण होइत छैक गोपनीयता। जाहि मे ओ स्त्रीगण के कमजोर मानैत छथि।

अपन अन्य अधीनस्थ पदाधिकारी आदिक चयन पदस्थापनमे सेहो ओ कहियो काल दखल देथि। असल मे हुनका ई बात सभ सँ पसिन्न रहनि जे फाइल पर किछु लिख' नहि पड़य। मात्र छोट-छीन हस्ताक्षर कर' पड़य। ई अधीनस्थेक मनमाफिक टिप्पणी-मन्तव्य सँ सम्भव छलनि। ई दसखतो जकरा अंग्रेजी मे सिगनेचर कहैत छैक, छोट होइत-होइत मात्र इनीशियल (आद्यक्षर) धरि पहुँचि गेल अछि। चूँकि आब एहि सँ छोट नहि भ' सकैत छल तैं एतबा बाँचि गेल रहय। छोटका करिक्का मच्छर सन। ओना प्रारम्भ मे ई एहेन नहि रहए। पूरा चतरल छल। कम सँ कम डेढ इंच त' अवस्से रहल होयत। अपना नींचा मे ओतबेटा डण्टा सेहो रखैत छल। तकरबाद दूटा बिन्दी सेहो। डण्टा सँ सटल एक कात मे। मुदा बाद मे आचार्यजीक दसखत इंच सँ सेन्टीमीटर पर आएल। तकरबाद ओहू सँ छोट भ' गेल। कमिश्नरक बाद डण्टा सेहो गायब भ' गेल। खाली बिन्दीटा रहि गेल। सेहो अलग-अलग प्रच्छन्न रुपें दूटा नहि। सटल-सटल दूटा के भ्रम दैत एक्केटा। जँ मोन पाड़ब त' ई बात मोन पड़ि सकैत अछि जे रवीन्द्र कुमार आचार्य, भा० प्र० से० क दसखत सँ डण्टा कहिया गायब भेल।

एहिप्रकारें यदि कही त' आचार्यजी के फाइल मे छोटका करिक्का मच्छर सन इनीशियल करबा सँ बेशी किछु पसिन्न नहि छनि। पत्रो आदि पर यैह करैत छथि। मात्र इनीशियल। बस्स, आर किछु नहि। एम्हर अपर मुख्य सचिव भेला पर किछु झंझटि भ' गेलनि अछि अवश्य। तैं मोन खिसिआएल रहैत छनि भीतर सँ। कखनो कहियोके मुख्य सचिव के फाइल पृष्ठांकित करबाकाल अपना हाथ सँ दू तीन शब्द लिख' पड़ि जाइत छनि। असल मे एहि दू-तीन शब्द लेल टाइपक प्रयोग नहि भ' सकैत छै तैं। ओना एक पंक्ति धरिक वाक्य जँ टिप्पणी मे लिखबाक हो अथवा आदेश लेल जरुरी हो त' स्टेनो डिक्टेशन लैत अछि। ई

तथ्य एकदम पक्का अछि। दू, चारि, दस पंक्तिक टिप्पणीक त' कथे नहि हो। सभटा स्टेनो डिक्टेशन ल' कए फाइल पर टाइप करैए। आचार्यजी खाली करिक्का छोटका मच्छर बैसा दैत छथि। करिक्का ओहिना नहि कहैत छी। ई एकटा शोधक विषय भ' सकैत अछि जे रवीन्द्र कुमार आचार्य, भा० प्र० से० कहिया सँ आ किएक करिक्के मोसिक प्रयोग करैत छथि।

X X X

मुदा ई शोधक विषय कथमपि नहि भ' सकैए जे आचार्यजीक दूनू हाथक औंठा काज केनाइ कोना छोड़ि देलकनि। कानो संचार नहि रहलनि ओहि मे। जेना ओहि मे जाने नहि रहि गेल हो। जाहि औंठाक प्रसादात् मोती सनक अक्षर निकलैत छल। आदेश-निर्देश दैत छलाह। पैघ-पैघ टिप्पणी लिखैत रहथि। स्वीकृत, यथा-प्रस्तावित करैत छलाह। प्रस्ताव सभक अनुमोदन करथि। अपन सुन्दर, हिलसगर दसखत करैत छलाह। आत्मविश्वास सँ भरल दसखत देखि क' कतेक हस्ताक्षर विशेषज्ञ हुनकर दिमाग, बुद्धि, कौशलक तारीफ करैत छल। एहन दसखत आ' अक्षरक मालिक के उन्नति आ विकासक असीम आकास भेटबाक भविष्यवाणी करैत छल। ओहि सभ भविष्यद्रष्टा आ विशेषज्ञ सभके बौक बनबैत आचार्यजी आइ औंठा मात्र औंठाक बेजान भ' गेलाक कारणें थाकल-हारल सन बेचैनी सँ बिछान पर पड़ल निर्निमेष अपन भवनक देबालके देखि रहल छथि। डाक्टरक कहब छैक जे औंठा लगक नर्भ सभ काज नहि क' रहल छनि। आर सभ चीज ठीक छनि। कत्तहु कोनो अवरोध नहि। कोनो चोट नहि। कत्तहु कोनो क्लौट नहि। कतेक रास जाँच पड़तालक बाबजूदो नर्भक अक्रियाशील भ' जेबाक असली कारण डाक्टर सभ नहि बूझि पाबि रहलए। ई कोन बिमारी थिकैक? एक मास सँ उपर भ' गेल अछि। दिल्ली सँ घुरिक' चल आएल छथि। परिवार मे त' हाहाकार मचल अछि। पत्नी सुनीता दुखी। बेटा-बेटी चिन्तित। जमाय सदिखन सिरमा लग बैसल। दिल्ली सँ फोन आएल छनि जे अमेरिका जेबाक इंतजाम शीघ्र भ' जयतनि। अमेरिका जेबे करताह। लोक मानतनि नहि। ओहि सँ नीक इलाज कत' छैक। स्टेनो मल्लिकजी ठाढ़ छथिन। पासपोर्ट लेल एकटा दसखत आवश्यक छनि। मुदा कोना ? औंठाक बिना दसखत कोना सम्भव छनि। आब त' करिक्को मच्छर नहि बैसा सकैत छथि। हुनकर जमाय सोचि रहल छथि जे कहुना बेजान औंठा के पकड़ि के कागज पर निशान ल' लेबाक चाही।

रवीन्द्र कुमार आचार्य, भा० प्र० से० निर्निमेष एखन देबाल के देखि रहल छथि। अकस्मात् हुनकर आँखि फर्श पर खसैत अछि। सुन्दर-चमकैत, कोमल गलैचा पर मारितेरास औंठा, खाली औंठा पड़ल अछि। निर्जीव, बेजान, माँसक छोट-छोट लोथड़ा.....।



कोठा

ग्रामीण विकास विभागक मंत्री रामलाल मण्डल के सभ जनैत छी। सरकार आ' पार्टी दूनू मे नम्बर दू पोजीशन पकड़ने छथि। मुख्य मंत्रीक बाद सभ सँ बेशी भेड़ियाधसान हुनके ओहिठाम रहैए। भिनसर-साँझ लोक मिस पड़ैए हुनकर बंगला पर रजधानी मे। जेकरे सँ काज तेकरे ने मोजर। काजो होइ छै। खूब होइ छै। ककर मजाल थिकै जे मंत्रीजीक आदेशक अवहेलना क' देत। छने मे अमला-अफसर क माए-बहीन मण्डलजीक ठोर पर नाच' लगै छनि। रजधानीक महागोशालाक हरेक मरखाहि गाए कोना दूह' देत से इलम अबै छनि हुनका। पैर मे डोरी बान्हब सँ ल' कए थुथुन लग नेरुक देह धरब धरि सभ विज्ञान पढ़ने छथि ओ। एहि विज्ञान मे स्वतंत्रताक बादहिं सँ प्रगति भ' रहलए। अनुसंधान-प्रयोगशाला। प्रयोगशाला-अनुसंधान। नेट रिजल्ट-सुतारब आ' परतारब। विज्ञान आ कला। दूनू क अपूर्व समन्वय। मशीन सँ निकलैत कला आ हृदय सँ उपजैत विज्ञान। त्रासदी मे कामेदी आ कामेदी मे त्रासदी। एहि तमाम अमृत मन्थन सँ मथाएल माननीय मंत्री रामलाल मण्डलजी क शोभाक वर्णन ने ई कलमं क' सकैए ने ई जीह..। जय हो..जय हो.. क गगनभेदी स्वर कान मे गुज्जी जकाँ भरैत रहैए। सटैत रहैए। एहि सँ बाँचब बड़ कठिन अछि। तूर-तेल कान मे द' कए सुतियो नहि सकैत छी। आह, एहेन शान्ति, निश्चिन्तता जँ भेटि जइतए! मुदा से की सम्भव अछि ? कथमपि नहि। कथमपि नहि। तखन ? शुरुह करु विरुदावली ल' कए रामक नाम। रामलाल के नाम सँ होयत काज तमाम......।

—कोन काज अछि ?

— बेटा के नोकरी।

— अहाँके कोन काज अछि ?

— भाइ के बदली।

— तोरा की छह हौ ? बूढ़ा ?

— बृद्धा पिंशुन सरकार।

— अपने कत' चललियै बाबू साहेब ?

— राइफलक लाइसेंस लेल।

— अरे तों, कहिया अएल'? कत' ठहरल छह? कोन काज छैक?

— बी० डी० ओ० क बदलीक आर्डर।

— अरे, तों भैया ? कोना की ?

— अनका सँ निपटि लैह। बाद मे। बाद मे कहबह।

— अच्छा। ठीक छै। झाजी, भैया के कोठलीमे बैसाउ।

— फोचरन दास ? की बात ? सभ ठीक छै ने ?

— नहि सरकार ? दरोगबा नवका बड़ तंग करैए। इलेक्शनक कानि आब असूल' चाहैए। मुखियाजी सँ सभटा खेरहा बूझि लिऔ।

— ठीक छै। बात करै छियै। चिन्ता नहि करह।

हँ, अहाँ सभ.....उद्घाटन लेल। हमरा सँ। अरे नहि। हम उद्घाटन नहि करै छी। अहाँसभ के बूझल अछि। हमरा काज मे आस्था अछि। परिश्रम पर भरोस अछि। ई उद्घाटन-तुद्घाटन लेल अनका ल' जाउ। कतेक मंत्रीजी भेटि जेताह। हमरा जनता जनार्दनक सेवा कर' दिअ'। क्षमा करु।' रामलाल मण्डल जिन्दाबाद! जिन्दाबाद ! जिन्दाबाद !! एहि जिन्दाबाद पर ककर ने छाती पसरि जेतैक। पसरैत रहतैक ! मंत्रीजीक छाती पसरै छनि। हड्डी कराक-कराक करैए। पुलिसिया बूट खटाक-खटाक बजैए। राइफल धड़ाम-धड़ाम चलैए। वीर रामलाल कराम-कराम करै छथि। एहेन रोब-दाब, एहेन आतंक कोनो मंत्रीक नहि छनि। ई रोब-दाब, आतंक अपना बुत्ता पर उपजौलनि अछि रामलाल। गुदड़ीक लाल-रामलाल। एहि लालक रोशनी मे सम्पूर्ण प्रदेश दमकि उठलए। सुर्ज-चन्द्रमा भक्का भेल छथि। बाघ-सिंह रामलालक पाछू नांगरि डोलबैत घूमि रहलए। साप नेने सँ आकर्षित करैत रहलनि अछि हुनका। राशि-राशि के साप पोसने छथि अपन कोठा मे। नेने सँ नागपंचमी सभ सँ बेसी पसिन्न पर्व छनि हुनकर। नागपंचमी दिन अकास सँ साप क पतौड़ा खसैत देखने छथि ओ। जहिया पन्द्रहे बरखक रहथि साप का पतौड़ा आगू मे धब्ब द'खसल रहनि। हरहराइत गोड़ दसेक साप हुनकर चारुमहर ससरि गेल। विसहरा साप। ऐश्वर्यक पहिल संकेत छल ओ। यैह साप हुनक तागति अछि। सापे सँ मजगूतीक अनुभव करैत छथि ओ। सापक चमक ओकर लोच आ

रोशनी फेकैत आँखि, लपलप करैत जीह ! आह, एहेन सौन्दर्य ! अपूर्व ! करेज सँ सटा क' रखैत छथि रामलाल मण्डल साप के। सापे हुनक उन्नति आ आतंकक मूल छनि। जहिना साप सहसह करैत रहैत छनि हुनकर हृदय मे तहिना घंघरु सेहो बजैत रहैत छनि। एक नीक सपेराक संग एक भावुक नचनियाँ सेहो छथि ओ। हुनकर पैर सदिखन थिरकैत रहैए। बहुत ध्यान सँ चित्त एकाग्र केला पर अहूँके हुनक नाच आ' पैरक थिरकब देखा पड़ि सकैए। मुदा एहि लेल हमरे जकाँ जँ हुनकर शरीर मे प्रवेश क' देखी त' आर स्पष्ट देखि सकब। हमरे जकाँ अशान्त, व्याकुल-बेचैन हुअ' पड़त। निश्चिन्त, चैन सँ पड़ल शान्ति प्रेमी लोक हुनकर पैरक थिरकब ठीक सँ नहि देखि सकैए। करेज मे सहसह करैत साप त' किन्हुँ नहि देखि सकैए। हम त' अशान्त भइयो क' मोहक व्यक्तित्वक मोहपाश मे तेना ने बन्हाएल छी जे शरीर छोड़ल नहि होइए। घातक तनाव भोगितो मोहक बन्धन ढील नहि भ' रहलए। तमाम कष्ट, परेशानी मोहक आगू गौंड़ आछि। गोंग अछि। ई मोहो अद्भुत होइए। यैह मोह रामलालजी के कोठा पर ल' गेल।

— की तकै छह ?

— तोरे तकै छी।

— किए तकै छह ?

— नीक लगै छैं।

— केहेन नीक ?

— नोन सन।

— चाहै की छह ?

— तोरे रूप गुण।

— की करबह ?

— लेपि लेब देह मे।

— देह मे लेपला सँ की हेतह ?

— रसे-रसे हमर मोन मे मीलि जेबें। चल आ सुन्दरी ! थिरकैत। घुँघरु बजबैत। आँखि नचबैत हमर मोनमे चल आ। चल आ।

— चल अएलहुँ। बाज आब। की करबें ?

— रह। जीवन भरि रह। हमर मोन मे रह। हमर आँखि मे रह। हमर पैर मे रह।

—रहि गेलहुँ। आबि गेलहुँ। चल। कत' चलबें ? गाछ पर चलबें की पात पर चलबें ? नदी मे चलबें की समुद्र मे चलबें ? कत' चलबें ? कोना चलबें? कत' रखबें। बाज कत' रखबें ?

— उड़िके चलब। फुदकि के चलब। कोठा सँ उठेलियौ कोठे पर रहबें।

— वाह ! वाह ! खूब कहलें। कोठा सँ उठाके कोठे पर रखबें। हमरो कोठा तोरो कोठा।

हमहूँ नाचब तोंहू नचबें। मीलि-जुलि नचबै।

छमछम नचबै। माल हेबै। खरीदार हेबै। बजार सँ चलि क' बजारमे रहबै.....।

बाजार मे माल अद्भुत ! खरीददार अद्भुत ! पैकार अद्भुत ! सरोकार अद्भुत ! बाजारक व्यवहार अद्भुत !

— पूल के ठीका

पाँच लाख

— रोड के ठीका

दस लाख

— गुदगर बहाली

एक लाख

— जाँच सँ बाँचब

दू लाख

— निलम्बन आपस

पचास हजार

— अगिला प्रमोशन

बीस हजार

— विरोधीक अपहरण

तीन लाख

— सामूहिक हत्या

बीस लाख

— देहक कीमत

दस हजार

— मोनक मूल्य

पच्चीस हजार

— आत्माक मूल्य

दस रुपैया।

बाजार भाव घटैत-बढ़ैत रहैए। भूल-चूक लेनी-देनी चलैए। उद्योग-धंधा बढ़ि रहलए। विकास दौड़ि रहलए। डंकल कका आबि रहल छथि। गैट साहब पूजा रहल छथि। मल्टीनेशनल नाचि रहल अछि। खूब रमन-चमन चलि रहल अछि। शामियाना। माइक। फूलमाला। अनावरण। मूर्ति स्थापन। मिटिंग। सीटिंग। हाइपावर कमिटी। रिभ्यू। कान्फ्रेंस। कराम-कराम। धड़ाम-धड़ाम। रोजगार योजनाक रिपोर्ट। आवास निर्माणक रिपोर्ट। पुलिया कल्भर्टक रिपोर्ट। आई० आर० डी० पी० क प्रोग्रेस। लक्ष्यक विरुद्ध उपलब्धि। आँकड़ा। कागज। जाल.....वंशी।

—अहाँ सभ एकदम गोबरक चोत छी। कोनो काज ठीक सँ नहि भ' सकैए। जे काज सप्ताह मे हैत ओहि मे मास लगैए। मासो दिन मे उपलब्धि पन्द्रह परसेंट। केवल खाउ आ हगू। सिन्हाजी, कते दिन सँ कलक्टर छी अहाँ ?

— छह मास भ' गेलए सर। असलमे....

— असल मे की ? असल मे किछु नहि। छबे मास मे मोटा क' भीसिण्ड भ' गेल छी। सिलौट पर जखन जनता लोढ़ी ल' कए रगड़त त' धनी सन पीसा जाएब अहाँ। मुदा ई मौका हम सभ नहि आब' देब। ओहि सँ पहिने हमहीं भरकुस्सा बना देब। जबाब हमरा सभ के ने दिअ' पड़ैए। जनता के, विधायक के की जबाब देबै हम सभ। अहाँके की ? अस्तबल सँ उठब त' महागोशाला मे जा क' पड़ि रहब। अहीं सन काहिल आ निर्लज्ज अधिकारी सभहक कारणे ई हाल भेल अछि प्रदेशक। अपन भाभट समटू आब एहिठाम सँ। कबूतरखाना प्रतीक्षा क' रहलए अहाँके।

— नहि सर। असल मे पाइ सभटा....

— की पाइ सभटा। खाली पाइ। पाइ सँ अहाँ सभहक पेट नहि भरि सकैए कहियो। एखने जाँच कराएब त' बों-बों कर' लागब। बोमिआए लागब। कराउ जाँच ? तैयार छी अहाँ ?

— अपने त' बिगड़ि गेलियै सर ! अपनेक आँच के सहि सकैए। हमरा सभ त'।....

—कथी हमरा सभ? सुथनी। मोन आजिज क' दैत छी। जाउ। टेंशन भ' जाइए हमरा। साँझ मे भेंट करब।

चलैत रहैत अछि भेंट-घाँट। आदान-प्रदान। गरिआएब-पुचकारब चलैत रहैत अछि। ब्रीफकेस अबैए। ब्रीफकेस जाइत अछि। बेला-चमेली गमकैए। आकासक तारा सभ धपधप कुर्त्ता-धोती पर चमकैए। मोती सन बरसैत अछि सत्ता रामलाल

मण्डलक देह पर। झमाझम बरखा सँ नेहाल होइत रहैत छथि मंत्रीजी। रस सँ सराबोर। भीजैत-तीतैत। पैर थिरकैत रहैए। घुँघरु बजैत रहैए। साप सरसराइत सनसनाइत रहैए। सपनाइत रहैत छथि मंत्री रामलाल मण्डल जी। नम्बर एक—नम्बर एक। गोटी सेट करैत रहैत छथि। प्यादा, फर्जी, किश्ती, घोड़ा....। सह आ मात खेलाइत रहैत छथि। ब्राह्मण, दलित, पिछड़ा, मुसलिम....गोटी पर गोटी। तर्जनी आ औठा। दिमागके खेल। दिमाग तेज आ बुद्धि प्रखर भेल चल जाइत छनि। एडभाइस लैत छथि ब्राह्मण सँ। राशि लैत छथि दलित सँ। रोटी आ बेटी पिछड़ा सँ। सम्मान लैत छथि मुसलिम सँ।

गाममे कोठा बनि रहल छनि रामलाल मण्डल जीक। कोठा निर्माण काज देखि रहल छथिन विश्वस्त इंजीनियर उपाध्याय जी। विभागेक अधिकारी छथि। मृदुभाषी, तीव्रबुद्धि आ कोनो जोगार मे प्रवीण मानल जाइत छथि उपाध्याय जी। बोल सँ त' जेना मधु चूबैत छनि। मुदा दिमाग मोन सँ तेज दौड़ैत छनि। कोठा क लेल निर्माण सामग्री सँ ल' कए पाइ-कौड़ीक जोगार धरि सभटा देखैत छथि उपाध्याय जी। मंत्रीजी सँ निकटताक कारणे विभाग मे वेश पुजबै छथि ओ। कोनो सिनियरो अफसरक चैम्बर मे बिना रोक टोक हुनकर प्रवेश छनि। चूँकि तकनीकी अधिकारी सभहक प्रति मंत्रीजीक वेशी अनुग्रह रहैत छनि तैं उपाध्याय जी बहुधा कोनो ने कोनो तकनीकी अफसरक लग बैसल भेटि सकैत छथि। जाहि अफसरक चैम्बर मे ओ प्रवेश करैत छथि हुनकर गर्दनिक पछिला भाग मे घामक एक पातर रेख किछुए क्षणक बाद देखा पड़ि सकैत अछि।

— सर, मंत्रीजी अहाँक स्मरण करैत छलाह।

— एँ। स्मरण करैत छलाह। की कहैत छलाह ?

— से छोड़ल जाय सर ! अपने हुनका सँ भेंट क' लिअनु।

— लेकिन उपाध्यायजी ! मंत्रीजी कहैत की छलाह ? से कने कहू ने।

— ई सभ कोनो कहबाक गप्प छै सरकार !

— नहि, अहाँ कहू ने।

— बड़ गारि पढ़ैत छलाह सर !

—एँ, गारि पढ़ैत छलाह ? की गारि पढ़ैत छलाह ?

— फेर सर, अपने हमरा विवश क' रहल छी। गारि पढ़ैत छलाह, बस।

— अहाँके हमरे सप्पत उपाध्यायजी। कहू मंत्रीजी की गारि पढ़ैत छलाह।

— बेटी चो....द... कहैत छलाह सर।

कनेककाल ओ अफसर शान्त भ' जाइत छलाह। निस्तब्ध। तकरबाद शीघ्रहिं मंत्रीजी सँ भेट क' लेबाक निश्चय दोहराब' लगैत छलाह। एही बीच उपाध्यायजी गौं सँ उठि क' चलि दैत रहथि। मंत्री रामलाल मण्डलजी सप्ताह-दस दिन पर उपाध्याय जी सँ कोठाक प्रोग्रेस रिपोर्ट लेथि। विचार-विमर्श करथि। अनुदेश जारी करथि।

— उपाध्यायजी। गाममे अपन कोठाक की प्रोग्रेस अछि ? संगमरमर आबि गेल जयपुर सँ ?

— एखन आयल कहाँ अछि हजूर ! बिल्टी मुदा पहुँचि गेल अछि। तीन लाख चौहत्तरि हजारक अछि। मुदा पाइक जोगार....

— एं ! ओ खचराहा नहि देलक एखन धरि ? पन्द्रह दिन पहिने कहने रहए।

—चीफ इंजीनियर साहेब कहैत छथि जे ट्रेजरी सँ रुपैया नहि निकलि सकलनि। तैं ओ पुनः अलाटमेंट लेल कहैत छलाह।

— मर बहिंचो....। सरबा अलाटमेंटक की गप्प करैए ? ओकरा त' कत्तौ सँ देबाक छै। अपन देह बेचि क' दिअए बा बहु-बेटी के बेचि क'। जाउ अहाँ कहि दिऔ जे चारि बजे साँझमे हमरा सँ भेंट करए। आइ हम बेछिलल बाँस करै छियनि इंजीनियरबे के। काल्हि अहाँके भेटि जाएत पाइ। रेलवे बैगन आबि जाय त' छोड़ा लेब। कोनो दिक्कत हुअए त' कहब। साओन तक हमरा मकान बना लेबाक अछि। गृह प्रवेश करब। हँ, साप सभहक लेल सीसाक घर बनाब' पड़तैक। लालसाहेब सँ सभटा डिटेल बूझि लिअ'। की सभ कर' पड़तैक। जेना दिल्ली मे छैक तहिना बनक चाही।

—ठीक छै सर ! हम चीफ इंजीनियर साहेब के बजौने अएबनि।

— हँ, कहबै जे खूब गारि पढ़ैत छलाह। ई सभ बिना गरिऔने मानै बला नहि अछि। अहाँ त' बुझनुक लोक छी।

चारुकात खोपड़ी, फूसघर आ खपड़ैल सभहक बीच ग्रामीण विकास मंत्री रामलाल मण्डलक आलीशान, भव्य कोठा। संगमरमरक फर्श। चानन के केबाड़ी। इटालियन टाइल्स। सापक विशाल हाल। सीसा आ रोशनी सँ जगमग करैत। राशि-राशि के रंग-विरंगक तीन सए पैसठि साप। हरहरा सँ ल' कए अजगर धरि। सीसा मे चमकैत। ससरैत साप। अद्भुत !

मंत्रीजीक जय !

मण्डलजीक जय !

हुनकर बाल-बच्चाक जय !

हुनकर कोठा-सोफाक जय !

ससरैत-चमकैत सापक जय ! जय हो। जय हो। एहि फूस, काठ, बाँस, माटि, जौरक बीच संगमरमर, टाइल्स, चानन, पेंट, डिसटेम्पर, सीसा, लोहा, स्टीलक जय ! गामक छह सै बरखक इतिहास मे तीनटा कोठा आ एकटा कोठीक जय ! नीलहा साहेबक कोठीक जय। रायबहादुर ताराकान्त चौधरि, जमीन्दार साहेब क कोठाक जय। माछ-मखानक पैकार मुखिया दुर्जोधन मिसरक कोठाक जय ! अद्भुत सपेरा मन्त्री रामलाल मण्डलक कोठाक जय। सौंसे पसरलं, चतरल चल जाइत दालमण्डी, सोनागाछी, कमाटीपुरा, चतुर्भुजस्थान, दुल्हिनबाजारक जय। जय हो... जय हो....।

X X X

अन्हार राति छल। हाथ-हाथ नहि सुझैत। अजीब शान्त, निस्तब्ध वातावरण। लगै छल जेना अकास कनिए कालक बाद टूटि कए खसि पड़त। धरती अकास ठेकि जाएत। किछु क्षणक उपरान्त जेना सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड धूरा सँ भरि जायत। धूरा क अम्बार। क्रमश: ललछौंह होइत अकास। हिलोर मारैत पोखरि-इनार-नदी। पता नहि तरे-तरे की भेल। रामलाल मण्डलक साप सभ सीसाक घर सँ बहार भ' गेल। चारुकात गाम मे सरसराइत-सनसनाइत ससर' लागल। फुफकार सँ आसमर्द क' देलक समूचा वातावरणके। लोक सभ खिड़की, फटक खोलिके देखलक मारितेरास साप। सापे-साप। उन्मुक्त ! स्वच्छन्द ! रामलाल मण्डल बन्दूक सँ साप के मारि रहल छलाह। धाँय....धाँय...। बारुदक अपूर्व सुगन्धि ! मुदा अद्भुत ! साप सभ के गोली लागि नहि रहल छलैक। ओ सभ खिलखिला-खिलखिला हँसि रहल छल।.... हँसैत जा रहल छल....।



सहज-असहज

जहियासँ कामेशर चौधरी राधेश्याम बाबूक डेरा पर अएलाह अछि चर्चाक विषय बनल छथि। चर्चोक अजब ताल अछि। के कोना चर्चित भ' जाएत तकर कोनो ठेकान नहि। कतेक दूर तक चर्चित होयत तकरो सीमा नहि। किए चर्चित होयत तकर लेखा-जोखा नहि। मुदा एकटा बात निश्चित जे किछु अजगुत बात जरूर छै चर्चाक पाछू। अजगुत क्रिया केनिहार, अनटोटल बजनिहार अनेरे आइ-काल्हि चर्चामे आबि सकेए। पहिने लोक अजगुत-अनटोटल पर ध्यान नहि दैक। ध्यान देबो करैक कियो त' बात के पेटेमे राखि लिअए। एक कान, दू कान नहि होइक। मुदा आब ? कोनो बात, केहनो बात लोकके कमे बरदास्त होइ छै। मने बरदास्त करबाक आदति बदलि गेल छैक। जेना छोट बात बरदास्त नहि होइ छै मुदा पैघ बात बरदास्त क' लैए। असल मे बातक ओतेक मोजर नहि छै जतेक लोकक छैक। ककर बात बरदास्त करबाक छै ? के बरदास्त क' रहलए? ई वेशी माने रखैत छै आइकाल्हि। ओना सत्त पूछी त' लोकोक कोनो माने नहि छै। ओहि लोकमे कतेक शक्ति छै से माने रखैत छैक। आ' शक्तिक बटिखारा की छैक से आब नुकाएल नहि रहलैए। ओहि बटिखारा सँ तौलला पर कामेश्वर चौधरी आ' राधेश्याम बाबू मे बड़ फरक छनि। कामेशर चौधरी गाम मे खेती-पथारी करैत छथि आ' राधेश्याम बाबू शहरमे बड़का हाकिम छथि। चौधरीकें एकटा खपड़ैल आ एकटा फूसक घर छनि। राधेश्याम बाबू शहर मे तीन मंजिला मकान ठोकने छथि। सभटा भौतिक सुख-सुविधा छनि। सफल लोक छथि। दूनूमे समानताक नाम पर एतबे छनि जे दूनू एक दोसराक अभिन्न रहल छथि। एके संग स्कूल गेल छथि। एके संग मैट्रिक केने छथि। मुदा ओकर बाद संग छूटि गेलनि। चौधरी मैट्रिकक बाद आगू नहि पढ़ि सकलाह। बापक आकस्मिक मृत्युक कारणे नोन-तेल मे लगलाह आ' राधेश्याम बाबू पढ़ि-लीखि के बड़का हाकिम भेलाह। मुदा अनेक असमानता रहितो आश्चर्यजनक रूपसँ मित्रतामे कमी नहि भेलनि। मित्र बनल

रहलाह। ओना कतबो दोस्ती रहनु भेट-घाँट कमे होइत छनि दूनू के। दूनू अपन काजमे बाझल। ककरो पलखति नहि। राधेश्याम बाबू कहियो गाम जाइत छथि, एक-दू दिन लेल त' भेंट होइत छनि। चौधरी आइ धरि मुदा कहियो राधेश्याम बाबूक डेरा पर नहि आएल छलाह। मकानक गृहप्रवेशो मे नहि। एहि बेर राधेश्याम बाबू नहि मानलथिन। गामसँ खीचने चल अएलथिन। संग-संग कारमे। अपन मित्रके आलीशान भवन देखेबाक उत्कट अभिलाषा छलनि। एक-एकटा खिड़की, केबाड़, पेंट, डिजाइन, मोजाएक, टाइल्स सभटा देखेबाक-सुनेबाक अभिलाषा। खूब स्वागत सत्कार करबाक इच्छा रहनि। चौधरीक अएलासँ बहुत प्रसन्न छलाह राधेश्याम बाबू। बहुत दिन पर एतेक खुशी भेल रहनि। पत्नी सेहो मार्क क' गेल रहथिन।

—'बड़ प्रसन्न छी अहाँ। एतेक प्रसन्नता बहुत दिन पर देखलहुँ अछि।' रातिमे बिछान पर अबैत सुधा कहने रहथिन। बड़ी जोरसँ हँसलाह राधेश्याम बाबू। हृदय खोलि क'।

—'ठीके, सुधा ! हम बहुत प्रसन्न छी आइ। एतेक प्रसन्नता एहि मकानक गृहप्रवेशो दिन नहि भेल छल। एतेक प्रसन्न कंपनीक मैनेजिंग डाइरेक्टर भेलो पर नहि भेल रही। एतेक खुशी त' पिंटूक वर्थ डे मे मुख्यमंत्रीक अयलो पर नहि भेल छल।' कहि क' राधेश्याम बाबू गसिया क' भरि पांज मे लेलनि पत्नीके। बड़ी जोर सँ दबौलनि। गुदगर मासु बाली सुधा रबड़ जकाँ मने दबैत चल गेली। बहुत दिन पर एतेक कसि क' आलिंगन मे लेने रहथिन राधेश्याम बाबू। सुधाक हृदय जुड़ा गेलनि। छाती फड़फड़ाए लगलनि। कृत्रिम क्रोध प्रकट केलनि,

—'आहिरे बा। छोड़ू आब। प्रसन्न छी त' तकर अर्थ की ? जान मारि देब हमर ? एहन बात नहि देखलए। आब बूढ़ो भ' रहल छी किने ?' कहि क' आलिंगन पाश सँ मुक्त हेबाक चेष्टा केलनि। मुदा आर सन्हिया गेलीह।

—'ककरा बूढ़ कहै छी अहाँ ? हम बूढ़ छी ?' राधेश्याम बाबू आँखि गुड़ारि क' सुधा दिस तकलनि। सुधा मुसकुरा उठलीह,

—'अहाँ कथी लेल बूढ़ होयब। अहाँ त' एकदम छड़े छाँट छी। बूढ़ि त' हम भ' गेलहुँ। मौगी जल्दी बूढ़ि होइए की ने ?' राधेश्याम बाबूक दुलार बढ़ि गेलनि। सुधाक ठुड्ढी पकड़ि क' मुड़ी उपर उठा देलथिन,

—'के बूढ़ि कहत अहाँकें ? एक्कोरत्ती चमड़ा नहि घोंकचलए ? एकदम बीस बरखक छौंड़ी लगै छी। कोनो छौंड़ा सीटी बजा सकैए।' कहि क' फेर एकटा ठहाका लगौलनि। सुधा के लाज भ' गेलनि। ओ पतिक छाती मे मुड़ी घोसिया लेलनि। राधेश्याम बाबू मोलायम केश संगे खेलाए लगलाह। एक-एकटा केश के अलग करैत रहलाह। खुजल केशक लटकें ओझरबैत-सोझरबैत रहलाह। बजलाह,

—'कामेशरके अपन मकान देखा क' बड़ प्रसन्न छी। नेनपनमे देखल सपनाक साक्षी अछि त' मात्र कामेशरे। हमर एक-एक टा स्वप्न, अभिलाषा, तृष्णा, आकांक्षा सभहक एकमात्र साक्षी।' अतीत राधेश्याम बाबूक आँखिमे आबि गेल रहए। संग-संग स्कूल गेनाइ। संगे-संग खेल। पोखरि-नदीमे स्नान। गाछी-विरछीमे टहलान। कलम बागक मचान पर गोपीक लोभमे भरि दुपहरियाक संग-संग प्रतीक्षा। नेनेसँ कामेशर मितभाषी रहथि। राधेश्याम बाबू नमरी फचाँड़ि। गप्प छोड़ै मे ओस्ताद। कामेशर के गप्प सुनबामे वेशी मोन लागनि। बजबामे कम। लेकिन जे बाजथि सवा सोलह आना ठोकि बजा क'। दूनूमे आकर्षणक मुख्य आधारो लगैए गप्पे रहए। एक नीक गप्पी दोसर नीक श्रोता....। राधेश्याम बाबूक कने अनटोटलो गप्पके कामेशर चौधरी मानि लेथि। यैह सभ खूबी मित्रताक कारण बनि गेल। एकटा आर आकर्षणक कारण छल। दूनूक भोजन प्रेमी भेनाइ। कोनो भोज-भातमे ठेहुन खसा क' भोजन करबामे दूनू ओस्ताद। एक-दोसरा के आग्रह क' के दूनू लाभान्वित होथि। बारिक जँ कोनो वस्तु दोहरबै लेल आबथि त' राधेश्याम बाबू कामेशर चौधरी के देबा हेतु कहथिन। कामेशर चौधरी राधेश्याम बाबू के। बारिक दूनूके परसि क' चल जाथि। भोज-भात, रंग-रभस, सलाह-मिलान, झगड़ा-झंझटि, रुसबाक-फुलबाक कतेक स्मृति आँखिमे हुलुक-बुलुक करै छनि राधेश्याम बाबू के।

—'अहाँके नीन्न नहि भ' रहलए की ? आइ गोली नहि खेलिअइए?' सुधाक ओंघाएल स्वर राधेश्याम बाबूक ध्यान भंग केलकनि। मनकथासँ उबरलाह।

—'ओह, गोली त' खेने रहियैक मुदा असरि नहिक' रहलए। एकटा आर खा लैत छी।' राधेश्याम बाबू उठबाक उपक्रम केलनि।

—'नहि, नहि ! डाक्टर मना केने अछि। एकटासँ वेशी नहि खाउ।' सुधा रोकलथिन।

—'ठीक छै। कने टहलि क' अबैत छी। भ' सकैए तकर बाद नीन्न भ' जाए। अहाँ सूतू।' कहि क' राधेश्याम बाबू उठि गेलाह। बेड रुमसँ ड्राइंग हालमे अएलाह। इच्छा भेलनि जे कने कामेशर के देखि लियैक। सूतल अछि की जागल। जागल होयत त' गप्पे-सप्प करब। नहुँएसँ केबाड़ अलगा क' देखलथिन। कामेशर चौधरी पलंग पर नहि रहथि। कत' चल गेल ? एअर कन्डीशन गेस्ट रुममे कनेकाल राधेश्याम बाबू ओहिना ठाढ़ रहि गेलाह। रतुका बल्बके हरियर प्रकाशमे चारू महर नजरि खिरौलनि। कत्तौ पता नहि। कहीं बाथ रूममे त' ने अछि? बाथरूमक केबाड़ ठेलि कए देखलथिन। केबाड़ खुजि गेलनि। कामेशर नहि रहथि। आब चिन्तित भ' गेलाह राधेश्याम बाबू। कत' चल गेलै? समूचा ताक' लगलाह। ग्राउन्ड फ्लोर मे तकलनि। फर्स्ट फ्लोरमे तकलनि। कतौ पता नहि। राधेश्याम बाबूक मोन हुअ' लगलनि जे कान' लागी। छत पर गेलाह।

हड़बड़ा क'। कामेशर चौधरी छत पर सूतल रहथि। निसभेर। फोंफ कटैत। अखरे पटिया पर। जानमे जान अएलनि। इच्छा भेलनि जे कामेशरके जगा क' गप्पे-सप्प कएल जाए। मुदा फेर किछु सोचि क' नहि उठौलथिन। आपस घुरि गेलाह। छत परसँ नीचा उतरैत काल पैर भारी लाग' लगलनि। कामेशर चौधरीक नीन्न दिमागमे सन्हिया गेलनि। नीचा आबि क' नीन्नक दोसर गोली जल्दीसँ गीड़ि गेलाह एक गिलास ठंढा पानिक संग। पुन: बिछान पर अएलाह.....। पड़ि रहलाह....। नीन्नक प्रतीक्षामे....।

राधेश्याम बाबूक बेटा-बेटीक लेल गामकका कामेशर चौधरी अजगुत लोक रहथि। एकदम राज अथवा डायमण्ड कामिक्सक कोनो पात्र सन जे अखरे पटिया पर सुतैए। एअरकन्डीशन्ड कोठलीमे मोटका गद्दा पर जकरा नीन्न नहि होइ छै। पंखाक हवा नीक नहि लगै छै। जे जलखै मे पाँचटा परोठा आ भरि बट्टा तरकारी खाइए। कलौ मे खूब प्रेमसँ सचार भोजन करैए। खूब सुतैए। खूब पचै छै। कोनो वस्तु खाएब-पीयब वर्जित नहि छैक। डाक्टर कोनो चीज मना नहि केने छैक। एहन अजगुत लोक कोनो कामिक्से मे भ' सकैए। ई त' एकदम सुपरमैन छथि। पिंटू अपन दोस सभके गामककाक मादे कहैए। दोस सभ कामेशर चौधरीसँ भेंट करै लेल उत्सुक भ' जाइए।

—'चचा, अहाँके कहियो पेट नहि खराब होइए ?' पिंटूक संगी सभ पुछै छनि कामेशर चौधरी कें। चौधरी के हँसी लगै छनि,

—'हँ, एक बेर पेट खराब भेल रहए। गोड़ दस-बारहेक दस्त भेल। मुदा वैद्यजीक चारि पुरिया लवण-भास्करसँ ठीक भ' गेल।'— चौधरी मुसकुराइत कहैत छथिन। पिंटू पुछिए दैत छनि,

—'गामकका, अहाँक पेट कोना खराब भ' गेल ? की खा लेने रहियै?'

—'अँएह, की कहै छह! बाजी पर एगारह टा फाँड़ा अचारक संगे तीस टा सपेता आम खा लेने रहियैक। कने पेट चालि देलकै।' कामेशर चौधरीक उत्तरसँ सभ छौड़ाके चकविदोर लागि गेलै। एगारहटा फाँड़ा अचार आ' तीस टा मालदह आम। बाप रे। ओ सभ एकटा सँ वेशी आम कहियो एक बेरमे नहि खेने रहए। खाइयो नहि सकैत छल। पिंटूक एकटा संगी प्रेस रिर्पोटरक अन्दाजमे कामेशर चौधरीसँ इन्टरव्यू लिअ' लागल रहए। कतेक गोटा अपन आटोग्राफ बुकमे हुनकासँ आटोग्राफ लेलक। कामेशर चौधरी के नीक लागि रहल छलनि। खूब आनन्द अएलनि।

तीन-चारि दिन रहलाक बाद जखन कामेशर चौधरी गाम विदा हुअ' लगलाह त' राधेश्याम बाबू अपन कारसँ बस स्टेंड धरि छोड़ै लेल अएलथिन। रस्तामे पुछलथिन,

—'की कामेशर ! शहर नीक लगलह कीने ? हमर मकान पसिन्न पड़लह? बोर त' ने भेलह एहि तीन-चारि दिनमे।'

—'आहि, बोर किएक होयब हौ। बड़े नीक लागल सभ। मकान, शहर, खेनाइ-पिनाइ। तोहर स्नेह, आदर। कत्ते परेसान रहलह तों एहि तीन-चारि दिन हमरा लेल। तों अपन सभ स्वप्न साकार क' लेलह। नेनेसँ जे सभ कहै छलह, बजै छलह सभ किछु प्राप्त क' लेलह।'

राधेश्याम बाबू गद्‌गद् भ' गेलाह। अपन स्वप्नक साक्षी लंगोटिया यार कामेशर चौधरी सँ अपन उपलब्धि, अपन सफलताक डंका पिटबा लेने छलाह। आब आर की चाही ? गौरवक एक अनुभूति लहरि गेलनि। कान गरम भ' गेलनि। ध्यान भग्न भेलनि कामेशरक एक प्रश्नसँ। ओ पूछि रहल छलाह,

—'एकटा बात पूछियह ? अँए हौ ! तोरा भूख किए नहि लगै छह ? तोहर क्षुधा त' बड़ तेज रह'। कत' चल गेलह ?' एअरकन्डीशन्ड कारमे राधेश्याम बाबू पसीनासँ तरबतर भ' गेलाह। भूख मोनमे चकभाउर दैत रहलनि....। भूख....?



जिनिस

—की, आब माथक दर्द कम नहि भेल ? दबा दिय' ?

—ई दिन हमर कहिया हैत जे कनी अहाँ माथ दबा देब। दिनकर दीनानाथ सहाय भ' जेताह ओहि दिन।

—त' लगैए दिनकर दीनानाथ सहाय छथि आइ। लाउ, दबा दैत छी माथ। तकिया हटाउ।

—नहि, छोड़ि दिअ'। एक दिन दबा देब त' दस दिन बाजब। दोस-महिम के कहबै जे हम त' हिनकर सेवक छियनि।

—से त' छीहे। ई कोनो फूसि बात छै।

—फूसि बात छैक नहि त' की ? अहाँ कहिया हमर सेवा करैत छी। हम त' कत्ते दिन ने सेवा केने हैब। हरदम अहींक आ अहींक बेटा-बेटीक सेवामे लागल रहैत छी। हमरा के देखैए ?' रुपा नाक सुरक' लागल रहए। नोर आँखिमे हुलुक-बुलुक कर' लगलै। एहि स्थितिसँ सतीश हरदम बच' चाहैए। होइ छै जे माथ-कपार नोचि लिअए। कोनो बात, कोनो क्रिया सोझ रहिए नहि पबैत छैक। सभ टेढ़-टूढ़, फूलल कांटसँ भरल। नागफनी जकाँ। इह, नागफनीक काँट...। इस्स...।

भोर आइ काल्हि नीक नहि होइ छै। पैर-हाथ टटाइत। इदिर-बिदिर सोचाइत। उठले नहि होइत रहै छै। होइ छै जे पड़ले रही। करौट फेरबोमे जेना कष्ट होइ छै। देहमे टीसक लहरि उठैत रहै छै। मोन होइ छै जेना कियो सम्पूर्ण देहपर जादू भरल शीतल हाथ फेरि दैक। सभटा टीस-दर्द हरि लैक। स्फूर्ति आनि दैक देह-प्राणमे।

इह, एम० डी० जे खच्चर अछि। जानि-बूझिके सार हमरा नौए बजे अबै

लेल कहि देत। अपना त' घरपर कोनो काजे नहि रहैत छै। उठलहुँ आ विदा भेलहुँ आफिस...। बहु-बेटीसँ जेना कोनो मतलबे नहि। बुझाइए रातिमे एकठाम सुतबो नहि करैए साँए-बहु।

—की भोरे-भोरे कान' लगलहुँ। माथ दर्द करैए त' चाह बना क' पीबि लिअ'। हमरो पिआउ। भोरका चाह त' अहाँ एकदम सनगर बनबैत छी।' सतीश रुपा के बौंसबाक चेष्टा करैए। मुदा रुपा पर कोनो असरि नहि होइत छैक। ओहिना पड़ले रहैए। बगलसे राखल तकियासँ माथ के दबा लैए। सतीश के किछु फुराइते नहि छैक जे-की करए। कखनो इच्छा होइ छै जे उठि क' अपने चाह बना लिअए। रुपा के सेहो पीआ दैक। मुदा उठल नहि होइ छैक। अपनेसँ चाहो बनेबाक अभ्यास कहिया ने छूटि गेलैक। घरक कोनो काज नहि कएल होइत छैक। अपनो कोनो काज नहि क' पबैए। गंजी, जंघिया धरि रुपे खींचि दैत छैक। एकदम स्त्रीपर आश्रित भ' गेलए ओ। मोनमे बहुत बात अबैत छैक घरक काजमे कनियाँ के मदति करबाक मादे।

पति-पत्नी दाम्पत्य रुपी गाड़ीक दू पहिया थिक। दूनूक सहयोगेपर घर-गृहस्थी चलै छैक। स्त्रीक प्रति पुरुख के संवेदनशील होयबाक चाही ! घर सम्हारब खाली स्त्रीएक काज नहि थिकैक। घरबला के सेहो घरबालीक काजमे-भानसमे तरकारी अनैमे, कटैमे, बच्चाक ताकूतीमे, सीबिया कढ़ियामे मदति करबाक चाही। घर आ बाहरक कोनो दियादी भिनाउज नहि होइ छै। स्त्री पुरुखक दियाद नहि थिकैक। मुदा ई सभ सिद्धान्त मोनेमे हुलकी दैत रहि जाइत छै। किछु कएल पार नहि लगै छै। कत्ते चाहैए जे आफिस के घरमे नहि आनए। मुदा से भ' नहि पबै छै। आफिस घरमे घुसिए जाइ छै।

रौ, तोरीके। काज सभटा हमरेसँ लेत मुदा सुविधा दै बेरमे सटक सीताराम। कने गाड़ी मंगलियैक साहूक बेटीक बियाहमे जेबाक लेल त' नहिए ने देलक। अपन बहु-बेटी गाड़ी ल'कए बौआइत रहै छै से किछु नहि। मुदा हम मँगबै त' नियम-कानून झाड़ए लागत। मितव्ययितापर भाषण देत। दही ने अपन बहु के भाषण। सभ दिन आफिसक गाड़ीसँ हथुआ मार्केट जाइ छै। कल्लो ने अलगैत हेतै ताहिमे। खाली हमरा सभ के झाड़ैत रहत। जेना गुलाम रही हम सभ....। उठ त' उठ, बैस त' बैस....।

—पड़ले रहबै यै। सात बाजि गेलै। आइ सबेरे जेबाक अछि आफिस। चाहो नहि पीलहुँ अछि एखनि धरि। भानस-भात कखन करब ? उठू ने। माथ दर्दक कोनो दबाइ ल' लिअ'।' सतीश फेरसँ रुपा के उठेबाक चेष्टा करैए।

—बाज' दिऔ सात। हमरा एखन नहि उठल हैत। माथ लगैए जेना फाटि जाएत। भरि राति ठीकसँ नीन्न नहि भेलए।' रुपा मुँह झँपने बाजि उठैए। सतीश के आब किछु बाजि नहि होइ छै। भीतर मे आगि पजर' लगै छै। गरमाइत रहैए।

सेराइत रहैए ! मुदा पड़लै रहैए।

सार, काज लेत हमरासँ। लाभ देतै शोभाकान्त के। अपन जाति-भाइ छै ने। हम खाली अंक बीछैत रहू। संख्या गीजैत रहू। शब्द चाभत आन। सभ दिन क' हरियरकी नोट चूस' शोभाकान्त। हम बूड़ि सतीश रिपोर्ट-रिटर्न मे ओझराएल रहू। खाली आफिसक वैलेंससीट बनबैत रहू मुदा घरक बैलेंससीट चौपट्ट भ' रहलए तकर कोनो ध्यान छै एम० डी० के। एहिसँ नीक त' जिलेक आफिसमे रही। दू पाइक आमदनियो भ' जाए।

कत्ते मोन प्रसन्न रहैत रहए। रुपो कत्ते स्वस्थ रहथि। हरदम पनिआएल माछ सन छहछह करैत। पाँज मे लिअ' चाही त' छिहलि जाथि। की रुप रहनि रुपाक! मोन हुअए जे हरदम लगेमे रहथि। आफिसोमे कहुखन के मोन पड़थि त' सौंसे कोठलीमे सुगन्धि पसरि जाए। काजो मे कत्ते मोन लागए। कखन साँझ पड़ि जाइ से की पता चलए। जेबी भरिक' घर घूरी त' रुपा कत्ते अह्लाद सँ स्वागत करथि। कत्ते नीक भोर हुअए ताहि दिन....।

—की दर्द कम नहि भेलए ? किए अहाँके माथक दर्द एतेक तबाह करैए से नहि जानि। अक्सर आइ काल्हि दर्दे करैत रहैए। चलू कोनो डाक्टरसँ साँझमे देखा दैत छी। आब बिना डाक्टरसँ देखौने काज नहि चलत।

—नहि, कोनो काज नहि छैक। डाक्टर की करतै ? ई दर्द छूट' बला नहि अछि। ई हमर जान ल' कए रहत। मरि जइतहुँ त' सभ दुख पार भ' जइतए।

—मरब अपन हाथमे अछि त' मरि जाउ। हरदम मरबेक गप्प रहैए अहाँके। दर्दक इलाजो होइ छै की ने।

—कोन-कोन रोगक इलाज कराएब अहाँ ? माथक दर्द, दाँतक दर्द, पैरक दर्द, छातीक दर्द...। कोन-कोन दर्दक इलाज कराएब ? जकर शरीरमे दर्दे-दर्द भरि गेल छै तकरा के डाक्टर ठीक क' सकैत छै ? कहू ? रुपा उत्तेजनामे उठि क' बैसि जाइए। सतीश मुदा पड़ले रहैत अछि। पड़ले-पड़ल गुम्हरि उठैए।

—कोनो दर्द नहि अछि अहाँके। सत्य पूछी त' सभटा अहाँक मोनक भाभट छी। सभटा दर्द असलमे अहाँ अपन मोनमे पोसने छी। मोनसँ दर्द हटाएब त' शरीरोसँ सभटा दर्द खतम भ' जाएत। सतीश आब खिसिया जाइए।

—हँ, हँ, हम मोनमे सभटा दर्द पोसने छी। दर्द पोसबाक हमरा हिस्सक भ' गेलए। दर्दक अमल लागि गेलए हमरा।' रुपा ओहिना उत्तेजनामे बजैत बड़बड़ाइत रहैए। सतीशक मोन विषसँ भरि जाइ छै। उबकी हुअ' लगै छै। वमन क' दैए।

—दर्दक अमल कथी ले लागत अहाँके। असल बात छै जे रुपैयाक अमल लागि गेलए। हम जायज-नजायज रुपैया अनैत रहू आ अहाँ छहर-महर करू। जाबत उपरी कमाइ होइ छल, अहाँके कोनो दर्द नहि रहए। मुदा सुक्खा दरमाहापर राजधानी मे घर चलाएब मोश्किल भ' गेलए त' सभटा दर्द शुरु भ' गेलए। एखने बाइली पाइ आब' लागत त' सभटा दर्द पार भ' जाएत।' सतीशक बातपर रुपाक सौंसे देह जेना नील रंगक भ' गेलै। आँखि सापक जीह सन लपलप कर लगलै। बाजल'

—ठीक कहैत छी अहाँ। रुपैयाक अमल लागि गेलए हमरा। मुदा ई अमल के लगौलक ? ई भूख के जगौलक ? के कहने रहए अहाँके हमरा ई अमल लगेबाक लेल। हम त' नहि कहियो कहलहुँ जे नजायज कमा क' आनू। घरमे फ्रीज, टी० भी०, पंखा, सोफा सभ खरीद लिअ'। रेशमी साड़ीक ढेर लगा दिअ'। हम मनो करी त' अहाँ हँसि क' टारि दी। कह' लागी जे भगवान दै छथिन त' छप्पर फाड़ि के दैत छथिन। हम त' एकटा गरीब लोकक बेटी रही। गरीबीमे हमरा रह' अबैत रहए। ई सुख-सुविधाक आदति के लगौलक हमरा ?' रुपा बजैत चल जा रहल छल।

—आदति लगा देब, अमल लगा देब, भूख जगा देब आ तखन कहब जे हम किछु नहि द' सकैत छी। किछु नहि क' सकैत छी। एहने बर लेल हम भोरे उठि क' तुसारी पुजने रही। गौरीक पूजा केने रही। एहिसँ नीक त' सुरजीक बर छै जे भरि दिन चिनियाबदाम बेचिक' पाइ अनै छै। अपने सुरजी तीन-चारि घरमे बर्त्तन-बासन मँजैए। कत्ते प्रसन्न रहैए पूरा परिवार....। श्रम करैए सभ आ सुखी रहैए। अहाँ त' बिना बाइली के श्रमो नहि कर' चाहैत छी। कोनो काजमे मोन नहि लगैए अहाँके। नजायजक बिना जायजो काज नहि कएल होइए अहाँके। जायज सम्बन्ध सेहो छूटि रहलए। मोन पाडू त' कत्ते दिन भ' गेल हैत हमर देह छूना अहाँके?'

रुपा बजैत रहैए। बजैत रहैए। मुदा सतीश चौंकि उठैए रुपाक बात सुनि क'। होइ छै जे सुख-सुविधाक लौल ओकरा जेना नपुंसक बना देलकैए। मुदा ओ अपन आफिसक एम० डी० नहि अछि। एम० डी० भइयो नहि सकैत अछि। एम० डी० सन हेबाक आकांक्षा ओकरा आइ एकटा जिनिस बना क' छोड़ि देलकैए। बहुत कमजोर अनुभव करैए अपना के। ओ रुपाक हाथ गसिया क' पकड़ि लैत अछि।



हिस्सक

साहेब कहने रहथि। गोपाल, लगैए आब जेल जाइये पड़त। हमरा मोने-मोन हँसी लागल। त' साहेब डेरा रहल छथि। कदाचित बाघ सन लोकके डेराइत देखि हमरा नीक लागि रहल छल। इहो भ' सकैए जे खुशियो होइत रहल हुअए। बड़ रोब देखबैत छलाह। बुझथुन आब। मुदा हम अपनाके गम्भीर बनौने रहलहुँ। आखिर साहेबे अछि। सेहो बाघ सनक साहेब। कमो जोरसँ देह हँसोथि देत तँ चमड़ी छिला जायत। हम हुनकर डरमे पैसि जेबाक चेष्टा कयलहुँ। जँ किछु भेटि गेल !

—आब सर ! जेल कोनो खराब स्थान थोड़ेक रहलैक ? एक सँ एक लोक तँ ओहिमे रहिये रहल छथि। सभटा सुविधा रहैत छैक ओहिमे। लोक कहैत अछि जे जोगार लागि जायत तँ बाहरो आबि क' घूमि-फीरि सकैत छी। खगताक सभ वस्तु भेटि सकैत अछि पूरा आराम रहैत छै। सर, कोनो तकलीफ नहि होइ छै।

साहेब मुदा गम्भीरे बनल रहलाह। हमर गप्प पर किछु बजलाह नहि। जेना किछु सोचि रहल होथि। हमरा भेल जे बात जमल नहि। भरिसक समस्याक तह धरि हम नहि पहुँचल छी। जेलमे रहबाक, सुविधा-असुविधाक कोनो समस्या नहि छनि साहेबके। वस्तुत: ई तँ कोनो समस्ये नहि छनि। एहि बातक ज्ञान भेलापर हमरा अपने उपर खौंझ भेल। बूड़ि छी हम। फुसिये बड़का ज्ञानी बनैत छी। मुदा साहेबक समस्या की छनि ? जेल तँ जाइये पड़तनि हुनका। जेलसँ आब बाँचि नहि सकैत छथि। कतहु पड़ाइयो नहि सकैत छथि। आ पड़ा क' जयताह कत' ? कत्ते दिन पड़यता ? आब ओहो हिया हारि चुकल छथि। कत्ते दिन लड़बो करताह? वकील, कचहरी, पुलिस आब केओ काज नहि द' रहल छनि। कानून, जेकरा सभ दिन फुटबाल बनौने रहलाह आ कतेको गोल कयलनि ओहिसँ, से ऐना उनटि जयतनि, भरिसक नहि सोचने छलाह। त' साहेब कानूनक विषयमे सोचि रहल छथि। ई कानून केहेन जनमारा भ' गेल। ई रखड़ सन, हवासँ भरल

वस्तु, एहेन हल्लुक ! से एतेक भारी भ' जायत तकर अनुमान साहेबके नहि रहल हेतनि। हम कने प्रसन्न भेलहुँ। जेना समस्याक जड़िमे पहुँचि गेल होइ। कानूनक विरुद्ध मोट-मोट तर्क ताक' लगलहुँ। एहिसँ साहेबक पीड़ा थोड़बो कम होयतनि से अनुमान कर' लगलहुँ। आब हम साहेबक बगलमे अपनाके ठाढ़ बूझ' लागल रही। दूनूक कन्हा जेना एक दोसराके छूबि रहल छल। हमरा नीक लागि रहल रहय। अधीनस्थ बुझबाक झंझटिसँ फराकति भेटि रहल हो जेना। ओना ई दोसर बात छल जे साहेब आ हम एक्के जातिक रही।

—सर, कानूने गड़बड़ छैक। सुआइत ओकरा लोक आन्हरो कहैत छैक। जे चाहए जेना चाहए ओकर विश्लेषण क' सकैत अछि। करहु लगैत अछि। दोसर, ई कानून सभ बहुत पुरान भ' गेल अछि। ई सी० आर० पी० सी०, ई आइ० पी० सी० कहिया बनलैक सर ! अंग्रेज सभ बनौने रहए। ई एकदम आब अप्रासंगिक भ' गेल छैक। वस्तुत: फेरसँ सभटा बनक चाही। आजुक स्थितिक अनुसार।' हम कानूनेक धौजनि क' कानूनसँ चोटाएल साहेबके मरहम लगयबाक प्रयास क' रहल छलहुँ। जेना कोनो बच्चाके देबालमे ठोकर लगैत छै त' लोक देबालके मार' लगैत अछि। कनैत बच्चा चुप्प भ' जाइत अछि। मुदा साहेब त' बच्चा नहि रहथि। लागल, हुनकर पीड़ा कम नहि भ' रहल छनि। आर जेना बढ़ले जा रहल छनि। ओ उकस-पाकस कर' लागल छलाह। देबाल दिस ताक' लागथि। जेना हमर बाते नहि सुनि रहल होथि। आब हम पुन: सोच लागल रही। त' साहेब बेचैन छथि। किए ? कथीक चिन्ता छनि हुनका ? इज्जतिक चिन्ता छनि ? प्रतिष्ठाक हनन बुझा रहल छनि ! हँ, हँ सैह बात छनि। एकदम पक्का ! एतेक ऊँच कुल-खानदानक लोक। इज्जति पर तँ बट्टा लगबे करतैक। हम आश्वस्त भ' गेल रही। आब तरीका कने बदलि लेलहुँ। एकदम्मे अपनाके प्रस्तुत क' देलहुँ बाघ लग खढ़िया जकाँ।

—सर, एक बेर हमरो जेल जयबाक स्थिति आबि गेल रहए। होइत छल जे पुलिस कखनो गिरफ्तार क' सकैत अछि। हम सभसँ पहिने अपन स्त्री, धिया-पूताके ई बात कहि देलियनि। हुनका सभके बुझा-सुझा देलियनि। असलमे हुनका सभके हमर जेल गेनाइसँ बेशी पुलिसक चिन्ता छलनि। पुलिससँ डर होइत रहनि। पुलिस बेइज्जिती करैत छैक। घरक समान सभके तोड़ि-फोड़ि दैत छैक। ओ सभ पुलिससँ बेसी आतंकित रहथि। एहि आतंकके कम करबाक हेतु हम कहि देने रहियनि जे जखने पुलिस आबए, हमरा कहि देब। हम पुलिसक संग तुरन्ते विदा भ' जायब। सामान सभ तखन बाँचि जाएत।'

साहेबक उकस-पाकस जेना कम होब' लगलनि। लगैए, असरि कयलकनि। आराम भेटि रहल छनि। रसे-रसे पीड़ा कम भ' जयतनि। हम निश्चिन्त भ' गेल रही। आब कोनो फिकिर नहि। ई नीक मरहम अछि। कनेक आर लगाइए दियनि।

कहलियनि, —सर, अपन परिवारके बुझयबाक काल हमरा इहो लागल

छल जे ओ सभ एहि बातसँ बेशी चिन्तित छथि जे मोहल्लावला सभ हमरा पकड़ि क' ल' जाइत देखि ने लिअए। बादमे सुनत त' सुनत। कहुना जँ नहि देखि सकए त' कोनो समस्या नहि छलनि जेना हुनका सभके। तैं हम कोर्टमे आत्म-समर्पण क' देबाक मादे सेहो सोचने रही तहिया।

साहेब आब मुसकुराए लगलाह। लगैए, ई गप्प हुनका अपील कयलकनि। मुसकुराइत हमरा दिस कखनहुँ क' ताकि लैत छलाह। मुदा हम कनेक सतर्क सेहो भ' गेल रही। लता सन हुनका मे किछु लटपटाइयो क' गन्तव्यपर दृष्टि राख' लगलहुँ।

कहलियनि, —असलमे सर, ई इज्जतिक प्रश्न सभसँ पैघ बाधक होइत छैक जेल जयबामे। अइ पर हम विचार कयने रही। हम सोचने रही जे ई इज्जति की थिक ? विचारलापर लागल जे ई किछु ने छी। इज्जति थिक बुढ़ियाक फूसि...।

साहेबक आँखि चमकि उठल छलनि। ई चमकी हमर आँखिसँ नहि बाँचि सकल। आब हम सचेष्ट भ' गेल रही। आगू बढ़ि रहल छलहुँ। बूझि गेल रही जे एहिसँ नीक अवसर आब हमरा कहियो नहि भेटत। हम प्रयास जारी रखलहुँ।

—सर, जेल जाइमे लाजोक कोनो गप्प नहि छैक। सर, लाज ककरासँ होइत छैक ? परिचितसँ। जे अहाँके चिन्हैत अछि तकरेसँ ने लाज। जे अहाँके चिन्हिते नहि अछि तकरासँ की लाज ? जेकरा दुनियाँ जनैत छैक, ओकरा लेल लाजक गप्प भ' सकैत छैक। मुदा सर, अहाँके कत्तेक लोक चिन्हैत होयत ? दू हजार? पाँच हजार ? एहिसँ बेसी त' किन्हुँ नहि !

—नहि, दस हजार सँ कम लोक नहि चिन्हैत होयत।—साहेब अकस्मात बाजि उठल रहथि।

—ठीक छै सर। दसे हजार रहओ। ओही दस हजार लोकसँ ने अहाँके लाज होयबाक चाही। एहिसँ बेसी लोक अहाँके चिन्हिते नहि अछि। अरब भरिक जनसंख्यामे दस हजारक कोन महत्त्व छैक सर!

साहेब आब गप्पमे रस लेब' लागल रहथि। हम आब हुनका एकटा खिस्सा सुनाब' लागल रही। एक बेर सर! हम आ' हमर एकटा दोस संगे-संग मुजफ्फरपुर गेल रही। बससँ उतरल रही। तहिया टीशने लग बस स्टैंड रहैक। उतरि क' विदा भेलहुँ त' दोस कहलक जे ऐ हौ खेनाइ खा लेब'। डेढ़ बजै छै। डेरापर खेनाइ ठीक नहि हेतै। दिक्कत भ' जयतै। हमरो भूख लागि गेल रहए। कहलियै, खा ले खेनाइ। एकटा होटलमे खेलियै दूनू गोटे। फेर विदा भेलियै रिक्शासँ। बटलरसँ पहिने जे रेलवे क्रासिंग छैक ओत' नदी लागि गेल। आ से जोरसँ लागि गेल। क्रासिंग बन्द रहैक। हम कहलियै, रिक्शा छोड़ि दहक। पैरे चलब। देरी लगतै फाटक खुजैमे। छोड़ि देलियै रिक्शा। चललापर आर जोरसँ नदी लागि गेल। भेल जे नहि सम्हरत। बटलरक आगूमे नाला बहैत रहैक।

सोचलहुँ जे एहीठाम फीरि ली। दोसर्कें कहलियै, हौ, तों कने आगाँ बढ़'। आगाँ बढ़ि क' ठाढ़ होअ'। हम नदी फिरै छी। लागि गेलए बड़ी जोरसँ। कहैत हम नाली कातमे बैसि गेलहुँ। लोक सभ आबि-जा रहल छल। केओ तकितो छल आ केओ नहियो तकैत छल। दोस आगू बढ़ि गेल रहए। हम शौंच क' आगू बढ़लहुँ। दोस लग पहुँचि गेलहुँ। दोस पुछलक—'तोरा लाज नहि भेलह ?' हम हँसि देने रहियैक। कहलियै—लाज तोरेसँ ने होइत ? तों त' हमरा देखिए नहि रहल छलाह। आगू भ' क' ठाढ़ रह'। तखन तोरासँ लाज किएक ? ओ हँस' लागल रहए। हमहूँ हँस' लागल रही। सावकाशक बाद मोन प्रसन्न भ' गेल रहए। साहेब सेहो प्रसन्न भ' गेल रहथि। उल्लास जेना कनिऐंकालक लेल हुनकर चेहरापर चोरा-नुक्की खेलाए लागल छल। आब ओ बजबाक मूडमे आबि गेल छलाह।

ठीके, ओ बाज' लगलाह, —गोपाल, तों अपूर्व लोक छह। नीक गप्प करैत छह। ताही कारणे हमरा नीक लगै छह। हम तोरापर प्रसन्न छी। हमरा खुशी भेल रहए। आर उत्साहित भ' उठल रही। लागल साहेब हमर मुट्ठीमें आबि गेल छथि। हिनकासँ जे चाहब भेटि सकैत अछि। आखिर हमरे जातिक लोक छथि। साहेब मुदा पुनः गम्भीर भ' गेल रहथि। हमरा लागल साहेब आब रहस्यक कोनो बात कहताह। हम हुनकर अपन लोक छियनि।

ओ कहबो कयलनि—'गोपाल, हमरा दुख एहि बातक अछि जे मंत्रीजी हमर मदति नहि कयलनि जखन कि हुनका करक चाहैत छलनि। हम दूनू गोटा सभ वस्तुमे साझीदार छलहुँ। एक दोसराके सहायता करैत छलहुँ। नफा-नोकसान पबैत-सहैत छलहुँ। लाभ कमाइत छलहुँ। मुदा ओ साफ कन्नी काटि लेलनि। किछु नहि कयलनि हमरा लेल। किछु नहि ! साफ छोड़ि देलनि।' साहेब पुनः चुप्प भ' गेल छलाह। हमरा आब आश्चर्य भेल रहए। मंत्रीजी अपन जातिक भ' क' किछु नहि कयलथिन। से कोना भ' सकैत छैक ? साझीदार भइयो क' ओहिना छोड़ि देलथिन ? हमरा साहेबसँ सहानुभूति भ' रहल छल। हम हुनकर मोनमे मचैत हलचलके गमबाक चेष्टा क' रहल छलहुँ।

तखने साहेब पुनः बाज' लागल रहथि—तोरा होइत छह जे हमरा जेलसँ भय भ' रहल अछि ? सुविधा-असुविधाक भय भ' रहल अछि ? कानूनसँ डर होब' लागल अछि ? इज्जतिक भय ? ई सभ कोनो बात नहि अछि।'

—'त' कोन बात अछि सर !' हम पूछि देने रहियनि।

मुदा साहेब त' हमरेसँ पूछ' लागल रहथि, 'लाजक एहिमे कोन प्रश्न छैक? हम सभ जाहि उद्योगमे लागल छी ताहिमे लाजक कोनो महत्व नहि छैक। लाज त' पहिनहि संग छोड़ि दैत छैक। अथवा लोक लाजेके छोड़ि दैत अछि। लाज-धाख त' तोरा सभक लेल अछि।'

—'सर ई कोन उद्योग छैक जाहिमे लाज छूटि जाइत छैक ?' हम बेस उत्सुक भ' गेल रही। होब' लागल रहए जे कहुना हमरो लाज छूटि जइते। बहुत

दिनसँ तंग कयने अछि।

—'रुपैया ! टाकाक उद्योग ! एही लेल त' वास्तवमे दु:ख भ' रहल अछि। जेल चल गेलापर से उद्योग छूटि जायत। आमदनी मारल जायत।'

—'से किए सर ! रुपैयाक कोन बात छैक। बैसलोठाम त' रुपैया स्वयं रुपैया कमाइते अछि। जतेक अरजल अछि से की बैसले रहत ? कतेक प्रकारें दिन दूना-रति चौगुन्ना बढ़िते रहत। अहाँ नहि रहबैक तैयो घटत थोड़बे !' हम एहि क्षण साहेबके बोल-भरोस देब' लागल रही। मुदा साहेब हँस' लगलाह। खूब जोरसँ हँस' लगलाह। हम बकर-बकर हुनकर मुँह देखि रहल छलहुँ।

ओ हँसैत कहलनि—'बिना बुद्धि लगौने जे रुपैया आओत तकर कोन मोल गोपाल ? बुद्धिक बलें जे रुपैया कमाइत छी तकर अजबे सुख छैक। नजायज लेल बड़ बुद्धि लगाब' पड़ैत छैक। बड़-बड़ योजना बनब' पड़ैत छैक। एहि सभ काजक सुख छिना जायत। एहि सुखक हिस्सक भ' गेल अछि। जेलमे से नहि हैत। जेलसँ से नहि हैत।' कहि क' साहेब चुप्प भ' गेलाह। हमरा साहेबक दु:ख देखल नहि भ' रहल छल। भरिसक एही क्षणक हमरो प्रतीक्षा रहए। हम अपनामे परिवर्तनक हिलकोर अनुभव कर' लगलहुँ। भरिसक सभ दिन तंग कयनिहार लाज हमर संग छोड़ि रहल छल। हम उत्साहित भ' गेलहुँ।

आस्तेसँ साहेबके कहलियनि 'सर ! हमरा अपन साझीदार बना लिय' अहाँ। हमहूँ अहाँक उद्योगमे शामिल होब' चाहैत छी। अहाँ जेलोमे रहब तैयो हम अहाँक उद्योग सम्हारने रहब। अहाँक बदला मे काज करैत रहब। जेलमे भेंट क' कए अहाँक मार्गदर्शन प्राप्त करैत रहब। अहाँक बुद्धिक ओहिना सदुपयोग होइत रहत। अहाँक सुख बनल रहत।'

हम आशा भरल दृष्टिसँ साहेबके देखि रहल छलहुँ।

मुदा साहेब हमरा एकदमे निराश क' देलनि 'नहि, नहि ! तोरासँ ई उद्योग नहि चलाओल होयतह। तोरामे ओकर योग्यता नहि छह। तोहर बुद्धि खाली ककरो प्रसन्न क' सकैत अछि। तों एक नीक गप्पी छह।मात्र एक नीक आ कुशल गप्पी। गप्पक बदौलत किओ हथउठाइमे किछु टाका तोरा द' सकैत छह। टाकाक उद्योग तों नहि चला सकैत छह। अधीनस्थ छह। अधीनस्थ बनल रह'। साझीदार बनवाक हिम्मति कोना भेलह ? जा, चल जाह एहिठामसँ।'

कहि क' साहेब लाल-लाल आँखिसँ हमरा देख' लगलाह। हम उठि क' विदा भ' गेल रही।

कोठलीसँ निकलबाक काल अपन चमड़ी छिलयबाक कोनोटा अनुभव हमरा नहि भ' रहल छल।



भोज

पापा आइ हमरा भोजमे नहि ल' गेलाह। पापा कहै छथि एखन अहाँ श्राद्धक भोज नहि खा सकैत छी। उपनयनक बाद एक बरख धरि लोक श्राद्धक भोज नहि खा सकैए। पापा पहिने कहैत छलाह जे उपनयनक बाद हम ब्राह्मण भ' जाएब। तखन लोक हमरा नोत देत। हम भोज खा सकब। भोजमे परसियो सकब।

ककाजीक भोजमे हमरा कियो परस' नहि देने रहए। ककाजी हमरा अपना लग बैसा क' खुआबैत छलाह। एक बेर जहिया हम पाँच बरखक रही, ककाजी संगे भोज खाइ लेल गेल रही। उत्तरबारि टोल। बुच्चुन ककाक घर लग। ककाजी कपड़ा खोलि क' बरण्डा पर बैसल रहथि। हमरा लोक सभ अंगनामे बैसा देने रहए। आर मारितेरास बच्चा सभ रहै। ककाजी सभकें बहुत रसगुल्ला भेलनि। हमरा सभकें खाली दूटा कए देलक। परस' बला सभ रसगुल्लासँ भरल बाल्टी ल' कए चारुमहर जाइ छल। घरमे, बरण्डा सभ पर परसै लेल। हमरा सभकें नहि दैत छल। दुरुक्खामे बैसल छोटका लोक सभकें सेहो नहि दैत छलैक। ओ सभ हल्ला कर' लागल। हमहूँ सभ हल्ला कर' लगलहुँ। हमरा सभकें आर रसगुल्ला दिअ'। आर लेब रसगुल्ला। मुदा परस' बला सभ नहि सुनलक। हमरा बड़ तामस भेल। हम उठिके ककाजी के कहै लेल गेलहुँ। ककाजी सभ रसगुल्ला खाइत छलाह। हम बरण्डा पर चढ़' लगलहुँ तँ लोक हमरा रोकि देलक। ककाजी लग नहि जाय देलक।

ककाजी देखि लेलनि। खाइते पुछलनि, 'की भेल विकास? भोज भ' गेलै? खूब भेलैक की नहि?'

'हम रसगुल्ला लेब। हमरा सभके दूइएटाके भेटल।' हम बरण्डाक नीच्चेसँ कहलियनि। ककाजी हँस' लगलाह। परस'बलाके कहलथिन। ओ दूटा रसगुल्ला हमर हाथमे द' देलक। हम बेरा-बेरी दूनू रसगुल्ला मुँहमे ल' लेलहुँ। भरि मुँह रस

भरि गेल।

ककाजी कत्ते नीक रहथि। गाम जाइ तँ खूब सनेश दैत छलाह। टौफी, बिस्कुट, भुज्जा, रामभोग, पेंड़ा। कहियो क विदेसरसँ रसगुल्ला सेहो अनैत छलाह। से जखन ककाजी मरि गेलाह तँ बड़का भोज भेलै। बड्ड लोक खेलकै। कत्ते लोक परसलकै। हमरा कियो घर आ बरण्डा पर परस' नहि देलक। हम बहुत कनलहुँ। पापा कनैत देखि लेलनि। कहलनि जे छोटका लोक सभ खाए लगतै तखन अहाँ परसब। एखन अहाँक उपनयन नहि भेलए। हम सोचलहुँ जे की परसी। जँ रसगुल्ला परस' लेल भेटि जइते तँ....। मुदा कियो रसगुल्ला परस' लेल नहि देलनि। सभ कहलनि जे आर. पैघ हैब तखन परसब। रसगुल्ला परस' लेल पैघ हेबाक कोन काज छै ? रसगुल्ला कोनो भारी तँ नहि होइ छै ? हम तँ रसगुल्ला उठा सकैत छी। हाथ छोट अछि तैं दूटा के अंटत। दूइएटाके तँ परसबोक छैक छोटका सभ के। तखन किएक ने परसि सकै छी। जखन काकी माँ कहथिन तखन परस' लेल भेटि सकैए। हम काकीमाँ के ताक लगलहुँ। छोटी बहिन के पुछलियनि। ओ कहलनि जे काकीमाँ भगवती घरमे छथि। हम भगवती घर गेलहुँ। काकीमाँ पटियापर बैसल छली। हमरा देखिके काकी माँ लगमे बैसा लेलनि। हम कहलियनि जे हम रसगुल्ला परसब। हमरा कियो परस' नहि दैए। काकीमाँ कहलनि जे एत्ते लोकमे अहाँके नहि परसल हैत। पीसिया आ बहीन सभ खाए लगतीह तँ अहीं परसि देबनि। हमरा खुशी भेल रहए। बहीन सभके चारिटा कए देबनि। दू बेर के दू-दू टा....। मुदा बहिन सभके खाइत-पीबैत बड़ अबेर भेलनि। ताबे हम सूति रहलहुँ।

बड़कीटा महल रहै। सोनाके पाया सभ छलै। खिड़की सभ पर मोटका मखमल के परदा रहै। कोठली सभ खूब पैघ छलै। बरण्डा पैघ-पैघ। मारितेरास लोक एम्हरसँ ओम्हर जाइत रहए। खूब सुगन्धि करै छलै। हम बरण्डा पर चढ़ि कए कोठलीमे गेलहुँ। कोठलीमे बहुत रास लोक बैसल छल। बड़का गलैंचा बिछाएल रहै। हम गलैंचा पर बाटे दोसर कोठलीमे गेलहुँ। ओहि कोठलीमे बड़का टटा बरतनमे मधुर सभ राखल रहै। किसिम-किसिमके मधुर। चानी के चमचम करैत तसलामे उज्जर-उज्जर पैघ-पैघ रसगुल्ला भरल छलै। के खेतै एत्ते रसगुल्ला ? हम चारुमहर तकलहुँ। कियो लोक नहि रहै। मोन भेल एकटा रसगुल्ला ल' ली। मुदा कहीं जादूबला रसगुल्ला नहि होइ। खाइते बिलाइ बनि जाइ। सुग्गा बनि जाइ। सुग्गा बनि जायब तँ माँ कोना चिन्हती? लोक कोना चिन्हत? नहि, हम बिना ककरोसँ पुछने रसगुल्ला नहि खायब। मुदा ककरा पुछियौक। कोठलीसँ निकलि क' बरण्डा पर अएलहुँ। ककाजी सनके एकटा लोक देखाइ देलक। एकदम्मे ककाजी सन। चमचमी बला कपड़ा पहिरने रहए। माथ पर बड़का मुरेठा रहै। मुदा एकदम गोर। उज्जर दपदप। ककाजी पिंडश्याम छलाह।

गोर कोना भ' गेलाह ? हो ने हो एहि देसमे आबि क' लोक गोर भ' जाइए। मुदा कोन देस छियै ई ? हम जोरसँ चिचिएलौं, 'कका......जी......क......का....जी....।' हमर नीन्न टूटि गेल।

'बिसनाइ छलैए छौंड़ा।' पीसीमाँ बजै छलीह। हम माँ लग सूतल रही। माँ हमर माथ हँसोथैत रहथि। बहीन सभके रसगुल्ला नहि परसि सकलहुँ। नीन्न भ' गेल। नीन्न नहि होइते तँ हमहूँ परसनिहार बनि जइतहुँ। परस' मे कत्ते मोन लगैत छै। आब जखन उपनयन भ' गेलए तँ हमहूँ परसि सकैत छी। ओझा मिसर सभके परसि देबनि। अज्जू कका कहैत छथि जे परसनिहार के बारिक कहै छै।

उपनयन भेलाक बाद हमहूँ बारिक भ' गेलहुँ। चुन्नूक मूड़नमे हम सभके आलू तरल परसने रही पहले-पहिल। धोती पहिरक'। बेर-बेर ढेका खुजि जाइत छल। धोती नहि सम्हरैए हमरा। ई धोती पहिरिके किए परसए पड़ैत छै ? पैंट पहिरि किएक नहि परसि सकै छी। भैया कहैत छथि जे ब्राह्मणके ड्रेस धोती छियैक। मुदा लोक सभ भोजेमे किए ब्राह्मण बनैए। हरदम किएक ने धोती पहिरैए। पापा हरदम फूलपैंट किए पहिरने रहैत छथि। भोज मे धोती पहिरि लैत छथि। नेता सभ सेहो धोती पहिरैए। उज्जर दपदप धोती। कत्ते नीक लगै छै। मुदा हमरा तँ एखन धोती सम्हरिते नहि अछि। पैघ हैब तँ हम हरदम धोतिए पहिरब। उज्जर दपदप। इस्त्री कएल। धोती पहिरिके भोज खाइमे बड़ सुविधा होइ छै। फूलपैंट पहिरिके पीढ़ी पर नहि बैसल होइ छै। भोज लेल धोती एकदम फीट छै। बड़का भैया कहैत छथि।

मुदा ई भोज तँ छुटि गेल। श्राद्धक भोज किए एक बरख धरि नहि खा सकैए लोक। की भ' जेतै। कत्ते रास भोज छुटि जाएत। कहुना एकोटा श्राद्धबला भोज नहि होइ। बियाह, मूड़न, उपनयनक भोज तँ खा सकैत छी। खूब बियाह, मूड़न होइतै कहुना। खूब भोज खइतहुँ। रसगुल्ला दसटा तक खा सकैत छी। पन्द्रहो धरि जोर लगा क' पहुँचि जायत। बड़का भैया तँ सबा सए तक खा लैत छथीन। हुनका जांघमे खोली छनि। हुनकर बएसके हैब तँ हमरो खोली भ' जायत। हमहूँ सबा सए तक खा लेब। पापा पहिने डेढ़ सए तक खा लैत रहथिन। मुदा आब तँ एकोटा नहि खाइ छथि। चीनी के बिमारी भ' गेल छनि। चाहो बिना चीनी के पीयैत छथि। पहिने डेढ़ सेर माँस खा जाइत छलथिन। आब नहि पचै छनि। मुदा खुआबैमे बड़ मोन लगै छनि। हमर उपनयनमे पाँचटा खस्सी कटल रहैक। अछिनरे खेलकै लोक। जुऐल खस्सी रहैक। खूब आग्रह क' कए पापा सभके खुऔलथिन। मिसरके मोन खराब भ' गेल रहनि। डाक्टरसँ दबाइ करब' पड़लनि। लोक सभ रसगुल्ला गाड़ि-गाड़ि के खेलकै। समूचा पात पर रसे रस बह' लागल रहैक। ईह, भोजो जे होइ छै। पापाके भोज करैमे बड़ मोन लगै छनि। आब भोज खायल नहि होइ छनि। कहुना के किछु खा लैत छथिन। डेरामे तँ दूटा सोहारी आ

बिना मसल्ला के तरकारी खाइ छथीन। मुदा भोज खाइ लेल जाय पड़ैत छनि। आब हमहूँ ब्राह्मण भ' गेलहुँ तँ नोत पड़त। पापा कहैत छलाह जे, 'आब अहीं सभ जायब भोज खाइ लेल। अहीं सभक भोज खा लेलासँ हमरो मोजर भ' जायत।' ओ हमरा सभके नोत खाइ लेल पठा के अपने घर पर उसनल तरकारी खेथीन। उसनल तरकारी खेलासँ दुखीत नहि पड़ैत छथि पापा। आब हमर उपनयन भ' गेल तँ पापा दुखीत नहि पड़ताह। भोज खा क' दबाइ नहि खाए पड़तनि। मुदा आइ तँ जाइए पड़लनि श्राद्धक भोज खाइ लेल। हमरा नहि ल' गेलाह।

हम तँ पाँचे मासक ब्राह्मण छी। पापा तँ तीस बरखसँ ब्राह्मण भेल छथि। पापाके भोजसँ पहिने आ भोजक बाद दबाइ खाए पड़ैत छनि। अलबत्त छै दबाइ। भोजसँ पहिने खा लेला पर किछु खा लिअ', कतबो खा लिअ' सभके पचा देत। ओहि दबाइ के नाम हमरा बूझल अछि पापा कहने छथि हमारा। अहाँ के बूझल अछि? नहि बुझल अछि तँ अपन पापासँ पूछि लिअ'। हम नहि कहब। हम किन्हहुँ नहि कहब। हम किए कहू ? हमरा तँ बरख पूरैमे साते मास रहि गेलए। तकरबाद एक बरखक ब्राह्मण भ' जाएब हमहूँ। तखन हम श्राद्धक भोज खा सकैत छी......।



खुशीक प्रश्न

हमरा घरमे सभ लोक बड़ चिचिआइत अछि। कोनो बातपर जोर-जोर सँ बाज' लगैत अछि। एते जोरसँ किए बजैए लोक ? की कम जोरसँ बात नहि भ' सकैत छैक ? भैयाके गेन लेल पुछबनि तँ बड़ी जोरसँ कहताह, 'हमरा नहि बूझल अछि। ताकि लिअ' अपनेसँ। माँ के भूख लगलापर खाइ लेल मँगबनि तँ जोर सँ चिचिया उठतीह, 'हरदम अहाँके भूखे लागल रहैत अछि।' पापाके होम टास्कक कॉपी लेल पाइ मँगबनि तँ दू दिन अनठा देताह। तेसर दिन आँखि गुड़ारि क' हमरा दिस तकताह आ बिगड़ए लगताह। 'बड्ड कॉपी खर्च करै छी अहाँ। सादा पन्ना फाड़ि क' नाव बना लेने हैब। छने-छने कॉपी किनए लेल एतेक पाइ कत'सँ आओत ?' कॉपीक चर्चा पाँच दिन लेल बन्द भ' जाएत। फेर कोनो रविके पापा अपनहि पुछताह, 'टास्क बनौलहुँ कि नहि ? हरदम खाली खेलेमे लागल रहैत छी अहाँ। पढ़ाइ-लिखाइ किछु नहि।' हम कॉपी द' कहबनि तँ गुम्हरि उठताह। मुदा साँझमे आबि जाएत कॉपी। एहि बीच स्कूलमे सेहो मिस जोर-जोरसँ बिगड़तीह। बेंच पर ठाढ़ रखतीह। कान पकड़ि क' ऐंठि देतीह। हम की करु ? अपने कॉपी तँ बनि नहि जा सकैत छी। पाइ हमरा लग तँ रहै नहि अछि। हमरा लग जँ पाइ रहितय ? दू दर्जन कॉपी एक्के बेर कीनि क' राखि लितहुँ। होम टास्क बनबैत रहितहुँ। सधबे नहि करैत। मुदा से कहाँ भ' पबैए।

एक बेर पाइ जमा करब शुरु केने रही। माटिक गुल्लकमे। पापा आ माँ सेहो छुट्टा पाइ दिअ' लागल रहथि गुल्लकमे खसब' लेल। कहियो-कहियो तँ तीन टा चौअन्नी आ दू-दू टा अठन्नी एके दिनमे खसा दियैक। गुल्लक भर' लागल। झनझन बाजए। आधासँ उपर भरि गेल रहए। हिसाब लगाबी तँ हुअए जे पचास सँ बेसी रुपैया भ' गेल हैत। सोच' लगलहुँ जे एहि पाइसँ की कीनब ? भैया कहथि जे क्रिकेट खेलाइ लेल बैट कीनि लिअ'। छोटका बैट भ' जाएत। हमरा

हुअए जे कैरम कीनितहुँ। नहि तँ बैंजो कीनि लितहुँ। नहि तँ नीकहा माउथ आर्गन। माउथ आर्गन बजबैमे बड़ नीक लगै छैक। बैट-तैट तँ छौंड़ा सभ तोड़िए देत। मुदा कहाँ कीनि सकलहुँ किच्छो।

एक दिन माँ गुल्लक फोड़ि क' सभटा पाइ ल' लेलनि। कहलनि जे तरकारी लेल पाइ नहि अछि। गामसँ छोटका कक्का आएल रहथिन। हमरा बड़ दुःख भेल। माँ कहलनि जे फेरसँ पाइ देब जमा कर' लेल। मुदा हमरा एक्कोरत्ती मोन नहि भेल। जमा क' क' की करब ? फेर ल' लेतीह। कोनो काज लेल। ठकि देतीह। 'सभटा पाइ जोड़ि क' द' देब।' कहियो नहि देतीह। साठि रुपैयासँ उपर रहए। माछ आ तरकारीमे सभटा चल गेल। माँकि कहलियनि तँ कहलनि जे अहूँ माछ खेलहुँ ने। एहिसँ बरु माछ नहिएँ खइतहुँ। माछ खेलासँ की भेल ? कनिएँ स्वाद लागल। सेहो थोड़वे काल। फेर सभ खतम।

हम घर मे सभ सँ छोट छी। नौ बरख सँ उपर आब बएस भ' गेल अछि। भैयाक बाद पिंकी आ तकरबाद हम सीतेश। घरमे माँ हरदम दुखीत रहैत छथि। पेटक बीमारी छनि हुनका। दबाइ खाइ छथि मुदा फायदा नहि होइत छनि। बहुत दुब्बर छथि। भरि दिन सभटा काज करैत रहैत छथि। घरके सभटा काज। भिनसर हमरा सभके स्कूल पठेबासँ ल' क' हमरा सभहक कपड़ा खिचबा धरि परेशान रहैत छथि। भानस-भात केनाइ, थारी-बाटी-बर्त्तन मँजनाइ, झारु-बहारु केनाइ, सभहक कपड़ा धोनाइ, सभके खुऔनाइ-पिऔनाइ, चाह-जलखै देनाइ। बाप रे ! कत्ते काज। तै पर सँ हमरा सभहक से चिन्ता लागल रहैत छनि हरदम। बजैत रहैत छथि। कहैत रहैत छथि.....

—पढ़ै किए ने छी।

—दूर खेलाइ लेल नहि जाउ।

—रौदमे जुनि खेलाउ।

—भैया संग झगड़ा नहि करु।

—पिंकी के नहि खिसियबियौ।

—ककरोसँ झगड़ा नहि करु।

—ओ गन्दा लड़का अछि, ओकरा संग नहि खेलाउ।

—ककरासँ गारि सीखै छी अहाँ ? ई गारि के सिखा देलक ?

—गारि सिखनाइ खराब बात छी।

—खुल्ले देहे नहि रहू। कपड़ा पहीरि लिअ'।

—चप्पल पहीरि क' बाहर जाउ।

—ढकर-ढकर पानि जुनि पीबू।

—कतहुसँ आबी तँ पैर धो लिअ'।

—एत्ते टी० भी० नहि देखू।

बाप रे कत्ते चिन्ता ? ताहिपरसँ पापा संग झगड़ा। रुसा-फुल्ली।

—भरि दिन घरमे मरैत रहैत छी कियो देखनिहार नहि।

सभटा सख छुटि गेल।

गीत-नाद छुटि गेल।

पहिरब-ओढ़ब छुटि गेल।

बूलब-टहलब छुटि गेल।

अपने खाली दिल्ली-कलकत्ता करैत रहू।

हमसभ घरमे सड़ैत रही।

हरदम चक्कर दैत रहैत अछि माथमे।

किछु खाएल-पीयल नहि होइए।

ताहिपरसँ एत्ते काज।

कियो मदति कर' बला नहि।

कियो एक्कोटा खढ़क दुख नहि देत....।

पापाक भनभनी...। तामस।

—किए एत्ते काज करैत छी ? जुनि करू। छोड़ि दिऔ सभटा। हमरा सभके किए ने थार-बाटी धोअक लेल दैत छी।

सभ अपन-अपन थारी-बाटी धोअए। कपड़ा खिचए।

अपन-अपन काज सभ अपने करए।

दवाइसँ खाली फयदा थोड़े होइ छै।

आराम आ संयमसँ फयदा होइ छै।

नियम-निष्ठासँ होइ छै।

भुखले पेटे दू बजे धरि चाहपर रहब तँ कोन बीमारी ठीक हैत। खाली चाह......चाहपर चाह.......।

कहियो ठीक नहि भ' सकै छी अहाँ।

सभ दिन अहिना झखैत रहब।

हमरा पेड़ैत रहब....।

तकर बाद माँक कननाइ शुरु भ' जाइत छनि। गेरुआपर पड़ल-पड़ल हिचुकैत रहैत छथि। पापा बगलमे पड़ल रहैत छथिन। करौटपर करौट फेरैत रहैत छथिन। फेर उठि क' बाहर चलि दैत छथि। दू-तीन घंटाक बाद फेर घुरि क' घर अबैत छथि।

भैया हमर स्कूलमे चुप्प रहैत छथि। आनठाम जेताह तँ चुप्प बैसल रहताह। आब कतहु आनठाम जाइयोमे मोन नहि लगैत छनि। चौदह बरखक भ' गेलाह। असगर कतहु नहि जाइ छथि। नाटक-तमाशा देखैमे मोन नहि लगैत छनि। भोज-भात मे जेबाक इच्छा नहि होइ छनि। खाली डेरापर रहबाक मोन करै छनि। हमरा खाली बिगड़ैत रहताह। बात-बात पर चिचिआइत रहताह। माँके सेहो बिगड़ि दैत छथिन। खिसिया दैत छथिन। केवल हुनका क्रिकेट खेलाइमे, खेल समाचारमे आ सिनेमा देखैमे मोन लगैत छनि। सिनेमाक गप्प करैमे सेहो मोन लगैत छनि। हीरो-हीरोइनक गप्प करैमे बड़ मोन लगैत छनि। सुनील सेट्टी हुनका पसिन्द छनि। रबीना टंडन सेहो बड़ पसिन्द छनि।

क्रिकेट खेलाइमे सेहो बड़ चिचिआइ छथि भैया। सभ संगी हुनकर चिचिएनाइसँ डेराएल रहैए। भैयाक धाख छनि सभपर। कैप्टन छथि ओ। मुदा पापासँ बड़ डेराइ छथि। पापाक सोझांमे एकदम चुपचाप रहैत छथि। एकदम संच-मंच। पापा भेयो सँ बेसी जोरसँ चिचिआइ छथि।

पिंकीक एकटा पैर खराब छनि। दुइए बरखक रहथि तँ लकबा मारि देलकनि। बैसाखी ल' क' चलैत छथि। हम पिंकी कहि दैत छियनि तँ हुनको क्रोध होइ छनि। मुदा दीदी कहलापर बड़ प्रसन्न। पापा के पिंकीक इलाज पर बड़ खर्च होइ छनि। कैक बेर दिल्ली आ जयपुर जा चुकलाह अछि। मुदा पिंकीक पैर ठीक नहि भ' रहल छनि। पिंकीक बएस आब बारह बरखक भ' गेलनि। पापा कहैत छथि जे एक दिन अवश्य पिंकीक पैर ठीक भ' जेतनि आ ओ अपने पैरे चल' लगतीह। अपने पैरे पिंकी सासुर जेतीह। मुदा जँ नहि ठीक भेलनि तँ ? कोना बियाह हेतनि पिंकीक ? के बियाह करतनि ? नाङरि पिंकीसँ के बियाह करतनि? नहि पिंकीक पैर ठीक भ' जेतनि। ओ चल' लगतीह अपने पैरे। सासुर जेतीह पिंकी.......!

पापा हमर नोकरी करैत छथि। सरकारी नौकरी। अफसर छथि। मुदा कलक्टरसँ पैघ नहि छथि। छोट छथि। कलक्टर आ एस० पी० हुनकासँ पैघ छनि। बेगूसराएमे रहथि तँ आफिसक गाड़ी रहनि। हमहूँ सभ कहियो काल क' घूमी। मुदा पटनामे गाड़ी नहि छनि। टेम्पोसँ आफिस जाइत छथि। आफिसक

काजसँ मोन हरदम भारी रहैत छनि। कहैत छथि जे टेंशन भ' जाइए। नोकरी नीक नहि लगै छनि पापाके। मुदा कहैत छथि जे नोकरी केनाइ जरुरी अछि। बिना नोकरी केने गुजर कोना चलतै ? हम सभ पढ़ि-लीखि कोना सकब ? पिंकीक बियाह आ इलाज कोना हेतैक ? रुपया बड़ी जरुरी चीज छै। से नोकरीसँ अबैत छै। मुदा एहि नोकरीक पाछू बड़ बेहाल रहैत छथि पापा। राति क' देरीसँ अबैत छथि। डेरोपर फाइल लिखै छथि। कविता सेहो लिखै छथि हमर पापा। कवि छथि। कत्ते पत्रिकामे निकलल छनि कविता। हुनकर संगी सभ सेहो कविता लिखै छथिन। मुदा हुनका संग काज नहि करैत छथिन। सभ हमर डेरामे आबि क' कविता सुनबै छथि। पापा सेहो हुनका सभके कविता सुनबै छथिन। खूब हँसी-ठहक्का होइ छै। कत्ते नीक होइ छै कविता। हमरो मोन होइए जे कविता लिखितहुँ। एकटा लिखनहुँ रही। वियोगी ककाके नीक लागल रहनि। नारायणजी ककाके सेहो खूब पसिन्न पड़लनि। अहूँके नीक लागत.....!

हे हमर पुरुख,

अकासमे नहि उड़ू।

घरमे रहू।

खाउ-पीबू

टी० भी देखू।

मुदा पापा खाली हँसि देने रहथि। किछु नहि कहलनि। हुनका पसिन्न नहि पड़लनि हमर कविता लिखनाइ। कहलनि जे एखन पढ़ू-लीखू। कविता जुनि बनाउ। अनेरे मारिते रास पन्ना खराब करैत छी। नाव सेहो नहि बना सकैत छी कागजक। ने कागजपर कविता लीखि सकैत छी। खाली कागजपर होम टास्क बनाउ। कॉपी-कागज बड़ महग छैक। कागज दूरि नहि करबाक चाही। बड़ क्रोध होइ छनि पापाके। कोनो बातपर बिगड़ि जाइ छथिन। माँपर, हमरापर, भैयापर.....। क्रोधमे आँखि लाल भ' जाइत छनि। देह थर-थर काँप' लगैत छनि। सभ डरें सकदम भ' जाइए। माँ कहैत छथि जे ब्लडप्रेसर छनि हुनका। जखन ब्लडप्रेसर बढ़ि जाइ छनि तँ चिकड़ए लगैत छथिन। माँ एकदम चुप्प भ' जाइत छथि। कहीं आर क्रोध ने बढ़ि जाइन। ब्लडप्रेसर खराब बीमारी होइ छैक। क्रोध मे एहेन आदमी मरियो सकैत अछि। कहीं एक दिन क्रोध मे मरियो नहि जाथि...। नहि, हमर पापा नहि मरताह। ओ नहि मरि सकैत छथि। मुदा हुनका एत्ते क्रोध किए होइ छनि? माँ के किए क्रोध होइ छनि? भैयाके किए क्रोध होइ छनि?

—माँ, अहाँ सभके एत्ते क्रोध किए होइए ?

—अहाँ नहि बुझबै। अहाँ एखन बच्चा छी।

—हम बच्चा नहि छी। अहाँ कहू।

—अहाँ जिद्दी बच्चा छी।

—नहि, हम जिद्दी बच्चा नहि छी। अहाँ कहू।

—बहुत बेकूफ भ' गेलहुँ अछि अहाँ। गलीक अबारा छौड़ा सभहक संग रहि क' खराब भ' रहल छी।

—हँ, हँ, हम खराब भ' रहल छी। अहाँ कहू।

—अही दुआरे हमरा सभके क्रोध होइए जे अहाँ सभ खराब भ' रहल छी। अहाँ सभ पढ़े-लिखै नहि छी। हरदम खेलाइत रहैत छी। खाली कागज दूरि करैत रहैत छी। बेकूफ जकाँ बात करै छी। प्रश्न पुछै छी। एकदम जिद्दी भेल जा रहल छी।

माँके फेर क्रोध भ' आएल रहनि। जोर-जोरसँ बाज' लगलीह। माँ बिगड़ए लगलीह। पापा सेहो खिसिआए लगलाह। भैया कनडेरिये देखैत मुसकिआइत रहलाह। जेना कहैत होथि—बूझू आब। बड़ माँ-पापासँ गप्प कर' बला भेलाहे। प्रश्न पूछ' बला भेलाहे....। पूछि लिअ' प्रश्न...।

अहीं सँ पूछै छी। की हम प्रश्न नहि पूछि सकैत छी ? नहि पूछि सकैत छी तँ फेर हम की क' सकैत छी ?



तानपूरा

विनोद बाबू सरकारी लोक छथि। सरकारी अधिकारी। वित्त अंकेक्षक। काज मे काज छनि सरकारी आफिस सभक आडिट केनाइ। खर्चा आ आमदनीक हिसाब-किताब देखनाइ। नियम-कानूनक आधार पर ओकर जाँच करब। एहि लेल कार्यक्रमक अनुसार विभिन्न सरकारी कार्यालय जाय पड़ैत छनि। बस-ट्रेन सँ यात्रा कर' पड़ैत छनि। विभिन्न स्थान पर ठहर' पड़ैत छनि। अकच्छ भ' जाइत छथि। अकच्छ ओ अपन काजो सँ छथि। एक त' ई काज हुनका बोर टाइप के काज बुझाइत छनि। दोसर, एहि मे झंझटि सेहो लगैत छनि। आडिट सँ ल' कए यात्रा धरि मे ओ झंझटिये-झंझटि देखैत छथि। तनाव आ दुश्चिन्ता हुनका हरदम परेशान केने रहैत छनि। असल मे विनोद बाबू कोनो झंझटि मे कहियो-कखनो नहि पड़' चाहैत छथि। झंझटि सँ छीह कटैत रहैत छथि। जेना अपन स्वभाव सँ लाचार भ' गेल छथि ओ। मुदा झंझटि के एहि सँ की लेना-देना छैक। ओहो अपन स्वभाव सँ लाचार अछि। ई झंझटि विनोद बाबूके कत्तह-कोनोठाम उपस्थित भ' जाइत छनि। कोनो रुप मे उपस्थित भ' जाइत छनि। अपन मुख्य कार्यालय मे जत' आडिट करैत रहैत छथि, आडिटक दरमियान जत' ठहरल रहैत छथि। बस मे, ट्रेन मे, टीशन पर, बस स्टैंड पर, सड़क पर आ घर मे त' सहजहिं। घरक झंझटि हुनका लेल जनमारा भ' जाइत अछि। सभठाम सँ थाकि-हारि जखन घर अबैत छथि त' चाहैत छथि जे कने आराम हुअए। अबितहि पैंट-शर्ट खोलि लुंगी पहीरि पड़ि रहैत छथि। डेरा पहुँचला पर जँ हुनका पैंट-शर्ट खोलैत देखब त' हुनकर स्वभाव छने मे बूझि जायब। पैंट-शर्टक बटन सभ ओहिकालमे हुनकर बड़का शत्रु भ' जाइत अछि। तैं अक्सर अहीकाल मे हुनकर कपड़ाक बटन सभ टुटैत छनि। बटन सभ के धराशायी करबाक विजय-बोध मुदा बेसीकाल रहि नहि पबैए। पत्नीक तामस सदेह उपस्थित भ' जाइत अछि आ एहि प्रकारे पुन: एक नव झंझटि बजरि जाइए।

—आहि रे बा, फेर आइ बटन तोड़ि देलियै ?

—तोरबै नहि त' की। अकच्छ केने रहैत अछि। जल्दी खुजिते नहि रहैए।

—त' एहि मे बटन के दोष छै ?

—बटन के दोष छै नहि त' की हमर दोष अछि ? अहाँ त' सदिखन हमरे दोष देब।

—अहाँक दोष नहि अछि त' ककर दोष छै ? एतेक खीचि-तीड़ि क' कतहु बटन खोलल जाय। सभटा तामस ओकरे पर झाड़ि दैत छियैक।

—हमर तामस सँ अहाँके की लेना-देना अछि ?

—की लेना-देना अछि ? बटन हमरे लगब' पड़ैत अछि ने। कहियो अपने लगबैत छी अहाँ ? एक दिन लगा क' देखियौक ने त' बुझबै।

—की बुझबै ? हमरा बुते लगौल नहि हैत की ? हमरा अहाँ एतेक अपटु बुझैत छी ?

—आब हम से कोना कहू ? बटन लगाइयो लेब त' सौंसे आंगुर सुइ भोंकि लेब।

—एहि मे अहाँके की हैत ? हमरे कष्ट हैत ने ? हमर कष्ट त' अहाँके नीके लगैत अछि।

विनोद बाबू आ हुनक पत्नी मायाक एहितरहक वार्त्तालाप घर मे बेसीकाल सुनल जा सकैत अछि। एहन गप्प-सप्प होइते रहैत अछि। एही क्रम मे मायाक मोन कहियो फाटि जाइत छनि त' कहियो विनोद बाबूक दिमाग सुन्न भ' जाइत छनि। दूनूक बीच मुहाबज्जी बन्द भ' जेबाक प्रबल सम्भावना सेहो उपस्थित होइत रहैत छनि। बन्दी आ हड़तालक अवधि एक घंटा सँ ल' कए चारि दिन धरि एखन तक रहल अछि। कोनो ने कोनो प्रकारें फेर समझौता भइए जाइत अछि। आब ई समझौता जेना हुअए। जत्ते काल टिकय। एहि पूरा प्रकरण मे सभ सँ बेसी कठिन समय विनोद बाबूक लेल तखन होइत छनि जखन माया कान' लगैत छथिन। मायाक कननाइ हुनका सभ दिन बरदास्त सँ बाहर बुझाइत छनि। हुनका लाग' लगैत छनि जेना बीच बाजार मे कियो हुनकर इज्जति उतारि रहल होनि। ओ बेइज्जत भ' रहल होथि। अपन इज्जत नुका क' रखबाक चक्कर मे ओ बहुधा बेइज्जत होइत रहैत छथि। हुनकर धर्मपत्नी माया नोर चुबबैत रहैत छथिन। मायाक नोर तेजाब सन हुनकर देह-मोन के गलबैत रहैए। तेहन स्थिति उत्पन्न नहि हुअ' देबाक चक्कर मे सेहो ओ विखिन्न रहैत छथि। तैं झंझटि के कतियबैत रहैत छथि। टारैत रहैत छथि। आर बेशी लाचार होइत रहैत छथि।

आइ मुदा घर पहुँचला पर हुनकर मोन प्रसन्न रहनि। पुरैनियाँ सँ आडिट क' कए घुरल रहथि। ट्रांसपोर्ट आफिसक आडिट रहैक। बेस स्वागत-सत्कार भेल रहनि पाँच दिन धरि। भोजन-साजन। बर-विदाइ। डेरा धरि विभागीय गाड़ी सँ पहुँचा देने रहनि। आनन्द मे छलाह। कोनो पुरनका गीतक भास गुनगुनाइत घर मे प्रवेश केलनि त' माया ड्राइंगरुम मे बैसल छलथिन। पति के देखि अकचकेली ओ। एहि दुआरे नहि जे अकस्मात् आबि गेल छलथिन। एहि दुआरे जे ओ गुनगुना रहल छलाह। ओ गुनगुना रहल छलाह ओहि गीतक भास जे बियाहक बाद सभ सँ पहिने माया के सुनौने रहथिन। 'बनके चकोरी गोरी झूम-झूम नाचो री।' माया के धक्क सँ मोन पड़ि जाइत छनि। माया के मुसकुराइत तकैत छथि। मुदा माया पर एकर कोनो असरि नहि होइत छनि। हुनकर मोन के आइ दोसरे चिन्ता घेरने छनि। पन्द्रह वर्षक बेटाक चेहरा बेर-बेर मोन पड़ि अबैत छनि। तैं ओ गम्भीर बनल रहैत छथि। मुदा विनोद बाबू त' आइ मस्त छलाह।

—श्रीमती जी, अहाँके मोन अछि ओ गीत जे हम पहिल बेर अहाँके सुनौने रही। आह, की गीत छै ? आ हे, ओ गीत जखन हम सुनबैत रही तखन जे अहाँ नीचा ताकि क' हँसी से जे सुन्दर लगैत छल।' विनोद बाबू आबेस सँ माया के देखि रहल छलाह। मुदा माया किछु नहि बजलीह। ओहिना गम्भीर भेल बैसल रहलीह। विनोद बाबू के कोनादन लगलनि। आइ ओ प्रसन्न छलाह। ई अवसर कहियो काल अबैत छलैक जखन ओ एतेक प्रसन्न होथि। अपन प्रसन्नता मे ओ पत्नीक सहभागिता चाहैत छलाह। मुदा जखन ओ सम्मिलित नहि भेलथिन त' हुनकर मोन लोहछि गेलनि।

—की बात छै ? किए आइ घुघना लटकौने बैसल छी ? कने हँसब-बाजब से नहि ?

—हँसब-बाजब हमर करम मे रहय तखन ने। कखनो अहाँ हँसी छीनि लैत छी, कखनो बेटा छीनि लैत अछि। सेहो सभटा अहीं दुआरे।

—से की ? हमरा दुआरे की ? की कहै छल गौतम ? विनोद बाबू गम्भीर हुअ' लागल छलाह।

—कहै छल जे पापा के पाँच मास सँ कहि रहल छियनि जे हम संगीत सीख' चाहैत छी, मुदा ओ ध्याने नहि दैत छथि। ताहि पर हम कहलियैक जे पढ़ाइ-लिखाइ करबह से नहि। ई संगीत सिखबाक कोन धुनि सवार भ' गेल छह। एहि बात पर तमसा क' की-की ने कहलक। कहै छल जे पापा बेर-बेर ठकि दैत छथि। हमरा बड़ क्रोध भेल। आइ दू थापड़ मारबो केलियैक अछि बहुत दिन पर।

विनोद बाबू आब गम्भीर भ' गेलाह। गौतमक संगीत सीखबाक जिद्द हुनका पसिन्न नहि छलनि। ओना ई फराक बात जे ओ अपनहु कहियो संगीत सिखबाक कोशिश केने छलाह। किछु दिन सिखनहु छलाह। मुदा अन्त मे छोड़ि देने रहथि।

X X X

तहिया विनोद बाबूक पिता जूट मिल मे काज करैत छलथिन। मिलेक एकटा क्वार्टर मे हुनकर डेरा रहनि। जूट मिलक ई नोकरी हुनका तीन-चारि टा काज-धंधाक बाद भेटल छलनि। एकटा मारवाड़ी सेठक ओहिठाम नोकरी केने रहथि। बच्चा सभ के पढ़ाबथि। एक दिन सेठानी बाजार सँ तरकारी आनि देबाक लेल कहलकनि त' ट्यूशन छोड़ि देलनि। कोनो बाबूसाहेबक ओहिठाम सेहो खेती-बारीक व्यवस्था देखबाक लेल नियुक्त भेल छलाह, मुदा एक दिन बाबू साहेब कोनो बात पर बिगड़ि क' पजेबाक एकटा खण्ड उठा क' फेकलथिन त' नोकरी के लात मारि चल अएलाह। किछु दिन गाम पर खेती-बारी केलनि। संयुक्त परिवार रहनि। चारि भाइक भैयारी। खूब मेहनति करथि। मेहनतिक बल पर अन्न उपज' लगलनि। एतेक धान हुअ' लगलनि जे बखारी बान्ह' पड़लनि। परिवारिक स्थितिपात नीक भेलनि। जाहि परिवार के बेसाह पर गुजर चलैत छलैक से भरि वर्ष अपन खेत के अन्न खा जीब' लागल। मुदा ई स्थिति बेसी दिन नहि रहि सकलनि। भैयारी मे भिन्न-भिनाउज भ' गेलनि। खेत जमीन बँटाएल त' हुनकर मोन टूटि गेलनि। बँटाएल जमीन पर गुजरो सम्भव नहि छलनि। गाम छोड़ि पुन: शहर अएलाह। जूट मिल मे नोकरी शुरु केलनि। मिडिल पास रहथि। अंग्रेजी आ हिसाबक नीक ज्ञान रहनि। मेहनतिक बल पर लेखा-शाखा मे किरानी भ' गेल रहथि। बहुत खट' पड़नि। मुदा लेखा पदाधिकारी के कहियो कोनो शिकाइतक मौका नहि देलथिन।

मिल कालोनीक बगले मे एकटा भव्य राधाकृष्णक मन्दिर रहैक। दरभंगा राजक रानी लक्ष्मीवती बनबौने रहथिन। ओहि मन्दिर पर झूलन मे खूब गीत-नाद होइ। राशि-राशि के गबैया सभ जुटय। राति भरि पकिया गाना सँ ल' कए लोकगीत धरि श्रोताक मोन के झुमा दिअए। जूट मिलक कर्मचारी, मजदूर ओहि श्रोतामण्डली मे बेसी संख्या मे रहैत छल। विनोद बाबू बारह-तेरह वर्षक रहथि। हुनका भेल रहनि जे गबैया बनितहुँ। पिता के कहलथिन,

—बाबूजी, हम गबैया बन' चाहैत छी।' पिता कनेकाल चुप्प भ' गेल छलथिन। ई हुनकर आदति छलनि। कोनो बात आ प्रस्ताव पर ओ तुरंत सहमति-असहमति व्यक्त नहि करैत छलाह। कनेकालक बाद बजलाह—अहाँके गीत गाब' अबैत अछि ?

—हँ, सुना दी ? विनोद उत्फुल्ल भेल रहथि।

—सुनाउ।' पिता कहलथिन। विनोद एकटा गबैया द्वारा गाओल जे गीत हुनका मोन छलनि सुनाब' लगलाह'

गौरा तोर अंगना

बड़ अजगुत देखल तोर अंगना

गौरा तोर अंगना।

खेती ने पथारी शिव के गुजर कोना ?

जगतक दानी थिका, तीन भुवना

गौरा तोरा अंगना।।

पिता के गीत सुनि हँसी लगलनि। मुदा भेलनि कि कण्ठ नीक छनि विनोदक। ओ कहलथिन जे 'ठीक छै। व्यवस्था करैत छी।' विनोद प्रसन्न भ' गेल छलाह। पिता अपन पत्नी सँ विचार केलनि। पत्नी कहलथिन जे 'गबैया बनबाक मोन होइत छैक त' एहि मे की क्षति छैक। हमर मामो त' गबैया छथि।' पिता विचार केलनि जे गबैया नहियो बनत तैयो संगीत त' किछु सीखिए लेत। एहि मे कोन बेजाए छैक ? जीवन लेल संगीत त' जरुरी छैके। संगीत जीवन के उस्सठ नहि हुअ' दैत छैक। ओ विनोद के संगीत सिखेबाक लेल एक गुरुक खोज मे लागि गेलाह। लोक सभ सँ पुछलथिन। पता चललनि जे बंगाली टोला मे एकटा किओ घोषबाबू छथि। ओ बच्चा सभ के संगीत सिखबैत छथिन। स्थानीय स्कूल मे संगीतक टीचर छथि। घोषबाबू सँ सम्पर्क केलनि। ओ बेस आदर सँ स्वागत केलथिन। कहलथिन जे हम साँझ मे दू घंटा सिखबैत छियैक। मास मे बीस टाका फी बच्चा लैत छियैक। विनोदक पिता असमंजस मे पड़लाह। बीस टाका हुनका लेल छोट राशि नहि छलनि। काटि खोंटि के कुल्लम एक सए सत्तरि टाका भेटैत छलनि दरमाहा। ताहि मे पाँच व्यक्तिक परिवार। दू बेटा, एक बेटी। जेठका बेटा दसमा मे पढ़ैत छलनि। ओहि सँ छोट विनोद सतमा मे आ बेटी दूसरा मे। सभक खर्चा-बर्चाक अतिरिक्त गाम पर रहैत माए के सेहो तीन मासक खर्चा दिअए पड़नि हुनका। चारु भैयारी मे तीन-तीन मासक पार रहनि। हुनका विनोद के संगीत सिखाएब कने कठिन बुझेलनि। ताहि पर सँ एखन हारमोनियमक व्यवस्था सेहो कर' पड़तनि। मुदा मास मे बीस टाकाक अतिरिक्त व्यवस्था अथवा नियमित खर्चा में कटौती त' हुनका करहि पड़तनि। ओ ओभरटाइम करबाक मादे सोचलनि। अपन पान खायब बन्द करबाक मादे सोचलनि। सोचलनि जे तमाकू पर काज चला लेताह। आ ओ निश्चय क' लेलनि। घोष बाबू के कहि देलथिन जे अगिला माससँ विनोद संगीत सीखत अहाँ सँ। आब हारमोनियमक समस्या रहनि। घोष बाबूक ओहिठाम सिखबाक लेल त' हारमोनियम रहैक। मुदा घरो पर रियाज आवश्यक छलैक। तैं एकटा अपन हारमोनियम एकदम्मे जरुरी रहैक। दिक्कत ई रहनि जे ओत' हारमोनियम भेटैत नहि छलैक। लोक कहलकनि जे कलकत्ता अथवा पटना मे भेटत। दाम द' पता लगौलनि त' ज्ञात भेलनि ते नीक डबल रीड के हारमोनियम डेढ़ सए सँ कम मे नहि भेटत। दू सए धरि लागि सकैए। आब ई दू सए कत' सँ आबए ? सम्भवे नहि छलनि। पता लगब' लगलाह जे कतहु

ककरो लग मे कोनो पुरना हारमोनियम छैक की नहि ? पता लगलनि जे राजहाता मे मिसरजी लग एकटा पुरना सिंगल रीड के हारमोनियम छनि। हुनका सँ सम्पर्क केलनि। ओ सहर्ष देबाक लेल तैयार भ' गेलथिन। किएक त' हुनका आब एकर कोनो काज नहि रहि गेल छलनि। विनोदक पिता हारमोनियम बजा क' देखलथिन। आवाज ठीक नहि रहैक। घून कैकठाम भूर क' देने रहैक। मिसरजी कहलथिन जे एकर मरम्मति भ' सकैत अछि। एहि छेद सभ के मोम सँ भरि देल जाय त' काज चलि जायत। विनोदक पिता हारमोनियम डेरा पर अनलनि। भूर सभके मोम सँ भरलनि। हारमोनियम बाज' लागल। विनोद संगीत सीख' लगलाह। डेरा पर हारमोनियम बजा के रियाज करथि त', सभके कौतूहल होइक। नीक लागै। एवं प्रकारे विनोद हारमोनियमक पटरी पर हाथ बैसब' लगलाह। सरगम सीख' लगलाह।

सम्पूर्ण परिवार के नीक लागि रहल छलैक। ई क्रम दू-तीन मास धरि चलैत रहल। मुदा अकस्मात एक दिन विनोद मुँह लटकौने आपस भेलाह। कहलथिन, 'गुरुजी कहैत छथि जे हम संगीत नहि सीखि सकैत छी। गायक नहि भ' सकैत छी। हमर आवाज हारमोनियमक सुर सँ मेले नहि खाइत अछि। गुरुजीक कहब छनि जे हम गबैया नहि, हारमोनियम मास्टर भ' सकैत छी। खाली हारमोनियम बजा सकैत छी।' पता लगौला पर विनोदक पिता के ज्ञात भेलनि जे विनोद मे लगन के अभाव छनि। मेहनति नहि क' पाबि रहल छथि। आगू नहि बढ़ि रहलाहे। पिता कहबो केलथिन। लगन सँ मेहनति कर'। मुदा विनोदक हृदय टूटि गेल रहनि। आब मोन नहि लगैत छलनि। क्रमशः संगीत सीखब छोड़ि देलनि। तहिया जे छुटलनि से छुटले रहि गेलनि।

X X X

मुदा छुटलाहा वैह संगीत फेर सँ आइ सोझा ठाढ़ छलनि। जाहि संगीत सँ हुनकर आकर्षण-विकर्षणक सम्बन्ध छलनि से पुनः समस्या उत्पन्न क' देने रहय। एहि बेर अपना सीखबाक नहि छलनि। बेटा के सीखबाक व्यवस्था करबाक छलनि। मुदा ओ पिता सन नहि छलाह। विनोदबाबूके पिता जकाँ पाइ कौड़ी के अभाव नहि छलनि। तैयो गौतमक संगीत सीखबाक विचार हुनका मे तनाव उत्पन्न क' देने छल। ओ बेटा सँ आशा लगा लेने रहथि। पढ़ि-लीखि क' बड़का हाकिम बनत। खूब पाइ कमायत। पाइ हुनका बेसी जरुरी बुझाइत छलनि। पाइक अभाव मे ओ सेहन्ताक काज सभ नहि कं' सकल छलाह। बहुत रास सुख-सुविधाक वस्तु नहि जुटा सकल छलाह। एकटा नीक मकान। एकटा नीक रंगीन टी० भी० आ भी० सी० पी० लेबाक सेहन्ता बहुत दिन सँ दबा क' रखने रहथि। अपन मकान मे एकटा शीशावला वार्डरोब बनब' चाहैत छलाह जाहि मे राशि-राशि के अंग्रेजी-फ्रेंच शराब सभ सजा क' राख' चाहैत रहथि। अपन मोनमाफिक दोस-

महिम संग कहियोके बैसि क' पीब' चाहैत छलाह। उत्तेजक फिल्म देखबाक इच्छा अक्सर जोर मारैत रहनि। अंग्रेजी सिनेमा सभक चर्चा सुनथि। उमिरक एहि ढलान पर अंग्रेजी सिनेमा हुनका मे गुदगुदी उत्पन्न कर' लागल छल। कहियो काल सिनेमा हाल मे जा क' भिनसुरका सिनेमा देखि आबथि। मुदा पत्नी संग देखबाक जे सुख छैक से सुख उठेबाक हिम्मति नहि होइन। माया के ल' कए सिनेमाहाल मे नहि जा पाबथि। एक बेर मोन जोर केलकनि त' माया लग प्रस्तावो रखलनि,

—सुनै छी ?

—की ?

—उमा मे 'कोल्ड स्वीट' लागल छैक। भिनसर मे दस बजे सँ होइत छैक। चलू ने एक दिन देखि आबी।

—धौर, ई अंग्रेजी-तंग्रेजी सिनेमा हमरा नहि नीक लगैत अछि। ई की फूरि गेलए अहाँके ?

—अरे, अहाँ सभ दिन एहिना रहि जायब। अंग्रेजी सिनेमाक सीन सभ आह, की सुन्दर होइत छैक ? देखबै तखन ने।

—नहि, नहि, हमरा बुते नहि हैत। खलनायक देख' गेल रही त' लोक सभ कोना आँखि फाड़ि क' देखैत छल।

विनोदबाबू के हँसी लागि गेल छलनि। माया दिस ककरो तकैत देखि हुनको क्रोध होइत छलनि। तैं भी० सी० पी० कीन' चाहैत छलाह। घरे मे देखबाक सुविधा भ' जेतनि। मुदा तकर जोगार नहि भ' रहल छलनि। राँची दिस पोस्टिंग भ' जयतनि त' सम्भव भ' सकैत छलनि। मुदा राँची पोस्टिंग लेल जे खर्चा छलैक से जुटिए नहि पबैत छलनि।

तैयो एहि सँ देखबाक-सुनबाक लालसा कम नहि भ' रहल छलनि। आर बढ़िये रहल छलनि। एहि लालसा-लोभ मे विनोद बाबू धीरे-धीरे परेसान रह' लागल छलाह। कोनो काज मे मोन नहि लगैत छलनि। काज नहि करबाक कतेक रास बहाना आब ओ ताक' लागल रहथि। एहि लेल कतेको बात ओ गढ़ि लेने रहथि।

—आब काजक वातावरण नहि रहि गेल छैक।

—काज केला सँ की हेतैक ? कोनो इनाम छैक काजक ?

—कतेक लोक त' बिना कोनो काजक दरमाहा उठबैत अछि। के पुछैत छैक ?

—एहि राज मे काज क' क' की हेतैक ? कोनो इज्जति छैक ?

—परिश्रम सँ आडिटे क' कए की होइत छैक ? कियो घूरिक' आडिट नोटो पढ़ैत अछि ?

—ककरो पर कोनो एक्शन थोड़े होइत छैक ? अनेरे देखार होउ।

—अरे, ओहिना चलैत छैक दुनिया। हमरा केला सँ किछु हेतैक थोड़े ?

लोक के कहबाक लेल आ अपनाके बुझेबाक लेल हुनका लग मे बहुत रास बात छलनि। मुदा आब ओ थाकि रहल छलाह। सभ बात मे झंझटि बुझाइत छलनि। ओ निचेन सँ रह' चाहैत छलाह। चैन तकैत रहैत छलाह। बाहर जाथि त' घर दिस भागथि। घर आबथि त' बिछान पर पड़ि रहथि। बिछान गर' लागनि त' गप्प लड़बै लेल कोनो दोस महिमक ओहिठाम पड़ाथि। कतहु चैन नहि भेटनि।

X X X

एहि मे गौतमक संगीत सिखबाक लगन हुनका एकदम्मे उत्तेजित क' देने रहनि। संगीत सिखबाक इच्छा हुनका निरर्थक आ लक्ष्यहीन जीवन जीबाक लौल बुझा रहल छल। बालहठ सन लागि रहल छल। जेकरा कहुना, कोनो प्रकारे टारि देबा पर ओ तुलल रहथि।

—बड़ जिद्दी भ' गेल अछि गौतम। पढ़ाइ-लिखाइ मे ओकरा मोन नहि लगैत छैक। संगीत सीख क' की हेतैक ? गबैया बनत। इस्स, ई कीड़ा कोना ओकर माथ मे आबि गेलैक ?' विनोदबाबू तमतमा गेल छलाह। माया हुनका बुझेबाक चेष्टा केलनि।

—मुदा आब ओकरा ठकल नहि जा सकैए। बहुत दिन अहाँ अनठौलियै।

—अरे, हमरा होइत छल जे कनिये दिन मे बात बिसरि जायत। एहिना मोन मे ई सभ उजाहि अबैत रहैत छैक। एखन बुद्धिए की भेलैक अछि ?' ओ किचकिचा रहल छलाह।

—ओ नहि मानत। सीखबे करत। कहैत छल जे मल्लिकजी आश्वासन देने छथिन। पाँच मास सँ लगातार हुनका ओहिठाम जा रहल अछि। आइ सभटा कहैत छल। तानपूरा कीनबाक छैक ओकरा। तकरे जोगार मे लागल अछि।

—गदहा अछि ओ। ई मल्लिकजी ओकरा दूरि क' रहल छथिन। हमरा बिना पुछने किएक ओ मल्लिकजीक ओहिठाम जाय लागल ? आब' दियौक, बिगड़ैत छियैक।' विनोद बाबू खिसिया रहल छलाह। बड़बड़ा रहल छलाह,

—आब ट्यूशन फीस दिअ' पड़त। हारमोनियम कीन' पड़त। तानपूरा कीन' पड़त।

—से त'कीनहि पड़त। कतेक दिन ठकबै ओकरा। तीन-चारि मास सँ कहि रहल अछि जे एकटा तानपूरा कीनि दिअ'। मुदा अहाँ ध्याने नहि दैत छियैक।

कतेक बेर कहबैक जे अगिला मास पाइ भेटला पर कीनि देब। टी० ए० भेटत त' कीनि देब। एखन आफिस मे बड़ काज अछि। आन-आन खर्चा सभ अछि। लगैए आब ओ बूझ' लागल अछि जे अहाँ ओकरा संगीत नहि सीख' देबैक।' माया कने रोष मे आबि गेल छलीह।

विनोद बाबू आब कने मोलायम भेलाह। माया के बुझबैत कहलथिन—अहाँ बात बुझबाक कोशिश करियौक। हम कोनो ओकर दुश्मन छियैक ? बापे छियैक की ने। अपन बेटा के दूरि होइत हम कोना देखि सकैत छी। संगीत सीखला सँ की होइबला छैक ? बड़का ओस्ताद बनत। मुदा आइ० ए० एस० तँ नहि होयत पैघ लोक त' नहि होयत। हाकिम नहि कहाओत। अहाँके नीक लागत की ? आब विनोदबाबू मायाक मर्मस्थल के छूबि लेबाक चेष्टा क' रहल छलाह।

—से हमरा किएक नीक लागत ? हमहूँ त' ओकर माए छियैक। ओकर नीक चाहबे करबैक।—माया बजलीह

—सैह त' हमहू कहैत छी। आर किछु दिन धरि जँ हम सभ अनठा देबैक त' ओ क्रमशः जिद बिसरि जायत। फेर पढ़बा-लिखबा मे मोन लगाओत। एहि लेल जँ कने हम अहाँ ठकिये देबैक त' की भ' जेतैक।' कने विचारैत सन विनोद बाबू बजलाह।

डेरा प्रवेश कालक मानसिकता क्रमशः हुनका घेरि रहल छल। अप्रत्याशित रूपें माया आइ एहि मामिला मे पतिक संग एकमत भ' रहल छलीह। विनोदबाबू आब मायाक लग सहटि आएल छलाह। अन्ततः दुनू बेकती के स्वर साधबाक लेल कोनो तानपूराक प्रयोजन जेना एकदम्मे नहि रहि गेल छलनि।



हरिसिंहदेवी

रमानाथ सोति छथि। रातिमे कहियो क' निचेन भेलापर बेचैन भ' जाइत छथि। देहपर जेना चुट्टी बूल' लगैत छनि। काछ कुड़िआए लगैत छनि। होइ छनि जे कुड़िअबैत-कुड़िअबैत लहू-लहुआन क' ली काछ के। सौंसे देहके नोचि ली। रगड़ि-रगड़ि क' साफ क' ली सभटा...। देह, मोन आ आत्मा सभ स्वच्छ भ' जाए। मुदा पपटी नहि हटि रहल छनि। आर कारी आ मैल भेल जा रहल छनि। आतंकसँ जेना घामे-पसेने तर-बतर भ' जाइत छथि रमानाथ। नीन्न नहि होइ छनि। कछमछ करैत समय बीतैत छनि...।

रमानाथ सोति छथि। मुदा ई बात अनका सँ नुकेबाक चेष्टा करैत छथि। नामसँ कियो हुनका सहजहि ब्राह्मण बूझि सकैत अछि। सबा सोलह आना मैथिल ब्राह्मण। रमानाथ झासँ कियो हुनका सोति नहि बुझि सकैत अछि। सोति तँ बुझैत अछि बाद मे। जखन कियो आन ई तथ्य जनबैत छैक। अरे, ओ तँ सोति छथि। अहाँके नहि बूझल छल एखन धरि ? वाह, खूब छी अहूँ। देखब, सम्हरि क' रहब। ई जानकारी पाबि ओ व्यक्ति चौंकि जाइत छथि। अकस्मात् जेना कोनो तिलिस्म उजागर भेल हो। ऐ, रमानाथजी सोति छथि ? सुआइत......। आ तहियासँ रमानाथ झाक कोनो गुण हुनकर व्यक्तिगत खाता मे आ अवगुण उपजातिगत खातामे जमा हुअ' लगैत अछि। तकर बाद जहिया कहियो ओहि व्यक्ति के भेंट होइत छनि रमानाथ सँ त' ओ या तँ सोझे टोकि दैत छथिन, अँए यौ अहाँ सोति छी औ ? अथवा गप्पक क्रममे जना दैत छथिन जे ओ बाघ मारि चुकल छथि। एहि शाश्वत परम्पराक निर्वाह मात्र एक गोटे नहि केने रहथि। ने हुनका कियो जानकारी देलकनि। ने ओ चौंकि क' पूछलखिन। आ ने कोनोना जना देलखिन जे ओ बाघ मारिए देने छथि। ओ व्यक्ति छलाह विमल कुमार झा, बी० डी० ओ०।

विमल कुमार झा सँ रमानाथ झाके मोहनियाँमे भेंट भेलनि। मोहनियाँ प्रखण्ड मे। विमल ओत' बी० डी० ओ० रहथि आ रमानाथ अंचलाधिकारी भ' कए ज्वाइन केलनि। ई करीब सोलह-सत्तरह वर्ष पूर्वक कथा थिक। आब त' सम्भवे नहि अछि जे कियो दू टा झाजी एक्कहि प्रखंड मे बी० डी० ओ०-सी० ओ० भेटथि। ओहिकालमे बिमल बैचलरे रहैत छलाह। रमानाथके सेहो परिवार के गामहि राखब जरुरी छलनि। तैं दूनू एक्कहि डेरामे संगहि संग रह' लगलाह। बएस मे विमल जेठ रहथि। करीब चारि बरस जेठ। तीन वैच सीनियरो रहथिन। काशीक नजदीक एहि भोजपुरी क्षेत्र मे दू मैथिलक भेंट मने उल्लासक बागमती उमड़ि आयल। सभकाज संगे चल' लागल। क्षेत्र भ्रमणसँ ल' कए सिनेमा देखब धरि। दूनूके सरकारी जीप भेटल रहनि मुदा ई अवसर गनिये गूथिक' आएल जे दूनू गोटे अपन-अपन जीपपर फूट बैसल होथि। रहैत छलाह संगहि, चलैत छलाह संगहि। कखनो ब्लौकक जीप रहनि कखनो अंचलक। स्वभावो बेशी मिलैते रहनि। आश्चर्यजनक रुपसँ दूनू ईमानदार ओ संवेदनशील अधिकारी। प्रखंडमे खूब काज भेलैक। दूनूक खूब प्रशंसा भेलनि। मुदा एक दिन कोनो गप्पक प्रसंग मे विमल अकस्मात बाजि उठलाह, 'दुर छोड़ू। सोति सभ तँ बूड़ि होइत अछि।' सुनि क' रमानाथ चौंकलाह अवश्य मुदा बातके आगू बढ़ौलनि नहि। हँसि के चुप्प रहि गेलाह। मने मन्तव्यपर सहमतिक मोहर लगा देलनि। अथवा सहमतिक भ्रम उत्पन्न केलनि। भ' सकैए जे व्यक्तिगत सम्बन्धपर जरब पड़बाक डरे बातके टारि देलनि। चुप्पे रहलाह। बात खतम भ' गेल। मुदा रमानाथके मन्तव्य मोन पड़ैत रहलनि। एहिसँ पहिने एहन स्थिति सोझे-सोझ नहि आएल रहनि। मुँहपर कियो ई बात नहि कहने रहनि। सभ दिन परिवार आ उपजातिक कारणे एक विशिष्टतावोधसँ हुलसैत रहलाह। घर-परिवारमे बाबूसाहेब सभके बूड़ि कहैत सुनैत छलाह। बाबूसाहेबक खूब खिधांश होइत रहैक। फल्लाँ ठामक बाबूसाहेब सभ दरिद्र भंजन भ' गेल छथि। फूसक घर छनि। मुदा कोनो सोतिके अबैत देखि चट्टसँ टुटलाहा कुर्सीपर बैसि क' पटिया ओछा दैत छथि नीचाँमे। सोतिके बैसबाक लेल। अपन दियाद सभके कहैत सुनथि; 'फल्लाँ बाबूसाहेब जे बूड़ि अछि यौ।' मुदा बाबूसाहेबक कन्यासँ वियाहक लेल सभ धड़फड़ायल रहथि। अपन बाप-पित्तीक मुँहपर प्रसन्नताक लहरि देखथि जखन कोनो बाबूसाहेबक ओहिठामसँ कोनो कथा-वार्त्ता हुअए। कथा आबए। मुदा बाबूसाहेबक खिधांश चलिते रहय। ई खिधांश आन जाति-उपजाति लेल सेहो चलैत छल। 'ब्राह्मण सभ बड़ छड्ढू चालक होइये। रोटी-आलू साना-खिच्चड़ि खा नोट जमा करैये। एकदम अविश्वसनीय होइये। बाभनक फेरमे नहि पड़ब। बहुत दोस्ती देखै छी अहाँके।' कियो जेठ धोप' लागथि। तहिना भूमिहार, राजपूत, कायथ, गुआर, धानुक, बनियाँ सभहक खिधांश हुअए। जातिक कारणे। चमार-दुसाधक मुदा कोनो खिधांश मोन नहि पड़ैत छनि। भरिसक ओ सभ खिधांशक जोकर नहि बूझल जाय। ओकर अस्तित्वक स्वीकृति जेना नहि रहैक।

मुदा जखन मुँहपर सुन' लगलाह तँ सुनिते रहलाह। विमल एक-दू बेर आर कोनो प्रसंगमे रमानाथक मुँहे पर सोतिके बूड़ि कहने छलाह। मुदा ओ फेर किछु नहि बजलाह। सोच' लगलाह जे जखन विमलबाबूके पता चलतनि जे ओ सोति छथि तँ हुनका ग्लानि हेतनि। रमानाथ सोचि क' रोमांचित होथि जे जखन अकस्मात् विमल बाबू बुझताह जे ओ सोतिए छथि जिनका मुँह पर सभ दिन बूड़ि कहैत रहलाह तँ क्षमा माँग' लगताह। पश्चात्ताप हेतनि। अपन व्यवहारसँ, गुणसँ रमानाथ विमलक धारणा बदलबाक मादे सोचैत रहलाह। अपन सोति हेबाक रहस्योद्घाटन नहिये केलनि अथवा ने बूड़ि कहबाक विरोधे केलनि। हुनका अपनहुँ एहिमे सन्देह नहि रहनि जे यदि ओ अपन उपजाति खोलि देताह तँ विमल कमसँ कम हुनका मुँहपर सोतिके बूड़ि नहिये टा कहताह। अपन एहि चूकक कारणे रमानाथ एक दिन बेश विचित्र स्थितिमे फँसि गेलाह। अपन ममियौत जेठ भाइसँ फज्झति आ गंजन सुन' पड़लनि से फराक। भेल ई रहैक जे ओ विमलक संग पटना गेल रहथि। विमलके शिक्षा विभाग मे काज रहनि। रमानाथक ममियौत ओहिमे किरानी रहथिन। तैं रमानाथ विमलक काजक मादे अपन ममियौतसँ कहलथिन। ताहिपर अनायास हुनकर ममियौत बाजि उठलाह,

'हिनकर काज तँ शंकरे बाबू करथिन। उजानक सोति छथि।' ताहि पर विमल चोट्टे जवाब देलथिन, 'सोति छथि ? सोति सभ तँ बड़ बूड़ि होइये।' रमानाथके भेलनि जेना ओ एक्कहि बेर नांगट भ' गेल होथि। लाजसँ मुँह-आंखि लाल भ' गेलनि। अपन ममियौतके आँखि गुड़ारि क' अपना दिस तकैत देखलनि। ओ किछु बाजि नहि देथि तैं इशारासँ हुनका रोकलनि। अनोन-विसनोन सन सचिवालयक सड़क रगड़ैत रहलाह। विमलक परोक्ष भेलापर ममियौत गरजि उठलाह, अँए हौ। बी० डी० ओ० साहेब नहि बूझैत छथि जे तों सोति छह। दू बरखसँ तों दूनू गोटे एक्के संग रहै छह आ एखन धरि अपना बारेमे कहबो ने केलहुन अछि। चुपचाप सोतिके बूड़ि कहैत सुनैत रहैत छह ? की पढ़ि-लीखि क' तों सभ डिप्टी-कलक्टर भेलह से नहि जानि। कोन बातमे तों हुनका सँ कम छह? रमानाथ अपन ममियौत के शान्त करबाक चेष्टा केलनि, 'कम बेशीक बात नहि छैक भाइ। दू-सए-तीन सए बरखक बद्धमूल भेल धारणा छनेमे हटैवला नहि छैक। जँ ओ बुझिये गेल रहितथि जे हम सोति छी तँ ताहि सँ की फर्क पड़ै वला छलैक। हमरा मुँहपर नहि कहितथि, हमर परोक्षमे बजितथि। असलमे हम अपन बात-व्यवहारसँ सोतिक प्रति हुनक धारणा बदल' चाहैत छी। रहल बूड़ि कहबाक बात तँ ताहिसँ हमरा तामस नहि होइये।'

—किए, तामस किएक नहि होइ छह ? तों सोति छह की नहि ? तोहर मुँहपर सोतिके बूड़ि कहैत छथि आ तों चुपचाप सुनि क' रहि जाइत छह।' ममियौत गुम्हरि रहल छलाह।

—चुपचाप सुनि क' रहि नहि जाइत छी। हँसि दैत छी। ओहिना जेना अहाँ बूड़ि कहैत छी त' हँसि दैत छी।' रमानाथ मुसकुरा रहल छलाह। मुदा ममियौतक क्रोध बढ़ैत गेलनि।

—ऐं, दूनू एक्के बात भेलैक। हम तोरा कहैत छियह आ ओ तोहर जातिके कहैत छथुन।'

—भाइ, हम से कहाँ कहलहुँ जे दूनू एक्के बात भेलैक। दूनू दू बात भेलैक। कने सोचियौ। अहाँ हमरा नीक जकाँ चिन्हैत छी जे हम की छी तैयो बूड़ि कहि दैत छी। मुदा ओ तँ हमरा नहि कहैत छथि। सोतिके कहैत छथि। सेहो समाज मे पसरल धारणाक आधारपर कहैत छथि। धारणामे तथ्य आ भ्रान्ति दूनू मिज्झर रहि सकैत छैक। धारणा बिनां देखनहुँ, बिन परीक्षणोक बनि जाइत छैक। ई सभ टा पंजी व्यवस्थाक आ जातिवादक दोष थिकैक। रमानाथ अपन ममियौतके बुझेबाक चेष्टा केलनि। मुदा हुनकर ममियौत बात नहि बूझि पबैत छथि। रमानाथक जबाबपर ओ आर भड़कि जाइत छथि 'तौ बुझैत छह जे जखन हुनका पता चलतनि जे तों सोति छह तँ हुनका ग्लानि हेतनि। पश्चात्ताप हेतनि। हुनकर धारणा तोहर व्यक्तिगत व्यवहार-गुणसँ सोतिक प्रति बदलि जेतनि। किन्हुँ नहि बदलतनि। ई तोहर भ्रमं छह। तोरा भले ही शुद्धा आ नीक लोक बूझ' लागथि मुदा सोति कें बूड़िये बूझैत रहताह। कहैत रहताह।'। ममियौतक जे विचार होइन मुदा रमानाथ अपन व्यवहार नहिये बदललनि। ने विमलक प्रतिरोध केलनि आ ने कहि सकलाह जे ओ सोति छथि। एहिना सभ किछु चलैत रहल। ओ तँ बहुत बादमे जा कए रमानाथक बहीनक वियाहमे विमल हुनकर गाम गेलाह तँ बुझलनि। ओहि समयमे दरभंगाक मनीगाछी प्रखण्ड मे आबि गेल रहथि विमल। रमानाथक गामसँ किछुए दूर। बरियाती सभ जखन खा क' चल गेल तँ सरियाती भोजनक बेरमे विमलके आवेससँ खुआब बैसलाह रमानाथ। अनोन तरकारी सभमे नोन मिलाबक लेल कहलथिन। अनोन तरकारीक परम्परापर गप्प भेल। सोतिमे काटर नहि लगबाक मादे गप्प भेल। एक्के साँझ बरियाती भोजनक गप्प भेल। दूनू मित्र मुसकुराइत गप्प करैत रहलाह। मुदा रमानाथ ने अपनाके सोति उद्घोषित केलनि ने विमलक धारणा मादे पुछलनि। विभिन्न स्थानपर स्थानान्तरणक कारणे दूनू गोटे आब संगे नहि रहैत छथि। मुदा सम्बन्ध बनल छनि। विभिन्न अवसर पर भेंट-घांट होइत छनि। परुकाँ रमानाथ विमलक बेटीक वियाहमे हुनकर गाम गेल छलाह। बेश आगत-स्वागत भेलनि। बरियातीक विदाइ बेरमे विमल रमानाथेके आग्रह कएलथिन धोती आ जनउ-सुपारी देबाक लेल। रमानाथेक हाथसँ वरियाती लोकनिके धोती आ जनउ-सुपारी देल गेल। रमानाथ के बूझि पड़लनि जे हुनका प्रतिष्ठा देल जा रहल छनि। ओ एकर विरोधो केलनि। मुदा विमल नहि मानलथिन। बिना कोनो स्पष्ट वाक्य के रमानाथके लगलनि जे सोति हेबाक कारणे

हुनका प्रतिष्ठा देल गेलनि अछि। विमलक बूढ़ पिताक अनुरोध सेहो मोन पड़लनि। रमानाथकें लाज भेलनि।

रमानाथके मोन पड़ैत छनि जे अपन उपजातिक कारणे विशिष्टताबोध जे धिया-पूतामे कहियो उत्पन्न भेल रहनि आब खिया क' पपटी भ' गेल छनि। ओ कतोक बेर देखने छथि जे ई पपटी भेल विशिष्टताबोध कोनो सोतिके कोना दिनाय जकाँ कुड़िआए लगैत छैक। दिनाय कुड़िआएब नीक लगैत छैक। ककरो नह लगलासँ जखन छनछनाए लगैत छैक तँ कष्टो होइत छैक। मुदा इस-इसो करैत दिनाय कुड़ियबैत रहैए लोक। अपन कतेक सोति मित्रके देखने छथि ओ आन जातिक अपन संगी सभहक लग ब्राह्मणक खिधांशमे अपनाके बिलगा लेबाक प्रयत्न करैत। 'हमरा सभमे एना नहि होइत छैक।' कोनो बात व्यवहार पर चर्चा क क्रममे मित्र कहि उठैत छथि।

सभ प्रश्नवाचक दृष्टियें हुनका दिस ताक' लगैत छनि। ओ स्पष्ट रुपें मैथिल ब्राह्मणक चारि उपजातिक चर्चा करैत छथि। अपनाके श्रोत्रिय अथवा सोति कहैत परम्परा, रीति-रेवाजसँ अपनाके विशिष्ट बना लैत छथि। ब्राह्मणक प्रति अपन आन जातिक संगी सभहक धारणासँ अपनाके साफ बचा लेबाक हुनक कोशिश कखनो क' सफलो भ' जाइत छनि। एहिठाम कखनो क' व्यक्तिगत व्यवहार आ गुण, नीक लोक हेबाक इमेज, कट्टरताक अभाव उपजातिपर हाबी भ' जाइत अछि। मने व्यक्ति जातिके दबा दैत अछि। आन जातिक संगी व्यक्तिएके जाति वा उपजातिक प्रतीक मानि लैए। मुदा ई स्थिति बहुत कम ठाम उपलब्ध होइत छनि रमानाथक सोति मित्र सभके। वेशीकाल अपनाके विलगेबाक अवसर नहिये भेटैत छनि। यदि भेटतो छनि तँ आन सभहक धारणा बदलि नहि पबैत छथि। लोक सभ सन्देहक दृष्टिसँ देखिते रहि जाइत छनि। 'अरे बाप ! मैथिल आ सापमे मैथिले खतरनाक होइए ज्यादे। सापसँ पहिले मैथिलेके मारक चाही।' कोनो अंग्रेजक लिखल बात अदौसँ लोक गीरह बन्हने अछि। एक-दू टा उदाहरणो भेटिये जाइत छैक। लोक जातिवादी चश्मामे एहि बातके गीजैत रहैए। रमानाथके अपन ब्राह्मण मित्र सभहक गप्प सेहो मोन पड़ैत छनि। हँसी-ठहक्का मे उधियाइत गप्प-खिस्सा सभ...। गीदड़क भुकला पर कम्मल देबाक गप्प! सापके मारबाक लेल मुस्सर अनबाक गप्प। चोरके पकड़बाक लेल पुरुखके बजेबाक खिस्सा। चोर द्वारा राहड़िक दालि चोरौला पर आमिलके ताकब। कौआके चारपर देखिक' सीढ़ी हटा लेबाक खिस्सा। सोतिक कौचर्ज ! खिधांश ! ब्राह्मणक कौचर्ज ! ब्राह्मणक खिधांश।

ई सभ आखिर किएक होइत छैक। किएक आइयो एतेक आधुनिक भेल लोक जाति आ उपजातिमे बँटल अछि ? एक दोसराक खिधांश करैये ! जातिक आधार पर चलैत चुटकुलाक कहियो अन्त छैक की नहि ! हँसी-हँसी मे मर्मभेदी

प्रहारक की प्रयोजन छैक ? एतेक हिंसा किएक भरल छैक लोकक मोनमे ? रमानाथ सोचैत छथि। सोचैत रहैत छथि। मोन पड़ैत छनि रमानाथके सोति ससुर द्वारा ब्राह्मण जमायक अपमान। ब्राह्मणी सासु द्वारा सोतिआइन पुतहुक खिधांश ! परिवारमे ब्राह्मणी पुतहुक हास्य। जखन खान-पान, बियाह-दानो जातीय वा कहू उपजातीय भावनाके नहि खतम क' पाबि रहल छैक तखन आब की उपाय छैक ?

रमानाथकें सोचैत-सोचैत हरिसिंहदेव मोन पड़ैत छथिन। पंजी बना क' जे ब्राह्मणके छोट-पैघमे बाँटि देलनि। किये दोसरासँ अपनाके किए दबल रहब पसिन्न करत ? जेना ब्राह्मण आ कायस्थक पांजि बनल तहिना क्षत्रियक सेहो बनल। परन्तु क्षत्रिय सभ हरिसिंहदेवक पंजी प्रबन्धके लागू नहि केलनि। किएक तँ अधिक लोकके तँ छोटे बनौने छलाह। लोक छोट बनब किएक स्वीकार करितय? एही हलचलमे जखन मुहम्मद तुगलकक सेना मिथिलापर फेर आक्रमण केलक, क्षत्रिय लोकनि महाराज हरिसिंहदेवक कोनो सहायता नहि केलनि। ब्राह्मणोमे जे सभ जमीन्दार छलाह हुनका छोटे बनौने छलथिन। श्रोत्रिय लोकनि होमक स्रुबसँ कतेक सहायता करितथिन। कुलीन कायस्थलोकनि कलमक नोकसँ लड़ाइ कोना लड़ितथि। फल भेल जे हरिसिंहदेव महाराज के अपन राजधानी छोड़ि क' जंगल-पहाड़मे शरण लिअ' पड़लनि। नेपाल पड़ाए पड़लनि। जाहि महाराज हरिसिंहदेवके पाँजि चलौलाक कारणे शत्रुसँ हारि क' जंगल-पहाड़मे बौआए पड़लनि, हुनकर पाँजिक पोटरीके हमसभ कतेक दिन धार पीठपर उघने फिरब ?

रमानाथ चाहैत छथि जे ओ अपन उपजाति बिसरि जाथि। उपजाति की जातियो बिसरि जाथि। मुदा से पार नहि लगैत छनि। कखनहुँ लोक मोन पाड़ि दैत छनि। कखनहुँ परम्परा सँ चल अबैत विशिष्टताबोधक पपटी दिनाय अपने मोने कुड़िआए लगैत छनि। दिनाय कुड़िआएब नीक लगैत छनि। मुदा नह लगलासँ जखन छनछनाय लगैत छनि तँ कष्टो होइत छनि। इस-इसो करैत दिनाय कुड़िअबैत रहैत छथि। मुदा कतेक दिन चलतनि एना ? कतेक युग ? नेनासँ सुनैत हरिसिंहदे आब भविष्योके बकुटने हँसि रहल अछि। ओहि दिन दस बरखक बेटा पूछि देलकनि, 'पापा ! हम सभ सोति छी ने ? मैथिल ब्राह्मणमे सभ सँ ऊपर ?' रमानाथ भरि नजरि अपन बालक दिस तकलनि। बेटाक मुँहपर वैह विशिष्टताबोध दमकि रहल छलनि। ओ आतंकसँ घामे-पसेने तर-बतर भ' गेलाह। ओही अवस्था मे बेटा सँ कहलनि, 'जाति मे पैघ होयब त' बूड़ियो कहायब ने? बूड़ि कहायब नीक लागत अहाँके ?' एहि प्रश्न पर बेटा के चुप्प देखि अपने बजलाह, 'बूड़ि कहायब नीक नहि लागत त' सोतिए होयब कोना नीक लागत...।'



सीवन रजकक हितचिन्तक

गामक पछबरिया सड़कक कातमे भालसरीक गाछ लग जे गोड़ दसेक घर छै से धोबि सभहक छियैक। अदौसँ एहिना फूसक, माटिक चिक्कन-चुनमुन घर लोक देखि रहलए। घरक भीतपर बड़की टटा हाथ पैर बला कोनो मनुखदेबाक आकृति उकेरल छै, गेरु सँ। बड़कीटा मुँह, नाक, कान, बाँहि....। घरक आगू कपड़ा सभ सुखेबाक लेल डोरि सभ टाँगल। सभ धोबि अपन पुस्तैनी धंधा नहि करैए। दस घरमे खाली चारिए घर लत्ता-बस्तर धोइए। साबुनक चला-चलतीमे लोक आब कपड़ा धोइ लेल नहि दै छै। खाली मरण-जनममे धोबिक काज पड़ै छै। गामक कनियाँ-मनियाँ, बुआसीन-सुआसीनके तखने धोबिनक खोज। ओना गाममे एम्हर कलफदार कपड़ा पहिरबाक हिस्सक लोकके लागि रहलैए। सजल-धजल, कड़क धोती-कुर्त्ता। लील-टीनोपाल देल। अथवा पैंट-बुसर्ट। खासक'के गाममे रहनिहार लगपासक शहर अथवा गाममे नियोजित व्यक्तिके टीप-टापमे रहब विवशता छनि। घर मे आइरनक सुविधा नहि तैं धोबिपर आश्रित। तकरे परिणाम थिक गम्भीर ड्राइक्लीनर्स....। जदुआ धोबिक बेटा रामलखन चलबैए! शहरमे रहि सीखि आएलए लौड़ी चलौनाइ। आइरन केनाइ। मुदा उधारीक कारणें बेहाल रहैए रामलखन।

एही रामलखनक दिआद छै सीवन। सीवन रजक। ग्रामीण बैंकमे कैशियर अछि। गाम सँ दस मील उत्तर सोनपुर शाखामे पदस्थापित। 'जहियासँ ई सरबा सीबनमा कैशियर भेलए, मगजे उनटि गेलैए एकरा। होइ छै जेना लाट साहेबक पोता हो। बेटी चो...घूरिके तकबोने करैए।' चाहक दोकान पर बैसल हरेकान्त बाबू अपन मोनक भाव प्रकट करैत छथि। 'आब ओ कहियो घूरिक' नहि ताकत कका। आगूए आगू बढ़ल जाएत। एखन कैशियर भेलए, कनिए दिनमे एकाउन्टेंट तकर बाद मनीजर हैत...।' शोभाकान्त टिपलक।

'से कोना हौ ? कोन अलादीनके दीप पड़ि लागि गेलैए सारके। कोनो जिन्न साधि लेलकए की ?' हरेकान्त बाबू आश्चर्य प्रकट करै छथि।

'जिन्न नहि कका, लालू परसाद। लालू परसाद के किरपासँ। मुख मंतिरी...।' शोभाकान्त रहस्यक गिरह खोलैए। 'दुर, मरदे ! तोंहू बुढ़ारी मे हमरासँ चौल करै छैं। ई लालू प्रसाद की करतै ? ओ मुख्यमंत्री छै। सीवन रजक सँ कोना कनेक्शन भ' सकै छै ओकरा। ई सार सिहौल गामक धोबि आ ओ पटना के मुख्य मंत्री। ने एक-आरि खेत, मे परिचय-पात। सीवन रजकक बढ़ोतरी मे लालू प्रसाद का हाथ किन्हु नहि भ' सकै छै। सीवनमाक हाथमे पाँचोटा भोटो तँ नहि छै।' हरेकान्त बाबू शोभाकान्तके झाड़ि देलथिन।

फुलबाके नहि रहल गेलै। मुसकिआइत रहस्य के उघार केलक। फुसफसाइत बाजल, 'ई शोभा की बाजत कका ? एकरा की बुझल छै। हम कहै छी सीवनमाक खेरहा। सीवनक बैंक के चेयरमैन छै रामदहिन मिसर। एक नम्बर के लम्पट अछि सरबा। सीवनमा अपन बहु-बेटीके सप्लाइ करैए ओकरा लग। ताही कारणे ढरल छै ओ।' हरेकान्त बाबू जोर सँ ठहक्का लगौलनि। एक धौल फुलबाक पीठपर देलनि जोरसँ। 'बाहरे वीर। अलबत्त ओस्ताद छै तों। सार, सी० बी० आइ० के कान कटै छै। एकदम जाठि लगहक माटि निकालि क' अनलेहें। मोन आनंदित क' देलें। दहक तँ सीताराम चारि-चारिटा क' राम भोग सभके।' आ रामभोग चल' लागल रहैक।

ग्रामीण बैंकक सोनपुर शाखा मे सभ मिला क' पाँच टा कर्मचारी छै। एकटा मैनेजर, एकटा एकाउन्टेन्ट, एक फील्ड आफिसर, एक केशियर, एक चपरासी...। एकटा ब्राह्मण, एकटा भूमिहार, एकटा कायथ, एकटा हरिजन ओ एकटा यादव। फील्ड आफिसर रामकृपाल यादव बेशी काल टूरे पर रहैत छथि। चन्द्र भूषण शर्मा, मैनेजर सँ नीक सपठैती छनि। एकदम फीफ्टी-फीफ्टी....। मनोरंजन लाल दास एकाउन्टेंट के भीतर सँ शर्माजी सँ झगड़ा छनि। उपरसँ मेल-जोल। बड़का हाकिम लग मैनेजरक शिकायत लेल तत्पर रहै छथि दासजी। सभसँ अलंग ठक्कन झा चपरासी....। त्रिकाल दैत छथिन भांग। ललका सिनुरक ठोप श्याम वर्ण पर चक्कसँ उठै छनि। भरि दिनमे एम्हर-ओम्हरक काजसँ दस-बीस पचास धरि कमा लैत छथि। सीवन रजक हालेमे एत' आएलए कैशियर भ' कए। पहिने हेड आफिस मे चपरासी रहय। कहुना क' खीचितीड़ि क' मैट्रिक पास क' लेनाइ काज देलकै। फोर्थ ग्रेडसँ थर्ड ग्रेड भ' गेल। चपरासीगिरी छूटत तकर भरोस नहि रहैक। तैं कैशियर मे प्रमोशन भेलापर सौंसे हेड आफिस मे हनुमानजीक परसाद लड्डू बटने रहए सीवन रजक। खुशीक मारे एक अद्धा बेशी चढ़ा देलकै साँझमे। गाम पर पहुँचल तँ कैशियरसँ चैयरमैन भ' गेल रहए...।

—'अरे, कहाँ गेलै ? जल्दीसँ बाहर आबहु। आइ तँ गजब भ' गेलै रे बाप...। आदेशपालसँ रोकड़पाल हो गेलै रे। गए चुनियाँ। माए कहाँ गेलौ रे ? बजा जल्दी....कखनीसँ हम चिकड़ने जाइ छी क्यो सुनबे नहि करैए।' सीवन घरक आगूमे राखल जौरखट्टापर धममसँ बैसि रहल। खाट कड़कड़ा उठलैक।

—'आबि गेलै फेर पी क'। सौसे टोल उधम मचेतै। की छियै ? कथी लेल एते चिकड़ै छइ ? बाजहु ने जल्दी। हमर लोहिया जरैए।' सीवनक बहु बड़बड़ाइत बाहर निकलल रहय।

—'अरे, सुन। तोहर तँ हरदम लोहिए बहिं चढ़ल रहै छौ। सरबा हम रोकड़पाल भ' गेलियौ गए। आदेशपालसँ एकहि बेर रोकड़पाल। रुपैया के ढेरपर बैठेगा। तुम्हारे खातिर नाक का बुलाकी गढ़ाएगा। कानका करनफूल बनबाएगा। चमचमिया नुआँ खरीदेगा। अरे तुम्हारे को ठट्टा बुझाती है। एकदम संवा सोरह आना सत्त कहै छियौ गए चुनियाँ के माए।' सीवन एकदम झूमि रहल छल...।

—'धौरजो, पी लेला के बाद एहिना सभ दिन चमचमियाँ नुआँ आ करनफूल खरीदै छै हमरा लेल। एखन तँ धना सेठ रहबे करतै। भिनसर भेलापर सभ सटक सीताराम। अनेरे हमर काज हरजा करै छै।' कहिक' ओ घरमे चलि गेलै। सीवन ताबे गीत उठा चुकल छल।

आ गए छोटकी, मरुआ के रोटी

बलानक पोठी, के खेतै गए छोटकी ?

आँए हो चेथरु कका.....।' गीत गबैत-गबैत सीवन रजक खाटपर पसरि गेल रहय।

X

—'सीवन बाबू अहींटा के असरा अछि। यदि एहि सप्ताह हमरा पम्पिग सेट नहि भेटल तँ खेती चौपट भ' जाएत। यादवजी कहै छथि जे टेन परसेंट लागत। कतसँ अनबै हम सभ परसेंट। परुकाँ सेहो अकाले रहैक।'

—'किए, अहाँ सभ मैनेजर साहेब के नहि कहलियनि ? एहेन अन्हेर तँ नहि ठीक बात। चाह-पान करै लेल ल' लिअ' मुदा टेन परसेंट ?'

—'मैनेजर साहब के तँ कैक बेर कहलियनि सीवन बाबू ! मुदा ओ तँ एकदम फिल्ड आफिसरसँ मिलल छथि। कहै छथि जे रिपोर्ट•तँ यादवे जी देताह। हम की क' सकैत छी ?' अहीं कोनो जोगार धराउ। हमरा सभके बुझल अछि अहाँ इमानदार लोक छी। परोपट्टा मे अहाँक नाम अछि।

X

—'यादव बाबू, लोक सभ कहै छलै जे बलू अहाँ टेन परसेंट लै छियै पम्पिगसेट लेल। अकालसँ टूटल छैक सभ। एत्ते पाइ कतए स' देत ? कमसम ल' कए काज क' दियौ। गरीब सभ छै।'

—'मंहगाइ कत्ते बढ़ि गेलए से नहि देखै छियै कैशियर बाबू। आ अकाल तँ हमरो सभके दूबरख सँ छलै। एहि मदमे आवंटने ने अबैत रहैक। आइ पाइ अएलैए पम्पिंग सेट लेल तँ दू सालक बकियौता कोना असूल हेतै। तकरे जोगार तँ लगा रहल छी। अहूँ के तँ अपन हिस्सा भेटबे करत। कथीलए डिड़िआइ छी एत्ते।'

—'हमरा नहि चाही कमीशन-तमीशन। हम पहिनहि कहि दैत छी यादव बाबू। हमरा घूस नहि चाही। जत्ते भगवान दै छथि बहुत अछि। आदेशपालसँ रोकड़पाल हो गेलहुँ। दरमहो बढ़ि गेल। आब कत्ते लोभ करु। हमर हिस्साक गप्प नहि करु।'

—'ओ तँ अपने सक्षात् हरिश्चन्द्र के अवतार छी। ई तँ हमरा बुझले नहि रहए। एहिठाम तँ सौसे बिसाइन गंध पसरल छै सीवनजी। अपनेक कंठी एत' नहि काज देत। तुलसीधारी सभके एत' गुजर नहि छै।'

—'मुदा ई तँ ठीक बात नहि छियैक यादव बाबू। चेयरमैन साहेब सभके इमनदारीसँ काज कर' लेल कहैत छथिन। किसान सभ संग नीक व्यवहार करै लेल कहै छथिन। ओ बुझथिन जे टेन परसेंट चलै छै तँ....।'

—'तँ की हेतै सीवन रजकजी। भकसी झोका देथिन सभके। चैयरमैन साहेब कत्ते पानिमे छथि से सभके बुझल छैक। ई सभ गप्प छोड़ू। चुपचाप रहू आ अपन काज करू एहि शाखामे। एना नहि भ' जाए जे रोकड़पालसँ फेरो आदेशपाले भ' जाइ। जाउ, काजमे बाधा नहि करु।'

X X X

चुनियाँ माए अर्थात् सीवनक बहुके जी आइ थिर नहि छलैक। कहि क' गेल रहै जे आइ जल्दी अओतै। बभनीमे थेटर देखबै लेल ल' जेतै। मुदा दियाबातीके बेर भ' गेलै कत्तौ पते नहि छै। साइत फेर पी लेने हेतै। पी क' बौआइत हेतै। मुदा पीनाइ तँ छोड़ि देने छैक। कहै छलै जे केदन चेयरमैन साहेब पीब' सँ मना केने छैक। जँ पीतै तँ फेरो नीचा क' देतै। साहेबके बात एकदमे माने छै सोरहो आना। एत्ते लड़ाइ-झगड़ा केलियै जे दारु छोड़ि दै मुदा नहिए छोड़लकै। आ ई चेयरमैन किदन एके बेरमे छोड़ा देलकै। आब कहियो चमचमिया नुआँ, कानमे करनफूलक गप्प नहि करै छै। हँसियो करै छियै त' मुसकिया दै छै। एना किए भ' गेलए चुनियाँक बापके ? आब बजबो कम करै छै। ठहक्का त' एकदम बिसरिए गेलैए। धौर, एहिसँ नीक त' पहिने रहै। ई बड़का ओहदा त' चुनियाँ बापके बदलि देलकैए। मनुक्खो एना कोना बदलि जाइ छै। चुनियाँ माए सोचैत-विचारैत रहि जाइए। पछवारीकात बँसबिट्टीसँ गीदड़ भूकब शुरुह क' दैत छै। ओ चारुकात तकैए त' धरती स्याह भ' गेल रहै छै। अन्हार पसर' लगलैए। ओ ढिबरी जरा

देहरिपर कोनटा लग राखि दै छै लाबनपर।

X X X

—'साहेब, अपने सीवना के ताड़ि देलियै। ओकरा भरोस नहि रहै जे एहनो दिन हेतै। एहि बैंकमे हरिजनक संख्ये कत्ते छै। सभ दिन त' भूमिहार वा राजपूत डोमिनेटेड बैंक रहलैक ई। बहालियो एही दू जातिक भेलै बेसी। आब ने ई रिजर्वेशन-तिजरर्वेशन अएलइए। तैं बहालियोमे हरिजन, पिछड़ा वर्ग आ प्रमोशनोमे।'

—'शर्माजी, ई रिजर्वेशन त' पहिनहिसँ छै। ठीकसँ इम्पलीमेंटेशन नहि होइत छलैक एकरा। समय के हिसाबसँ आदमी के मानसिकता बदलबाक चाही। सामाजिक न्याय कें आब रोकल नहि जा सकै छै।'

—'सरकार अपने त' विद्वान लोक छियैक। न्याय लेल सीवन के कैशियर बना देलियै। मुदा देखबे कनी दिनमे फँसि जेतै ई। ओकरा किछु नहि अबै छै। मैट्रिक पास केना ओकरा बीस बरखसँ उपर भ' गेलै। तहियासँ कलमक व्यवहार कमे करैत रहैक। ताहूमे हिसाब-बारीक काज ?'

—'शर्माजी ! बहुत मुश्किल बात अछि अहाँ सभके। अहाँ सभ एहि बातके पचा नहि पाबि रहल छी जे एकटा हरिजनक किए प्रमोशन भ' गेलै ? जे घंटीपर दौड़ै छल, से किए कुर्सीपर बैसैए। आब जमाना बदलि गेलैए। अपन विचार बदलै जाउ अहाँ सभ....।'

—'हुजूर, अपने अनेरे बिगड़ि गेलियै। हमर आशय से नहि छल। जमाना संग त' लोकके चलबैक चाहियैक। मुदा सीवनके अबै नहि छैक किछु तैं सोनपुर शाखा मे दिक्कत भ' रहलए।'

—'ककरा पेटेसँ सभ किछु अबै छैक ? सभके सीखलापर भ' जाइ छै। क्षमता त' बढ़ौल जा सकैए। सीवन तेज नहि हुअ' मुदा इमनदार त' अछि। हमरा कहलापर आब शराबो नहि पीबैए। एकटा प्रमोशन ओकरा कतेक बदलि देलकैए। ओकर व्यक्तित्व बदलि गेलैक। बड़ खुशी होइए हमरा शर्मा जी। अहाँ सभके चाही जे सीवनके कोआपरेट करियैक। ओकरा काज सिखबियौक।' चेयरमैन रामदहिन मिश्र हरिजन उद्धारसँ बहुत प्रसन्न छलाह। एहि सरकारमे अपन इमेज बनेबाक लेल ई सभ काज जरुरी बुझाइ छलनि। सामाजिक न्यायक प्रति अपन प्रतिबद्धताक बखान घुमा-फिरा क' करबामे आ सुनबामे बड़ मोन लगैत छलनि। लगै छलनि जेना हुनकर आत्मामे गाँधीजी पैसि गेल होथिन।

X X X

रामलखनक बहु बड़ चलाकि छै। साँएके लौड़ीपर ओकर बाउन्ड्री बढ़ि रहलैए। कपड़ा सुखबै के बहाना सँ संस्कृत मध्य विद्यालयक आधा मैदान कब्जा क' लेने अछि। ओकर घरक सटले छै विद्यालय। टोल परहक सभटा छौड़ाछौड़ी विद्यालयपर भरि दिन काँइ-कुँइ करैत रहैत छैक। पण्डितजी आधा देह रौदमे आ

आधा देह छाहरिमे द' क' पड़ल रहैत छथि। रामलखन आ' सीवनक धिया-पूता एहीस्कूल मे पढ़ै छैक। पढ़ितो छैक आ' कपड़ोक ओगरबाहि करै छै। एक दिन एकटा गाए धोती चिबा गेल रहैक। पढ़ै मे लागल धिया-पूता नहि देखि सकलै। रामलखनक बहु ओध-बाध क' देलकै अपन लेध-गेधकें। साँझ मे रामलखन आएल सोनमा ओहिठामसँ दू चिलम द' कए त' सभटा खेरहा पता चललै। ओ दस हजार गारि अपन बहुकें पढ़लक आ' चारि घरमेंचा देलकै। जोरसँ बपहारि काटि उठलै ओकर कनियाँ। सीवन घरे मे रहए। दौड़ि क' आएल। रामलखनकें बिगड़लै।

—'रे, चिलम चढ़ा क' कथी लेल छरपिटबै छही बहुरियाके। की भेलै ? एहिना भूल-चूक होइ छै। बिजनिस करै छैं त' कखनो घाटो हेबे करतौ। की हेतै, धोतीक दाम दिअ' पड़तौ सैह ने। द' दिअहिक। आमदनीयो त' तोरे होइ छौक। बड़का-बड़का बिजनिस मे कर्मचारी सभहक कारणे कत्ते घाटा लगै छैक कहाँ कियो मार' लगैए अपन कर्मचारी कें। यदि बहुरियासँ नहि सम्हरै छैक कपड़ाक ओगरबाहि त' पहरुदार बहाल कर। ओकरा पैसा दही। एहि लेल घरक अमन-चैन किए खतम करै छै ?'

रामलखनकें पता नहि किए, नहि पसिन्न पड़लै ई सभ बात। जहियासँ कैशियर भेलैए सीवन, रामलखनो के ओकर व्यवहार नहि सोहाइ छैक। लोहछि गेलै।

—'तोरा जकाँ हमरो बैंकमे राखल पैसा रहए तखन ने। करेज तोड़ि क' मेहनति करै छी तखन दूटा पाइ होइए। हमर ओकाति अछि जे हम पहरुदार बहाल करब। एकरे सभके ओगरबाहि कर' पड़तै। नहि ठीकसँ करतै त' लात्ते-मुक्के अधमिरुत क' देबै। छोड़ह तों ई सभ बात। जा क' साहबी कर' गए बैंकमे। बड़ अएलाहे बड़का लोक नाहित गप्प करै बला।'

रामलखनक बात छेक्क सँ लगलै सीवन के। मुदा क्रोध नहि भेलै। ओकरा भेलै जे साइत ठीक कहै छै रामलखन। बड़का लोक नाहित गप्प नहि करबाक चाही ओकरा। मुदा ठीक गप्प ओ किए नहि क' सकैए ? नीक गप्प किए नहि सोचि सकैए ? सीवन के सर-समाज, बैंकक अधिकारी, कर्मचारी सभ मोन पड़लै। मोन पड़लथिन रामदहिन मिसर। चेयरमैन साहेब। ओकरा भेलै जे रामदहिन मिसर ओकरा बाड़ी-झाड़ी सँ ऊखाड़ि क' गमलामे रोपि देलथिन अछि। ड्राइंग रूम मे राखल गमलाक फूल भ' कए अपना जकाँ ओ ने हँसि सकैए आ' ने कानि सकैए। मुदा नहि ! ई जीवन ओकर अपन छै....ओ हँसत....गाओत....। जे ठीक बूझत से करत....। अपन हित ओकरा अपने सोच' पड़तै।

आ गए छोटकी, मरुआक रोटी बलानक पोठी के खेतै गए छोटकी? आँए है चेथरू कका....। सीबन रजक गाबि रहल छल।



महतो

फेर सँ आइ सभ महतो के खीचि अनने रहए। गप्पक फुलझड़ी उड़ि रहल छल। साहेब मीटिंग मे गेल छलाह। आइ फेर घुरि क' अएबाक कोनो आशा नहि छल। साहेबक नहि रहला पर आर सभ छुट्टा साँढ़ भ' जाइए। ओना साहेबक रहलो पर कोनो बेशी फरक नहि पड़ै छै। खाली पिहकारी आ' ठहक्का कम भ' जाइ छै। आफिसक काज सँ सभक कमे बास्ता रहि गेलैए। कहबाक लेल बहाना कतेक रास जनमि गेल छै। कागज नहि अछि। फ्लाइलीफ नहि अछि। टैग नहि अछि। कलम मे लीड सधि गेल अछि। टाइपराइटर खराब भेल तीन मास सँ पड़ल छैक। मरम्मति लेल पाइ नहि छैक। स्टेशनरी लेल पाइ नहि छैक। जखन सरकारे के कोनो गरज नहि छैक त' काज किए हेतैक। जेकरा काज करेबाक होइ कागज-कलम आन'। फ्लाइलीफ कीनि के लाब'।

चिट्ठी बाहर सँ टाइप करा क' आनए। करमचारी सँ अफसर तकक खुशामद करए। तखन जेहेन काज तेहेन पेपरवेट ....नहि त' सभटा कागज उड़िया जेतेक। कागज उड़ियाइते रहैत छैक। सरकारी काज एहिना चलै छै। लोक के अनेरे बड़ टेंशन छै। आफिसटा त' एकटा मोन बहटारबाक जगह छै ताहू पर कहियो के कोनो बुड़बकहा पब्लिक आबि क' मूड बिगाड़ि दै छै। ओह इहो पब्लिक ! भगवान बचाबए एकरा सँ। खाली जेबी ल' कए घाड़ उठौने उंट जकाँ जमि जाएत। जेना सरकारी आफिस बपौती रहैक। बापक जिमीदारी मे पड़ैत होइ। मुदा चावाश रे, बड़ा बाबू ! एहेन के ने घरमुड़िया दैत छनि जे खोप सहित कबुतराय नमः। जेबी महक नोटक गन्ध एक लग्गा दूरे सँ लागि जाइ छै ओकरा। कोन असामी मोट अछि, जेबी भरि के अएलए आ कोन दँतनिपोड़ तकर थाह लगबै मे कमाल के ओस्तादी हासिल केने अछि बड़ा बाबू। दरवाजाक ठीक सामने अपन सीट लगबौने अछि। दूरे सँ लोक के टेबि लैत छनि। के आइ नाओ पर चढ़ताह। के चढ़ि के गंगा पार जेताह। के किन्हेरे मे अछताइत-पछताइत रहि जेताह। सभटा खेरहा जनैत अछि बड़ा बाबू। दशाश्वमेध घाटक मलाह सन लोकके देखिते बड़बड़ाए लागत।

— ओ करिका कोट बला। टपि जाएत आइ।

— ओ चश्मा लगौने। लसकि जेताह।

— ओ टोपी वला। साहेबे लग टांगल रहताह।

— ओ फुलपैंट। सर्ट। दाँत निपोड़नहिं वापस।

— ओ कुर्त्ता, वण्डी। पौ बारह....।

बड़ा बाबूक एहि कूट भाखाक अर्थ आब सभके बूझल भ' गेल छैक। पूरा आफिस अपन हिसाब-किताब एही भाखा मे क' लैए। जे टपि जाएत। तकर पचास परसेंट साहेब। बीस परसेंट बड़ा बाबू। पन्द्रह परसेंट डिलिंग क्लर्क। शेष पन्द्रह परसेंट डायरी-डिसपैच। मोहर। फाइल अबै-जाइ मे। टाइप मे। जे टाँगल रहताह से चाह-पान क' कए साहेब लग सँ घुरि जेताह। नियम-कानूनक फोड़न सुंघैत कोनो मंत्री-तंत्री के जोगार मे चप्पल सँ चट्टी भ' जेताह। दाँत निपोड़नहि वापस एहिना अबैत-जाइत रहताह। एक डेग आगू बढ़तनि काज त' तीन डेग पाछू चल जेतनि। मकड़जाल मे ओझराइत रहताह। सोझराइत रहताह। फेर ओझरेताह। अंत मे व्यवस्था के आ अपन कपार के दोख दैत निस्पन्द भ' जेताह। लसकि जेताह- माने शुरुहे ने हेतनि। शुरुहे मे तत्तेटा पाथर राखि देल जेतनि जे ओही तर पिचाइत रहताह। लसकल रहताह। पौ-बारह बड़ाबाबूक आगू बला कुर्सी पर आबि क' बैसि जेताह। पेशल चाह आ' मीठा-पत्ता पानक आर्डर देथिन। बात-बात पर ठहक्का लगौताह। पूरा आफिस हँसत.....बाजत...। चुटकी मे अपन काज करा लेताह। जेबी मे बड़ा बाबूक लेल एक क्विंटल चीनीक परमिट रहतनि। डिलिंग क्लर्कक बच्चाक एडमीशनक जोगार रखताह। डायरी डिसपैचर लेल बिजली कनेक्शन। टाइपिस्ट लेल कनियाँक बदलीक आश्वासन। पौ बारह के देखितहि सम्पूर्ण आफिस अपन कलेजा हाथ मे ल' लेत। लोक' लागत ओकरा। ठोर पर अनार आ' फुलझड़ी छुट' लगतैक।

मुदा महतो कुर्त्ता, बण्डी नहि अछि। पौ बारह नहि थिक। ओ त' एकटा सर्वसाधारण कर्मचारी अछि एहि आफिसक। मालीक पद पर बहाली छैक ओकर। संयोगवश एहि आफिस मे कोनो फुलवारी नहि छैक तैं ओ साहेबक डेरा पर काज करैत अछि। साहेब के फूलक सख छनि। साहेबो सँ बेशी मेमसाहेब फूल क अलवत्त प्रेमी छथि। राशि-राशि के फूल लगौने। एक-एक फूलक सम्बन्ध मे विस्तृत परिचय रखनिहारि मेमसाहेब दुखक बात निसंतान छथि। बएस करीब पैंतीस के टपि रहल छनि मुदा उफ गजब के बॉडी रखने। एकदम कॉटल-छाँटल फूलक कोनो गाछ सन...। एक एकटा पात पोछल-पाछल। सभ, सभटा सुरेबगर।

भीतर सँ हुलकी मारैत हरियरी। रसक अजस्त्र धार जेना सम्पूर्ण गात मे हिलकोर मारैत हो। एहन पारदर्शी तना? कोना देखल होयत नहिये देखल होयत। मुदा सुनल त' भ' सकैये। समस्या छैक जे सुनौत के ? ककरा साहस छैक? फुलवारीक माली सुना सकैए। तैं सभ महतो के खींचि अनने रहए। स्टूल पर सम्मानपूर्वक बैसाओल गेलैक ओकरा। डिलिंग क्लर्क गुलाबरतन टोनि देलकै।

—महतो, तूँ त' चानी कटै छह ? नै !

—दुर ! अहाँ आउर के सदीकाल सैह सभ रहैए। महतो मुँह बिजका साफ जुआ पटकि देलक।

—हे, एकटा बात बूझल अछि बड़ा बाबू अहाँके ?' गुलाबरतन बड़ा बाबूके कहलक त' बड़ा बाबू मूड़ी उठा के तकलनि। चश्मातर सँ हुनकर आँखि मुसकुरा रहल छल।

—महतो के मेमसाहेब बड़ मानै छथिन। हुनकर फूल-पात सभटा यैह मेनटेन करैए। ठीक सँ सभटा सम्हारने आछि मरदाबा।

—हँ, हौ। सभटा तोंही सम्हारै छहुन ! बड़ा बाबू मुसकुराइते पूछि देलथिन महतो के। सभ मजा ल' रहल छल।

—कंथी सम्हारै छियनि हम ! हमरा की कोनो इलम अबैहए। अहाँ सभ ओहिनाती चौल करैत रहै छी। महतो गम्भीर बनल रहैए। टाइपिस्ट हरिशंकर मारैए झटहा।

—अरे, अहाँ सभ अनेरे एकरा तंग करै छियैक। मेमसाहेब सँ भरि मुँह गप्पो करबाक एकरा साहस छैक। हुनका दिस मुड़ी उठाक' त' ई देखिये नहि सकैत अछि। अच्छा, कह' त' महतो, आइ कोन रंगक साड़ी पहिरने रहथुन तोहर मेमसाहेब ?

—वाह रे ! से किए नहि देखबै। असमानी रंगक त' पहिरने रहथिन।

—आ' बेलाउज ?

—धत्त, से की जाने गेलिअइ। बेलाउज-तेलाउज हम थोड़बे देखै छियैक।

—बेलाउज-तेलाउज तोरा देखबाक काजे कोन छौ। तों त' असले...

गुलाबरतनक बात पर मारलक सभ ठहक्का....। एहिना जहिया क' महतो आबए आफिस मे। सभ आकरा मेमसाहेब क मादे पूछि कए मजा लिअए। मेमसाहेबक सौन्दर्य आ' निसंतान भेनाइ दूनू चकविदोर करए लोक के। बेशी लोक साहेबेक पुरुषार्थ पर शक करए। कनफुसकी मे मारितेरास गप्प होइक। लगभग सभ साहेबक डेरा सँ भ' आएल छल। कोनो ने कोनो व्याजें। सभ के मेम साहेबक दर्शन लाभ भ' गेल रहैक। किछु गोटा मेमसाहेबक अक्षत कौमार्यक दाबा करय मुदा किछु एकदम दाबाके संग कौमार्य भंगक घोषणा कर' लागए। बाजी पर बाजी लागै। मुदा एकर फड़िछौट करत के ? फड़िछौट करबाक कोनो आश्यकतो नहि रहैक। मोन मे मखान फुटबाक मजा अलग होइत छैक। फूलल-फूलल मखान!

महतोके नहि पसिन्न पड़ैक ई गप्प सभ मुदा ओ विवश छल। पूरा आफिसक तामस ओकरा बूझल छैक। ई बहिंचोद...बड़ा बाबू नमरी घाघ अछि। बूढ़ो मे छह दाँत छै। फौदाइते-फौदाइते तेना ने हबकै छै जे....। एकबेर बड़ा बाबूक बेटीक बियाह मे काज-उदम करै लेल नहि जा सकलै महतो त' कत्ते दिन भोग' पड़लै ओकरा। सभ दिन आबिक' हाजरी बनाब' पड़ै। किदन त' पढ़ा देलकै साहेब के जे ओकरा दुआरे आफिसक डिसिप्लीन खराब भ' रहल छै। सुद्धा छै साहेब। मानि गेलैक। महतोके भिनसर सँ दस बजे धरि साहेबक डेरा पर रह' पड़ैक । तकर बाद छह किमी० चलि क' आफिस आबय। बेरिया मे फेर साहेबक डेरा पर जाय। सौदा-सुलुफ करए। फूल-पत्ती मे पानि-तानि दैक। राति भ' जाइक डेरा जाइत। चलैत देह अंइठ जाइ। डेरा सँ साहेबक बासा तीन किलोमीटर दक्षिण। साहेबक बासा सँ आफिस छह कि० मी०। जइती-अबिती। फेर अपन डेरा। हाट-बजार। कुल अट्ठारह-बीस कि० मी० के डेली चक्कर भ' जाइक। मरि गेल ओ। जखन बड़ाबाबू के कत्ते गोहरौलक आ' तीन दिन जा कए किलो-किलो भरि माछ द' अएलैक तखन घमलै ओ। डेली हाजिरी बनौनाइ बन्न भलैक। आब हफ्ता दस दिन पर जाइए आ' सभटा हाजिरी एक्कहि दिन बना कए चल अबैए। तहिना ई बिल क्लर्क सीताराम सिंह एक बेर बिगड़ि गेल रहैक। सत्यनारायण पूजा मे फूलक व्यौत नहि क' देलकै तैं। कनियेटा बात लेल फगुआ मे एडभांस नहिएँ देलकै! ट्रेजरी बला सँ मीलि क' आबजेक्शन लगबा देलकै। फगुआ मे नहि भेटि सकलै पाइ। बाद मे भेटलै। कहिया सँ गछने रहैक कनियाँ के। फगुआ मे नुआ कीनि देतैक। नहियें कीनि सकलै। आइ-काल्हि कियो पैंचो-पालट नहि दैत छैक। जहिया सँ महतोक बहु के यूटेरस मे घाओ भ' गेलैक अछि तहिया सँ त' आर अशक्क भ' गेल अछि ओ। डाक्टर कहै छै आपरेशन कराब' पड़तैक। पाँच हजारक खर्चा छैक। कत' सँ औते पाइ ? बरख दिन सँ टारि रहलए तैं। रोग बढ़ले जाइत छैक। आब त' कोनो काजो नहि कएल होइ छै कनियाँ के। आपरेशन जल्दी करबैए पड़तैक। तीन हजार पी० एफ० सँ करजा भेट' बला छैक। एक हजार बड़ाबाबू गछने छै। असल मे डिलिंग क्लर्क गुलाब रतन आ' बड़ाबाबू दूनू मीलि के गछने छैक। पाँच-पाँच सए। एक हजार मेमसाहब सँ लेतै। चारि हजारक ब्योंत एहि आफिसक लोक पर निर्भर करै छै। कोंढ़ कखनहुँ के काँपि उठै छै महतो के कही फेर बिल क्लर्क सीताराम सिंह ने कोनो लकड़ी मारि दैक। सार, बड़ खच्चर छैक। गैसक बिमारी छैक ओकरा।

ठहक्का जखन थम्हलै त' बिल क्लर्क सीताराम सिंह पूछि देलकै महतो सँ,

—'महतो, आइ काल्हि त' तों बाहरे मे सुतैत हेबह।'

—'से कथी लए। घरे मे सूतैत छी। बाहर मे किए सुतब ?'

—'एही दुआरे जे घर मे सूति क' एखन बडौर करबही ? गुलाबरतन क बात पर फेर एकटा ठहक्का लगलैक। महतो खिसिया गेल। एकदम असर्द्ध लगलैक ओकरा ई बात सभ। राम...राम...केहेन घिरनित लोक सभ हए। खाली नजायज पइसा आ गन्हाइत गप्प। काज-उदम कुच्छो ने। ओ सोचलक। मुदा बाजल किछु नहि। कहीं किछु बजा गेलैक त' सरबा सभ सभटा चौपट्ट क' देत। अहिना बैसल रहब मुदा कठिन भ' गेलै। उठि कए ठाढ़ भेल। टाइपिस्ट हरिशंकर टोकि देलकै, 'आहि ! चलि देलह महतो ! एखन त' कत्ते गप्प बाँकिए छैक। मेम साहेब के उद्वेग लाग' लगलह की ?'

—'नहि, आब चलबै। तरकारी लेल अण्टा घाट जाइ कए हए।' महतो गम्भीर स्वरें बाजल।

—'अरे, बैसह ! बैसह ! तोंहू की सभदिन अबैत छह। हमहूँ सभ त' लोके छियै ने हौ। तोरा त' खाली मेम साहेब छोड़ि किछु सुझाइते नहि छह। हरदम मेमसाहेबक कोंचा मे नुकाएल रह' चाहैत छह।' डिलिंग क्लर्क गुलाबरतन खच्च सँ जेना भोंकि देलकै बात। महतोक मोन बिसबिसा गेलै। इस्स....। मुदा सिसकारी नहि निकल' देलक। ओ चुप्पे रहल। बड़ा बाबू लग सहटि के आएल। एकदम दीनताक संग पुछलकनि,

—'बड़ा बाबू ! पी० एफ० बला पइसा कहिया तक मीलि जेतइ ? अब अपरेसन एकदमे जरुरी हो गेल।'

—'दूर बहिं ! तोरा अपन पी० एफ० के चिन्ता लागल छह। हमरा सभ त' एखन बड़का चिन्ता मे पड़ल छी। की हौ, गुलाबरतन ! पुछही ने एकरा। जरुर ई पकिया बात कहि सकैए।' बड़ा बाबू चश्मातर सँ मुसकिआइत बजैत छथि। डिलिंग क्लर्क गुलाबरतन इशारा सँ महतो के अपना लग बजबैए। कनियें जोर सँ पुछैए ओकरा,

—अंए हौ ! एकटा बात कहबह। सुनै छी जे साहेब के मौगी सँ डर होइत छनि। बेर पर पैर थरथराए लगैत छनि। ल' ने चलह हमरे।' कहि क' एक ठहक्का लगौलक गुलाबरतन। महतो के बरदास्त सँ बाहर भ' गेलै। ओ पी० एफ०, टी० एफ सभटा बिसरि गेल। बामा हाथ सँ कालर पकड़ि के उठा लेलक गुलाबरतन के। दहिना हाथ सँ एक समधानल चमेटा लगौलक सिऔ सन गाल पर। तड़ातड़ तीन-चारि चमेटा घीचि देलकै। पूरा आफिस आश्चर्यजनक रूप सँ निस्तब्ध छल।



सनेश

नीन टूटल त' बुझायल जेना कियो कानि रहल अछि। हँ, ठीके कानि रहल अछि। कनबेक स्वर सँ निद्रा भंग भेल छल। सूतली राति क' के कान' बैसलए? एखने कने काल पहिने त' आँखि लागल रहय। पैरक दर्द तबाह केने छल। आइ-काल्हि तनाव से बढ़ि गेल अछि। सुतै सँ पहिने मनकथा लागल रहैए। डेली पचास मिलीग्राम के जेमीटोल खाइ छी त' नीन होइए। ताहि पर सँ ई आफत सभ...। मुदा कनैए के ? कोनो मौगीक आवाज त' नहि लगैए। अकानै छी त' स्वर बगल वला कोठली सँ अबैत बुझा पड़ैए। दिवाकर रविदास। की भेलै ओकरा? कान' किए बैसलए एते राति क' ? आफत क' देलक। एहि जाड़ मे के तुराइ तर सँ निकलत ? कान' दै छियै सार के। एक त' बैचलर रहू सेहो जाड़ मास, ओहिना नीन नहि होइ छै। कहैत रहए परसू यैह दिवाकर, 'बुझलहुँ मिसर जी ! एहि ठाड़ मे खाली तूर सँ काज नहि चलत। मासु चाही, गरम मासु...।' कहि असर्द्ध हँसी जे हँसने रहय। पान खाएल मुँहक दाँत निकलि गेल रहैक। पूरा काछु पसरि गेल छलैक। मुँहो जे छै से भगवानेक देल छै। आ नाक ? इह, लोढ़ी सँ नेना मे जेना माए थकुचि देने होइ। नाकक दूनू पूरा देखि क' त' हमर दूनू आंगुर सबसबाए लगैए। होइए जे दूनू आंगुर नाकक दूनू पूरा मे ठूसि दिअइ।

कानब किए नहि बन्द करैए ई। कती काल कानत बहिं। सुत' नहि देत। उठैए पड़त। गऔं सँ तुराइ हटबै छी। अन्हार गुज्ज घर मे हाथो नहि सुझा रहलए। टापर-टोइया दैत विजलीक स्विच पकड़ै छी। दबा दैत छियैक। रोशनी छिटकैए। ओकर कोठलीक केवाड़ बन्द छैक। केवाड़ बन्द केने अछि आइ। केवाड़ लग जा कए अकानै छी। कानब बन्द क' देलक। बूझि गेल भरिसक जे हम उठि गेल छी। उठिए गेल छी त' बूझि लियैक जे किए कनैत छल। केबाड़ खटखटबै छी।

'दिवाकर जी, दिवाकर जी !' जोर सँ बजै छी हम। कोनो जवाब नहि। दम साधि लेलक अछि। फेर केवाड़ पर थाप दैत छी।

—'दिवाकर जी ! केवाड़ खोलू। किए कनै छलहुँ अहाँ। की भेलए ?' ओ केवाड़ खोलि दैए। सामने ठाढ़ अछि दिवाकर रविदास। कोसी प्रोजेक्टक किरानी। हमर पार्टनर...। आँखि कनला सँ लाल छैक। नोर पोछि लेने अछि। बकर-बकर हमर मुँह ताकि रहलए। हम बाँहि पकड़ि क' अपन पलंग पर बैसबैत छी ओकरा। फेर पुछै छियैक'

—'किए कनैत रही अहाँ ? की भेलए ? कनियाँ मोन पड़ि गेलीह की ?' हमरा आर चौल करबाक इच्छा होइए। मौगी जकाँ घौना पसारने छलए सरबा।

—'किछु नहि मिस्र जी। ओहिना सोचा गेल त' कोँढ़ फाटि गेल। कोनो बात नहि। अहाँ अनेरे परीसान भेलहुँ।' दिवाकर रविदास आँखि झुकौनहि जवाब दैए। पक्का ई फूसि बाजि रहलए। बात के टारि रहलए। लाज होइ छै आब। हम लाज के उघार' चाहैत छी। बेपर्द कर' चाहैत छी ओकरा।

—'फुसि बजै छी अहाँ। किछु बात भेलए जरुर। किछु तेहेन बात जे अहाँक मर्मस्थल के बेधि देलकए। साँझो मे अहाँकें आइ उदास सन देखने रही।' हम झटहा फेकैत छी। कहीं टूटि के खसि पड़ए। मुदा ओ नहि टूटैए। डंटी मजबूत छै।

—'नहि, नहि। छोड़ू। की करब सुनि क'। हमरा सभहक करमे भगवान उलटा कलम सँ लीखि देने छथि। धौजनि सहबा लेल जनम लेने छी हम सभ...। एहिना चलतै दुनिया। अनेरे सभ बोली दैत छल।' ओ एकदम उदास स्वरें कहैए। ओ एखनो कानि रहलए। भीतरे-भीतर। हमरा कनै नीक लगैए। मजा आब' लगैए। किछु भेलैए जरुर एकरा। सभ फुड़फुड़ी निकलि गेल छै। खण्ड-खण्ड क' किछु दरकि रहल छै अन्तस्थल मे। हमरा इच्छा होइए जे ओहि दरारि के आंगुर घुसा क' आर पैघ क' दियैक। एकर सभ कबि 'ती झाड़ी दियैक। बड़ भाषण करैत छल। नैयाइक जकाँ जे गप्प छँटै छलए।

मिचरा-मिचरा क' बड़का-छोटकाक गप्प करै मे जे एकरा मोन लगै छलै। गुटबन्दी करब जे सोहाइ छलै। सामने मे त' नहि परोक्ष मे हमर खूब खिधांश करै छल। कते लोक कहए। अवध बिहारी झा त' अक्सर कहथि,

—'कोना रहैत छी अहाँ एहि हरिजन संगे से नहि जानि। आर कियो नहि भेटल पार्टनर ? कत्ते रास ब्राह्मण राजपूत छथि कोसी कालोनी मे। कोना निमहैए से नहि जानि।' हुनका कतबो बुझबियनि जे, औ ! की करु ? एत्ते नीक डेरा मँगनी मे कत' भेटत ? हम त' कोसी प्रोजेक्टक स्टाफो नहि छी। आन विभागक लोक के कोसी कालोनीक एते सुन्दर डेरा भेटिए गेलैक अछि सैह बहुत...। शहर

मे डेराक जे हाल छै से त' अहाँ जनिते छी। शर्माजी जे एक्जीक्यूटिभ इंजीनियर रहथि से हमरे लेल एकरा एलॉट क' देलथिन। हमर पूर्व परिचित रहथि। डेरा लेल कहलियनि त' कहलनि जे हमर प्रोजेक्टक कोनो स्टाफ के पटिआउ। कोनो बैचलर रहनिहार के। यैह भेटल। हमरे गाम लगक अछि। कोनो उपाय नहि छल। एकरे पटेलहुँ। एकरो असगरे रहबाक छलै। हमरे दुआरे तुरन्ते 'एफ' टाइप क्वार्टर एलॉट क' देलथिन शर्माजी। दूनू गोटा तैं संगे रह' लगलहुँ। एक्कोरत्ती हमरो की पसिन्न पड़ैए। मोन मारि क' रहैत छी।

—'औ बाबू ! अहाँ त' रहिते टा नहि छी संगे। लोक कहैए जे एहि करिलुठवा संगे सिनेमो देखैत छी। बजार घूमैत छी। से कोन बात भेलै ?' ओकरे कारणे झाजी कहियो क' धोप' लागथि।

—'दुर, की सिनेमा देखब। कोनो सख सँ देखैत छी। देखाबक लेल विवश क' दैए। हमरा संग देखबा मे बड़ नीक लगै छै एकरा। पाइयो हमही दैत छियैक। असल मे एकरे डेरा मे ने रहैत छियेक मंगनी मे। किराया त' एकरे दिअ' पड़ैत छै। हम एकरा सिनेमा देखा क' बहटारै छी आ ई मँगनी मे सिनेमा देखिक' हमरा सोधैए। हमरा की एक्कोरत्ती नीक लगैए। ताहि पर सँ ई तत्ते ने टोकैए सिनेमा मे जे अकच्छ भ' जाइत छी। एकर बाद की हेतैक ? ई कोन अभिनेत्री छियैक ? ई कत' के सीन छियैक ? बूझूत' तंग क' दैत अछि। कहै छियै जे हम आब अहाँ संगे नहि देखब त' दाँत निपोड़ए लगैत अछि। पोचकार' लगैए हमरा। गाम-जयबारक सप्पत दिअ' लगैए।' हम बूझब' लगैत छियनि झाजी के। मुदा ओ नहि मानैत छथि। हमरे दोख दैत रहैत छथि।

—'अरे, ई ब्राह्मणक कत्ते पैघ निन्दक अछि से अहाँ नहि जनैत छी। कट्टर दुश्मन अछि ई। हमरा त' होइए जे कहियो बेउरेब ने किछु क' दिअए अहाँके। एक्के डेरा मे रहैत छी। सम्हरिक' रहब।'

ओ जेठ हेबाक अधिकार सँ हमरा सावधान करैत छथि। एक दिन कह' लगलाह, 'ओ त' एकदम मक्खीचूस अछि औ। चूड़ा-घुघनी पर राति खेपि जाइये। नीक केने छी जे अहाँ दूनू कम सँ कम भोजन एक संगे नहि करैत छी। मुदा कहियो के त' जरुर सोधैत हैत अहाँके। कोनो बहाना सँ। आ कि नहि ? हमर मुँह दिस ताक' लागल रहथि अवध बिहारी झा। हम मुसकिया देने रहियनि। सत्ते कहियो के त' मुड़िए लैत अछि हमरा। मुद हमहूँ ओहि मक्खीचूस के फँसा लैत छी जाल मे कहियो काल। ई सभ बात लेकिन नहि कहलियनि हुनका। ओ त' जाबिर लोक छथि कोनो सुरतिये पता लगा लेनहि हेताह।

हम दरारि मे आंगुर लगाइये दैत छी। मोलायम सँ पूछि दैत छियैक।

—'के बोली दैत छल ? कथी बोली दैत छल ? अहाँ सभक त' एखन

राज अछि। भगवान त' ढरल छथि अहाँ सभ पर। अहाँ कहैतछी उलटा कलम सँ लिखने छथि। अहाँ सभक भाग त' एखन लहलह क' रहलए। जे चाहब से हैत।' दिवाकर रविदास एकटा पैघ साँस लैत अछि। नहुएँ नहुएँ बाज' लगैत अछि। जेना कोनो इनार सँ स्वर अबैत हो।

—'राज हमर सभहक की आओत मिसरजी। राजा आइयो अहीं सभहक अछि। अहीं सभक माने बड़के लोकक छैक। हमरो जातिक जे बड़का लोक भ' गेलैए तकरे राज छै। हमरो जातिक लोक जखन बड़का लोक भ' जाइए त' अहीं सभक जकाँ कर' लगैए। अहाँ लोकनि सभ दिन हमरा सभ के गाड़ि पढ़लहुँ। बेइज्जत केलहुँ। हमरा सभक बाप-पुरखा अहाँ सभक लात-जुत्ता तर मे रहल। हम सभ जखन बात बुझलहुँ त' मोन मे आक्रोश उपजल। घृणा भेल। खूब घृणा भेल। ई घृणा एखन कमो नहि हैत। किएक त' अहाँक सभ आइयो बदलल नहि छी। मुदा जे मुँहपुरुख सभ हमर अपन बनिक' अपने जातिक भ' कए आक्रोश उपजौलनि। घृणा जगौलनि। से स्वयं किछु बनि गेला पर हमरे सभ सँ घृणा कर' लगैत छथि। अहीं सभहक जकाँ गाड़ि पढ़ैत छथि। बेइज्जत करैत छथि।' कहि क' चुप्प भ' गेल दिवाकर रविदास। हमरा खुशी भेल। आइ एहि छिनरी साँए के किछु भेलनि अछि। बुझथुन सार। बड़ जाति-भाइ करै छलाह। आइ होश मे अएलाहे। ठंडा भेल छथि। हम अपन चेहरापर मुदा अत्यन्त कोमल भाव अनलहुँ। प्रेम सँ पोचकार' लगलहुँ ओकरा। आखिर की बात भेलैए से त' बूझी। बूझि क' सभ कबिलती घोसाड़ि देबनि।

—'मुदा कहू त'। बात की भेल छल ? किए एत्ते दुखी छी अहाँ ? ज्ञान प्राप्त क' कए लोक सुखी होइए। अहाँ त' कानि रहल छलहुँ। किए ?'

—'आइ पासवानजी, एक्जीक्यूटिभ इंजीनियर हमरा बड़ गाड़ि पढ़लनि। चोर, बेइमान कहलनि। मारलनि टा नहि सभ करम क' देलनि। चपरासी सभहक सामने मे बेइज्जत क' देलनि। किएक त' हुनकर धिया-पूता के हम ट्यूशन पढ़ायब छोड़ि देलियनि।' दिवाकर कहि रहल छल। ओ आगू कहलक,

—'एक त' एकोटा पाइ नहि दैत छलाह। उपर सँ कनियो लेट भेला पर मेम साहब डाँट-फटकार करैत छलीह। धिया-पूता सभ एक्कोरत्ती शिक्षक सन व्यवहार नहि करय। एक कप चाह तक नहि दैत छलथि कहियो। जेना हुनकर हम बेगार रहियनि। नोकरी जरुर करैत छी। किरानी छी। मुदा इंजीनियर साहेबक डेरा पर त' हम शिक्षक रहैत छलहुँ। शिक्षकक सम्मान त' हमरा भेटबाक चाहैत छल। अहीं कहू मिसरजी ? की हम कोनो बात अनर्गल कहैत छी।' दिवाकर रविदासक चेहरा तमतमा गेल छलैक। ओ उत्तेजित जकाँ भ' गेल छल। हमरा लोहा गरम बुझाएल। एक समधानल चोट देलहुँ।

—'मुदा अहाँ एहि लेल कान' की लगलहुँ मौगी जकाँ ? पुरुख जकाँ

जवाब दितियनि पासवान के। ओ गाड़ि पढ़लनि त' अहूँ गाड़ि पढ़ितहुँ। मारितहुँ सार के जे होइते से देखल जइतैक।'

—'हमरा त' ठकमुड़ी लागि गेल छल जेना ओहि काल। पता नहि किए किछु नहि क' सकलहुँ। बेइज्जतीक प्रतिरोध हुनकर मुँह पर नहि क' सकलहुँ। किछु फुड़ेबे नहि कएल। कोना की करी ?' दिवाकर रविदास कछमछ कर' लागल रहए। एकदम असहज भ' गेल छल। ठाढ़ भ' गेल रहए। कोठली मे बूल' लागल। कनिए काल मे चुपचाप अपन कोठली मे चल गेल। केवाड़ भिड़ा लेलक। कनबाक कारण अपन मुँह सँ नहिएँ कहलक। एकदम पिच्छड़ लोक अछि। गछलक नहि जे अपन विवशता पर कना गेलै। अपन कमजोरीक बात नहि मानलक। दीनताक स्वीकार अपमान बुझेलैक सरबा के। एत्ते पैघ अपमान सहिक' चल आयल। नेप चुआब' लागल। आब गछै मे बँहि.....।

ओहि घटनाक बाद हमरा संग कहियो सहज नहि भेल ओ। हमर संग आब नहि नीक लगै ओकरा। सिनेमा देखब बन्दक' देलक। बजारो घुमनाइ बन्द। ओकर संग एक क्वार्टर मे रहनाइ असम्भव होइत गेल। बाजा-भुक्की लगभग बन्दे छल। केवल आवश्यकता भरि गप्प करए। अपन समय ओ 'एच' टाइप क्वार्टर सभ मे धिया-पूता के ट्यूशन पढ़ा क' काटय। 'एच' टाइप मे कोसी कालोनीक चपरासी, दफ्तरी सभ रहए। भिनसर आ साँझ सँ अबेर राति धरि ओकर यैह क्रम रहैक। लोक कहय जे दरमाहाक अतिरिक्त ओ ट्यूशन सँ खूब कमा लैए। कमा ले बँहि...। किरानी भ' कए चपरासी सँ कमाइए, कोन नीक करैए। जमादार सिंह दफ्तरी राजपूत अछि। ओकरा पुछलियैक। ओ कहलक त' विश्वास नहि भेल। फी विद्यार्थी दसे रुपैया मास लैक दिवाकर रविदास। विश्वास करए बला बातो नहि रहैक।

अररिया मे एक बरख धरि रहलहुँ दिवाकर रविदासक संग। आखिरकार बदली भ' गेल त' जेना निश्चित भेलहुँ। पिण्ड छूटल। ह'...ह'...ह'...।

X X X

आफिस सँ अएलहुँ त' कनियाँ एकटा छोट-छीन डिब्बा दैत कहलनि, 'अहाँक कियो दोस आएल छलाह अररिया सँ। दिवाकर नाम छनि हुनकर। वैह द' गेलाहे ई सनेश।

—अरे ओ दिवाकर ! दिवाकर रविदास ! ओकरा बारे मे त' कहनहि छी सभटा अहाँके। मोन नहि अछि ? दूनू गोटा एक्के डेरा मे रहैत छलहुँ अररिया मे। देखी, की अछि एहि डिब्बा मे। हम उत्सुकता सँ डिब्बा खोलि क' देखलहुँ। दूटा औंठी छल ओहि मे। एकटा स्टील के, एकटा सोना के। स्टीलक औंठी त' हमरे छी। चीन्हि गेलहुँ हम। कोनो प्रदर्शनी मे दिवाकरे जबर्दस्ती किनबौने छल।

कहने रहए जे ई माछ खोधल औंठी नीक लागत अहाँक आंगुर मे। दू टका मे देने रहय। मुदा किछु दिनक बाद दिवाकर माँगि लेने रहय औंठी। अररिया सँ एहिठाम अयबाक किछु दिन पहुलका गप्प थिक। हम किछु बूझि नहि सकल रही। कहने रहय जे ओकरा पसिन्न पड़ि गेलइए औंठी। हमरे द' दिअ'। हम कने खौंझायल रही। मुदा खौंझाइयो के द' देने रहियै। सोचने रही दुर ! लेबे त' ल' ले। हमरा की नींक लगैए स्टीलक औंठी। सैह औंठी फेर सँ घुमा देलक अछि। मुदा ई सोनाक औंठी ! लाल रंगक पाथर लागल। हम पहिरि क' देखलहुँ। एकदम स्टीलक औंठी नापे बनल अछि। साइत अही दुआरे स्टीलक औंठी हमरा सँ माँगि लेने छल। हम डिब्बा मे राखल पुर्जी पढ़ैत छी। लिखने रहए दिवाकर।

मिसरजी,

एक बरख धरि हमरा लोकनि संगे रहलहुँ। ओहि बीच मे सात सए सँ उपरे हमरा पर अहाँक खर्च भेल होयत। रुपैया कोना घुराउ ? लिअ' ओहि राशिक सोनाक औंठी। स्वीकार करु।

दिवाकर

पुर्जी पढ़ि क' हमरा जेना एक बोतल निशां चढ़ि गेल। औंठी दिस तकलहुँ। ललका पाथर बला औंठी ओहिना चमचम क' रहल छल। हम खोलिक' तरहत्थी पर लेलहुँ। तरहत्थी पर राखल औंठी बुझाएल जेना गेहुमन सापक पोआ हो। साप बढ़ैत गेल। फेंच काढ़ि क' कुण्डली मारि लेलक। हम झमारि क' फेकलहुँ। धब्ब द' खसल। केवाड़क दोग सँ ललका पाथर लपलप क' रहल छल सापक जीह सन...।



राग-विराग

ओ दिल्ली सँ घुरि रहल छल। गाम जा रहल रहय। बस मे भेटल छल हमरा। बीस-एक्कैस बरखक नवयुवक। कने पिंडस्याम गोलायम मुँह मे उज्जर अनार दाना सन ओकर दाँत बड़ आकर्षक रहैक। साइत कोनो कुकुरदत्ता सेहो रहैक से जखन हँसय त' देखार होइ। से कुकुरदत्ता ओहि नवयुवकक सुन्दर सम्पत्ति रहैक। एहेन सम्पत्ति जकरा देखिक' हिलस लागि जाय। ओ बड़ प्रसन्न रहय। एतेक प्रसन्न रहय जे अपन प्रसन्नता लुटाब' चाहैत छल। कोनो बात पर हँसी सँ ओ हमरा अपना दिस आकर्षित केने रहए। ओकर हँसी जलतरंग सन बजैत रहैक। हम ओकरा सँ गप्प कर' लागल रही। संयोग सँ बसक एक्के सीट पर बैसल छलहुँ। ओ कहि रहल छल,

—'दिल्ली सँ आबि रहल छी। गाड़ी मे बड़ भीड़ रहैक।'

'रिजरबेसन नहि रहय की ?' हम पुछलियैक।

—'रिजरबेसन त' छलए।'

—'तखन कोन दिक्कत ?'

—'दिक्कत कोनो नहि !'

—'सूति नहि सकलौं की ?' ओ आब गुम्म भ' गेल छल। लागल ओ बाज' नहि चाहैए। हमरा त' उत्सुकता जनमि गेल छल। किएक नहि सूति सकल ई ? लोक भीड़ो मे त' सूतिते अछि। मुदा पूछ' नहि पड़ल। ओ अपने कहलक,

—'कोना क' सुतितियैक। ओ सभ त' कहैत छलाह जे सूति रहू। मुदा हमरा सूतल नहि भेल।'

—'से किए ? बर्थ अहाँके छल त' रोकनिहार के ? आ कहनिहार के ? पाइ द' क' रिजरबेसन करौने रही त' सुतबाक ने चाहैत रहए। पाइ बूड़ि गेल की?'

—'नहि, नहि, पाइ किए बूड़त ?

—'तखन सुतलौं किएक नहि ? किएक नहि सूतल भेल ?'

—'सुतबाक जगहे नहि रहल। ओ सभ बिना रिजरबेसनके छलाह। हुनका सभके गाम जायब जरुरी छलनि। रिजरबेसन नहि भ' सकलनि। हमर वर्थ लगमे आबि क' ठाढ़ भ' गेलाह। लागल जेना अपने देसक लोक छथि। बैस' लेल कहि देलियनि। आब तीन-तीन गोटा केना एकं वर्थ पर सूति सकितहुँ ?

—'तखन त' भरि राति बहुत कष्ट भेल हैत ? तीन गोटे एक्के बर्थ पर भरि राति ! एकदम्मे बैसले रहि गेल होयब। नै ?' हम सहानुभूति देखेबाक प्रयास केलहुँ। मुदा ओकरा लेल धन्न सन। ओ त' मगन रहय। सहानुभूतिक ओकरा कोनो प्रयोजन नहि रहैक। कहलक,

—'बैसले रहि गेलिअइ त' की भेलइ ? कत्ते बेर त' कत्ते-कत्ते दूर ठाढ़े आयल छी। मुदा हुनको सभके सीट भ' गेलनि। अकस्मात् गामसँ टेलीग्राम आयल रहनि। दियाद सँ खेत-पथारक झंझटि बजरि गेल रहनि। जायब जरुरी। दुनू बाप-पूत अकस्मात् बिदा भ' गेल छलाह। सहरसा दिसक रहथि ओ सभ। सोझे बरौनी चल गेलाह। हम पटना मे उतरि गेलहुँ। बहुत नीक लोक सभ रहथि। हमर उतरबाक काल दुनूक आँखिमे नोर भरि गेल रहनि।' कहिक' ओ कनेकाल लेल चुप्प भ' गेल रहय। चेहरा पर उदासीक एक टिक्कड़ मेघ जेना बरसि गेलैक। हमरा सह्य नहि भेल। एहि नवयुवकके उदासी नहि शोभै छै। हम पूछि देलियैक,

—'किए ? उदास किए भ' गेलहुँ ? ई सभ एहिना होइ छै। यात्रा मे कत्ते लोक भेटै छै। फेर फराक भ' जाइ छै। यैह त' जीवन थिकैक। एहि लेल उदासी किएक ?'

—'नहि, कोनो उदासीक गप्प नहि छै। ओ सभ भरि रस्ता हमरा माथ पर चढ़ौने रहथि। एक्कोटा पाइ खर्च नहि कर' देथि। चाह पीबू। कोनो चीज खाउ। कोनो चीज लेल हम पाइ खर्च नहि क' सकैत छी। हमरा बड़ रीष चढ़य। मुदा तेना ने बूढ़ा आ हमरे संगतुरिया हुनकर बेटा कर' लागथि जे हमरा चुप्प भ' जाय पड़ए। की क' सकैत छलहुँ ?' ओ नवयुवक एहि कारणे क्षुब्ध छल जे सहयात्री ओकरा पाइ खर्च नहि कर' देने रहैक।

—'त' भरि रस्ता अहाँके एक्कोटा पाइ खर्च नहि भेल ?' हम पूछि देलियैक।

—'इह, हम मानइबला छलिअनि। चोराक' डिब्बा सँ उतरलहुँ। एक किलो सिऔ कीनि लेलहुँ। आबिक' कहलियनि जे लिअ' खाउ।'

—'तखन त' ओ सभ बिगड़' लागल हेताह।'

—हँ, बिगड़' त' लगलाहे। जे अनेरे किएक केलहुँ खर्च। मुदा आब

करितथि की ? खेबे केलनि। तीनू गोटे खेलहुँ सिऔ।' ओ हँसल। फेर जलतरंग बजल। हमरा अपनाके रोकल नहि भेल। पूछि देलियैक,

'—अहाँ दिल्ली कहिया गेल रही। ओहीठाम रहैत छी की ? की करैत छी ओत' ?' ओ जेना आर उल्लसित भेल रहए। संकोचक कोनो चेन्ह कतहु नहि देखाइ देलक। साइत ओकरा लग गोपनीय कोनो बात नहि रहैक। ओ सहजें मुसकुराइत कह' लागल,

—'आब त' बरख लागि गेल दिल्ली मे रहैत। डरेभरी करैत छी ओत'। एकटा सेठजीक गाड़ी चलबैत छी। सेठजीक ओहिठाम रहैत छी। बरख दिन पर गाम जा रहल छी। अबैए ने दैत छलाह। मुदा आएब जरुरी भ' गेल त' नहि रोकलनि। अन्तधरि कहैत रहलाह जे दू मास मे जरुर चल आबी।'

—'की दुइए मास गाममे रहब ? तकराबाद फेर दिल्ली चल जायब ?' हमर प्रश्न सूनि ओ कने गम्भीर सन भ' गेल रहए। जेना कोनो असमंजस मे पड़ि गेल हो। हमरा लागल भरिसक ओ एहि मादे कोनो निर्णय नहि केने अछि। निर्णय आसानो नहि छैक। गामक लोक-वेद। स्नेह, आत्मीयता। सुख। मोन मे आएल एहि नवयुवक लेल माए-बाप कतेक अहुरिया कटैत हेतैक, अभावक कारणे जाय त' देने हेतैक परदेस मुदा दिन गनैत होयतैक जे कहिया घूरिक' आओत। पहुँचतैक त' माए आंचरतर मे झाँपि लेतैक। ममताक सुरसरिधार बह' लगतैक। बाप उल्लास मे बौआए लगतैक। बहरी-आंगन कर' लगतैक। कलेजा सूप सनक' कए टोल पड़ोस मे घुमतैक। ओकर बेटा दिल्ली कमाइ छैक। एहि गौरव-बोध सँ बाप हलसैत-फुलसैत रहतैक। नवकी पितिआइन आ भाउज सभ ओकरा नडो-चडोक' देतैक। दिल्लीक गप्प खोधि-खोधि क' पुछतैक। सर-समाजके एकर गप्प-सप्प सुनि चकविदोर लगतैक। लोक दांते-आंगुर काटत। त' ई छौंड़ा एते पैघ भ' गेलैक। बुझनुक जकाँ गप्प करैत छैक। यैह कनिऐं दिन त' भेलैक अछि धूरामे लेढ़िआइत रहैत छल। धरिया पहिरने, की जंघिया पहिरने बौआइत रहैत छल। आब फुलपैंट पहिरैत अछि। कमीज पहिरैए। कपार पर कारी केशक लट्ट उड़ियाइत रहैत छैक।

हम नवयुवक दिस तकैत छी। बसक खिड़की लग बैसल रहबाक कारणे ठीके ओकर केश हवा मे उड़िया रहल छलैक। ओ एखनोधरि हमरा गम्भीर बुझाएल। किछु सोचैत सन। बससँ भागल चल जाइत गाछी-बिरछी, घर-खरिहान के देखि रहल छल। दृश्य पर दृश्य पाछू छुटि रहल छलै। बस आगू बढ़ि रहल रहय। हमरा अनुभव भेल जे हमर प्रश्न ओकरा दुख द' देलकैक अछि। एहि दुख सँ कहुना बाहर निकालि लेबाक चाही। पुछलियैक,

—'दिल्ली मे सेठानी त' खूब मानैत हेती अहाँके ? खइ-पीयै लेल किसिम-किसिम के चीज वस्तु दैत छली की नहि ?' ओकर चेहरा पर हमर प्रश्न

सँ जेना विजलोका चमकलैक। एहि विजलोका सँ ओकर अन्तरमन मे एकटा इजोत क्षण भरि लेल पसरि गेलैक। बाजल,

—'इह, सेठानी त' हमर सेठानिए छथि। एहन नीक लोक परदेश मे कियो नहि भेटल रहए। हमरा बड़ मानै छथि। बड़ चिन्ता-फिकिर रहैत छनि हमर। कहियो क' हम रुसियो रहैत छलियैक त' कोनो ने कोनो बहाना सँ मना लैत छली। हमहूँ हुनका मम्मी कहैत छियनि। दूटा धिया-पूता छनि। दस बरखक मनीष आ सात बरखक पूजा। दुनू मम्मी कहैत छैक त' हमहूँ कह' लगलियैक।' ओकर चोहरा पर सँ सिंगरहार झड़' लागल रहैक।

—'त' अहाँ रुसितो छलियैक ? रुसैत छलियैक त' ओ मनाइयो लैत छली ? से कोना ?' ओकर लाजक गुलाबी रंग देखिक' हम आब खेत-खलिहान लुटाब' पर विर्त्त भ' गेल रही।

—'कंते बेर रुसियैक। रुसियै त' बाजा-भुक्की बन्द क' दियैक। एक बेर त' दू दिन धरि नहि बजलियैक। मुँह फुलौने रहलियैक। मम्मी हमरा सँ गप्प करबाक लेल व्याकुल रहथि। जखन घर मे आबी त' हमर चारुकात घुरिआइत रहथि। मुदा हम त' तामसे माहुर भेल रही।'

—'त' अहाँके तामसो होइत अछि ? आ तामस भेला पर रुसियो रहैत छलियैक। मुदा एतेक तामस किए भेल रहय ?

—'की कहैत छी। तामस किए नहि होयत ? सेठजीक सोनाक औंठी कतहु हेरा गेल रहनि। ओहिमे हीरा जड़ल रहैक। सौंसे औना रहल छलाह ओ। मम्मी के कहलथिन। मम्मी हमरा पूछि देलनि जे हम औंठी कतहु देखने छी ? हमरा भेल जे ओ हमरा पर इलजाम लगा रहल छथि। हमरा पुछलनि किए ? हम किए हुनकर औंठी लेबनि ? देखने रहितियैक त' द' नहि देने रहितियनि। हमरा बड़ दुख भेल। तामसो खूब उठल। कहलियनि जे हम आब एहिठाम नहि रहब। अहाँ ई बात कोना सोचलहुँ जे हम औंठी चोरा सकैत छी ? बाद मे ओ सभ बहुत कहलनि जे हमरा सँ ओहिना पूछि देने रहथि। ई सोचिक' नहि पुछने रहथि जे हम चोरा सकैत छी। मुदा हमरा त' पित्त लहरल छल। घर त' नहि छोड़लहुँ। खेनाइ-पिनाइ छोड़ि देलियैक। बाजब-भुकब बन्न क' देलियैक। चुपचाप सेठजी संग जाइ आ गाड़ी चलाबी। सेठजी खाइ लेल पुछथि। हम किछु नहि बाजी। ओ बिगड़ि जाथि। फेर चुप्प भ' जाथि। अपन काजमे लागि जाथि।'

हम छगुन्ता मे पड़ि गेल रही। एहन पित्तो नहि देखलए। पित्त मे खेनाइ-पिनाइ बन्द। अनशन कर' लागब। भूखो नहि लगैत रहैक की ? कत्ते दिन एना कियो भूखल रहि सकैत अछि ? आ कत्ते दिन कियो एक ड्राइभर के एना बरदास्त क' सकैत छैक। आब हमरा मोन हुअ' लागल जे आखिर कहियो आ कोना ओ

खयलक ? कोना ओकर पित्त शान्त भेलैक ?

—'कते दिन एना पित्त चढ़ल रहल अहाँके ? कत्ते दिन भूखल रहलियैक? आ कोना खेलियैक ? के खुऔलक ?' हमर प्रश्न सुनि ओ कछमछ कर' लागल रहय। हम देखलहुँ ओकर आँखिमे डबडब नोर भरि आएल छैक। कही बह' ने लागइ। एहि नवयुवक के त' नोर रोकलो नहि हेतैक। ठीके। टप्प सँ दू ठोप नोर चूबि गेलैक। हमर कलेजा पर जेना बर्च्छी भोंका गेल। ओ नवयुवक जेबी सँ रुमाल निकालि अपन नोर पोछलक। नाक पोछलक। आश्वस्त सन भेल कने। फेर बाजल,

—'ओह की करितियैक ? मम्मी बड़ उदास भ' गेल रहथि। सभ जतन हुनकर फेल भ' गेलनि त' हमरा लग आबिक' बैसि गेली। हमरा बुझाएल जे आब ओ कान' लगतीह। हमर मोन कोनादन कर' लागल। सभटा पित्त आ तामस धोखर' लागल। पुछलियनि जे मम्मी, की बात छै, की कहै छी ? त' ओ कहलनि जे तों खा लैह। हमरा अब नहि सहल जाइए। हम कहि देलिअनि जे दिअ' खाइ लेल। खा लैत छी। अहाँ एहि लेल कानू जुनि। ओ थाड़ी मे सभटा मारिते रास चीज-वस्तु सांठि क' अनलनि। सभटा कहथि खाइ लेल। मुदा दू दिनक भूखल हमर पेट के बेसी खाइये नहि भेलैक। कनिऐं खाक' उठि गेलियैक। कहलियनि जे रातिमे बेसी ठीक सँ खेबैक। ओ मुदा प्रसन्न भ' गेल रहथि। स्टिरियो पर हरिओम शरणक भजन सुन' लागल रहथि।' कहिक' ओ चुप्प भ' गेल रहय।

—'त' मम्मी अहाँके बड़ मानैत छथि ने ? एहन मानइबला त' कम्मे लोक होइ छै। ओ अहाँके एतेक किएक मानैत छथि से सोचिलियैक अछि ? बुझलियैक अछि बात ?' हम पूछि देलियैक। पूछि त' देलियैक मुदा वास्तव में हम अपनहिं सोच' लागल रही।

—'की जान' गेलियैक ? पता नहि सभ किएक एत्ते मानैत अछि हमरा ?

—आ सेठजी ?

—'ओह, सेठजी त' अद्भुत लोक छथि। छने मे बिगड़ताह त' अकास माथ पर उठा लेताह। फेर लगले शान्त। खोज-खबरि, आवेस-पाति कर' लगताह।'

—'ओ बिगड़ैत छथि त' अहाँ की करैत छी ? औ बाबू, अहूँ त' बड़ तमसाह लोक छी।' हम मुसकुरा क' पुछने रहियैक। ओकर ठोर कने आर पसरि गेलैक। एते पसरलैक जे कने कुकुरदत्ता देखाइ द' गेल हमरा। ओ बाजल रहए,

—'ओ तमसाइ छथि त' हम चुप्प रहैत छी। आ जखन हम तमसाइ छी त' ओ चुपचाप रहैत छथि। किछु ने बजैत छथि।' हमरा हँसी लागल। दुनू गोटे एहिबेर हँसलहुँ। मुदा दुनूक हँसी मे फरक छल। बस मुजफ्फरपुर सँ आगू निकलि

गेल रहए। बेनीबादक नजदीक पहुँचि रहल छल। ओ नवयुवक फेर सँ प्रकृतिके खिड़की द' के निहारि रहल छल। मुदा हमरा ओहि नवयुवकके देखैत अनेक जिज्ञासा जागि रहल छल। सेठ आ सेठानीक स्नेह अनसोंहात लागि रहल छल। किछु बात छैक जरुर, हम सोचलहुँ। पुछलियैक अकस्मात,

—'अहाँके दरमाहा कत्तेक दैत छथि सेठजी ?'

—'एक हजार दैत छथिन।'

—'ड्राइभरीक अतिरिक्त आनो कोनो काज करैत छियैक अहाँ घरक ?'

—पहिने त' नहि करैत रहियैक। मुदा छह मास पहिने घरक जे नोकर रहैक से पड़ा गेलैक। हम काज सम्हारि देलियनि मम्मी के। हमर काज सँ बड़ प्रसन्न रहथि ओ। नोकर ठीक सँ काज नहि करनि। बाद मे हमही ओकरो काज कर' लगलियैक। दोसर नोकर रखबे नहि केलनि।' हमरा आब अर्थ लाग' लागल रहए। पुछलियैक,

—'अच्छा, कहू त' ओहि नोकर के कत्ते पाइ दैत छलथिन ?'

—पाँच सए टाका।' हमरा आब अर्थ स्पष्ट भ' गेल रहए। ओ त' से बात छैक। सुआइत...। ई सभ बात सोचिये रहल छलहुँ कि ओ हमरा सँ पूछि देलक,

—'कत्तौ सँ महुअक सुगन्धि आएल अछि। अहूँके लागल की ? लगैए कतौ रस्तामे एखने महुअक गाछ छल। तकरे सुगन्धि पसरि रहल छल।' हमरा ओकर दिल्लीक स्मृति सँ बेनीबाद लगक महुअक सुगन्धि पर आएब नीक लागल। कहलियैक,

—'महुअक सुगन्धि अहाँ चिन्हैत छी ? बिसरलौं अछि नहि।' 'नहि बिसरबैक किएक ?' ओ जेना लजा रहल छल। हमर मोन बदमासी कर' लागल। चौल करबाक इच्छा भेल। पुछलियै,

—'अँए यौ ! कहू त' अहाँक वियाह भेल अछि की ?' पूछिक' हम ओकरा दिस ताक' लागल रही। हे, ईश्वर ! एहन सुख कहियोकाल दैत रही अहाँ।

—'हँ, बियाह त' भ' गेल अछि। दुरागमने लेल ने जा रहल छी गाम।' कहिक' ओ नवयुवक मूड़ी कने गोंति लेलक। आब ओ अपन दुनू आँखिमे मुसकुरा रहल छल। हम आनन्द सँ भरि उठलहुँ।

—'ओ, सैह त' कहैत छी। अहाँके सुआइत महुअक सुगन्धि लगैत छल। दुरागमन लेल जा रहल छी। तखन अहाँ दू मास मे दिल्ली कोना घुरि सकब ? दू मास त' छने मे बीति जायत। कनियाँ एत्ते जल्दी जाए देती अहाँके ? आब सेठ आ मम्मी के त' बिसरिये जेबनि अहाँ।' ओ नवयुवक कने अप्रतिभ सन भ' गेल। लगले बाजल रहए,

—'नहि, नहि, हुनका सभके कोना बिसरि जेबनि ? ताहि पर सँ दिल्ली नहि जेबै त' खेबै की ? आब त' दिल्ली जायब आर जरुरी भ' गेल अछि। बाउ आ माएक संग ओकरो खर्ची हमरा आब जोड़ए पड़त ने?' कहिक' ओ नवयुवक हमरा दिस ताक' लागल। हमरा लागल जेना ओ हमर स्वीकृति चाहि रहल अछि। ई बात हमरा भीतर छटपटी छोड़ा देलक। लागल बहुत सहजता सँ जेना ई नवयुवक हमर भीतर पैसि गेल अछि। एकरा हम आब खाली देखि नहि सकैत छी। ई त' आब हमर अंग भ' गेल अछि। कहलियैक,

—'सभक खर्चा जोड़बाक लेल अहाँके अपन आमदनियो बढ़ाब' पड़त की ने ? आ से, सेठजीक ओहिठाम रहला सँ नहि हैत। सेठ-सेठानीक मोह अहाँके छोड़' पड़त।' ओ नवयुवक अकचकाएल। एहिबात लेल ओ तैयार नहि छल। ओकरो जेना कछमछी छुटि गेलैक। भीतर मे जेना उघड़ा-भांड़ हुअ' लगलैक किछु। पुछलक,

—'से किए ? किए छोड़ि दिअ' हुनका ओहिठाम नोकरी। एत्तेक मान-दान, आबेस कत' भेटत ? कतेक मानैत छथि ओ सभ...आ मम्मी...।' कहिक' ओ चुप्प भ' गेल। हमरा लागल जेना ओकर सौंसे देह तप्त भ' गेल छै। एखन जँ थर्मामीटर लगाओल जाइ त' बोखार भ' गेल हेतैक एकरा। हम ओकरा दिस तकैत छी। ओकर कारी केशक लट्ठ ओहिना हवा मे उड़िया रहल छलैक। हम बलजोरी अपन ध्यान केश सँ हटबै छी। अपन आँखिके ओकर आँखिक सीध मे अनैत छी। आ बाजि उठैत छी।

—'एकटा बात जनै छियै। ई बात गाम-घरमे जरुरे सुनने हैब अहाँ। माय सँ बेसी जे मानय से डाइन होइत छैक।' ओ ओहिना हमरा दिस तकैत रहैत अछि। हम देखैत छी ओकर आँखिमे हमर चेहरा स्थिर भ' रहल अछि। बस दरभंगा मे प्रवेश क' रहल छल...।



आबेस

आइ दिनेश बाबूक बालक महेशक अबैया रहैक। ट्रेन सँ। ट्रेनक समय भिनसर सात बाजि क' पच्चीस मिनट पर रहैक। दिनेशबाबू दूनू बेकती स्टेशनपर रहथि। ट्रेन अयबामे देरी रहैक। एक घंटा विलम्बसँ अयबाक सूचना प्रसारित भ' रहल छल। बेंचपर दूनू गोटे बैसल रहथि। बेटाक अयबाक प्रतीक्षामे। छओ मास पूर्व महेश होस्टलमे गेल छल। पहिले बेर माए-बाप लग घुरि रहल छल। दूनू बेकतीके बेटासँ भेटक उत्कंठा रहनि। दिनेशबाबू के पिता आइ बेसी मोन पड़ि रहल छलथिन। पिताक रूप अपनामे देखबाक कोशिश क' रहल छलाह।

दिनेश बाबू नोकरी मे छथि। अपन जीवनसँ असंतुष्ट छथि। बापक अमलदारी मन पड़ैत रहैत छनि। की जीवन रहय। केहेन हुनक छत्रछाया छल। बापो सँ बेसी पितामह कतेक मानथिन हुनका। पितामही कतेक दुलार करथिन। कतेक खिस्सा-पिहानी पितामहीसँ सिखने छथि। कत्ते श्लोक सभ पितामहसँ सिखने रहथि। मुदा अपन धिया-पूताके कहाँ किछु सिखा सकलाह। जीविकाक खातिर कत' कत' ने घुमलाह। कतेक ठाम बदली भेलनि। इच्छा होइत छनि जे कतहु एकठाम रहितहुँ। खूब पाइ कमेतहुँ। खूब खर्च करितहुँ। बहुधा ओ सपना देखैत छथि जे कतहुसँ बहुत रास धन भेटि गेल अछि। सोचैत रहैत छथि जे धन भेटलापर कोना खर्च करब। एना खर्च करब जे लोक जयजयकार कर' लागत। श्रद्धासँ झुकि जायत। चकविदोर लागि जेतैक। सर-सम्बन्धिक दासो-दास भ' जायत। इलाका-परोपट्टाक लोकक धर्रोहि लागि जायत।

दिनेश बाबूक नजरि अखबारक राशिफलपर सभ दिन टिकैत छनि। कोनो समाचारसँ बेसी हुनका राशिफल पसिन्न छनि। राशिफलोमे आन पाँतीसँ बेसी 'रुका हुआ धन मिलेगा।' 'अकस्मात् धन प्राप्ति का योग। धन लाभ, आर्थिक सम्पन्नता, अकस्मात् बकाये धन की प्राप्ति' आदि बेसी नीक लगैत छनि। मुदा

एहन सौभाग्य एखन धरि भेटल नहि छनि। बेटा महेश नीक पढ़ैत छनि। चन्सगर छनि। किलासमे फर्स्ट करैत छनि। बेटी सुषमा सेहो बढ़िया क' रहल छनि। ओ दसमा किलासमे पढ़ैत अछि। महेशके राँचीक स्कूल मे एडमीशन लेल परीक्षा दियौने रहथिन। बेटाके ओ नामी स्कूलमे पढ़ाब' चाहैत छलाह। गौरब-बोध कर' चाहैत छलाह। महेश सफल भ' गेल रहय। दिनेश बाबू प्रसन्न भेल रहथि। महेश होस्टल चल गेल। स्कूल मे पढ़' लागल। दिनेश बाबूक पत्नी अनीता नहि चाहैत रहथि जे महेश होस्टलमे रहि क' पढ़य। ओ अपना लगसँ धिया-पूताके फराक नहि कर' चाहैत छलीह। ओ होस्टलक विषयमे बहुत गप्प सुनने रहथि। सुनने छलीह जे होस्टलमे रहनिहार बच्चा माए-बापसँ उदासीन भ' जाइये। ममत्व आ श्रद्धा नहि रहि जाइत छैक। उस्सठ भ' जाइत अछि। ओ दिनेश बाबूके मना केलथिन। कहलथिन जे होस्टल मे किएक पठबैत छियैक ? डेरे पर रहि क' एहीठाम पढ़त त' की हेतै ?

दिनेशबाबू कहने रहथिन—'अहाँ बाते नहि बुझैत छियैक। अरे, नीक स्कूलमे एडमीशन भेलैक अछि। ओहिठामक सभ विद्यार्थी बढ़ियाँ बहराइत छैक।'

—'पटनोमे तँ नीक स्कूल छैक। अपना लग रहत त' ठीकसँ ताकूती हेतैक। खायत-पीयत। अपन आँखिक सोझाँ रहत। ओत' कोना की रहत ? एखन बएसे की भेलैक अछि। एगारहम चढ़बे केलैक अछि।'

अनीताक कण्ठ बाझि गेल रहनि। दिनेशबाबू पराभवमे पड़ल रहथि। अनीतापर क्रोध भेलनि। बिगड़लाह—'अहाँके एक्कोरत्ती ज्ञान नहि भेल अछि। ओकरे नीक लेल ने पठा रहल छियैक। घरमे रहिक अध्ययन सम्भव नहि होइ छै। अहाँक स्नेह-दुलारमे पड़ल रहत तँ ठीकसँ पढ़ि नहि सकत।'

क्रोध मे दिनेशबाबू मारुक बात बाजि गेल छलाह। एहि बातक ज्ञान भेलनि। मुदा बजलाक बाद। अनीताके बात लागि गेल रहनि। हुनकर आँखिमे नोर छलछला उठलनि। बजलीह—'हम त' ओकर दुश्मन छियैक ने। हमर स्नेह-दुलार मे दूरि भ' जायत। दूरि क' देबै हम। सैह ने अहाँ कहैत छी।'

दिनेश बाबू फँसि गेल रहथि। मुदा पाछू नहि हटि सकैत छलाह। तर्क पर उतरलाह—'हम की कहैत छी? ई तँ परम्पराक गप्प छियैक। शुरुहेसँ बालकके माएसँ फराक क' देल जाइत छलैक। गुरु लग रहि क' अध्ययन करैत छल। माए लग रहि क' कहाँ कियो पढ़ैत छल। हमहूँ माए लग नहि पढ़लहुँ। बाबूजी संग रखलनि। हुनके लग रहि पढ़लहुँ-लिखलहुँ। हमर माए तँ अपने कहने रहथिन जे बौआ के लेने जइअउ। एहिठाम रहि पढ़ि-लीखि नहि सकत।'

बात आब भावनासँ हटि क' तर्क पर चल आएल रहए। अनीता सेहो तर्क पर उतरलीह। मुदा तर्क भावनामे सानल छल। बजलीह—'से अहाँके माए

करेजपर पाथर राखि क' कहने हेथीन। सभ माए करेजपर पाथर राखि क' सन्तानके फराक करैए। ओना सन्तानक मामिलामे माएक मोजरो कहियो नहि रहलैए। माएके पुछै के छलैए ? दोसर, अहाँक माए गाममे रहथि। गाममे स्कूल नीक नहि रहल हेतैक।'

दिनेश बाबूके आब जवाब फुरा नहि रहल छलनि। बेसी क्रोध नहि क' सकैत छलाह। कहुना अनीताके मनेबाक छलनि। कहने रहथिन—'देखू, किछु प्राप्ति लेल किछु त्याग सेहो कर' पड़ैत छै। यदि बेटाक नीक भविष्य बनत तँ हमरो सभक जीवन सुधरत ने। मोह छोड़ू।' मुदा अनीता सहमत नहि भेल छलीह। चुप्प भ' गेल रहथि। महेश होस्टल चल गेल रहय। मोह अनीता नहि छोड़ि सकलीह। मोह दिनेश बाबू सेहो नहि छोड़ि सकलाह। कहियोकाल अनीता फेरसँ प्रसंगके खीचि क' ल' आनथि। पतिक संग खट्सम्वाद करथि।

—'सुनै छी। देखियौ अखबारमे की निकललै अछि। एकटा बच्चाके ओकर सीनियर सभ भरि राति नंगटे रखलकै। बच्चाके ई बात तत्ते असरि केलकै जे ओकर दिमाग खराब भ गेलै। फेर कहियो कहथि—'सुनियौ। की भेलैए ! मास्टर तत्ते मारलकैक बच्चाके जे ओकर कान खराब भ' गेलै।'

दिनेश बाबू हुनका बुझेबाक चेष्टा करथि। कखनो बिगड़ियो जाथि।

—'देखू ! एहन घटना सभक संग थोड़बे घटि सकैत छैक ? एतेक बच्चा सौंसे देश मे होस्टलमे रहि पढ़ैत अछि। एहन बात ककरो-ककरो संग होइत छै। एहि दुआरे लोक बच्चा के होस्टल पठाएब छोड़ि देत ?'

मुदा अनीता माननिहारि नहि। कहथि—'होस्टलमे के पठबैत अछि अपन बच्चाके, से जनैत छी। जकरा बच्चाके सजाय देबाक होइत छैक। जकरा ताकूती करबाक फुर्सति नहि रहैत छैक। जे दूनू बेकती मौजमस्ती कर' चाहैत अछि। मुदा हमरा सभके तँ ई सभ किछु ने छल ? तखन अहाँ किए पठौलियै। ओकरा किछु भ' जेतै तखन ?' अनीता आक्रोश मे आबि जाथि। दिनेश बाबू सेहो उत्तेजित भ' जाथि। कखनहुँक' चिन्तित सेहो भ' जाथि। महेशपर अपन छत्रछायाक अभाव खटक' लगनि। अपना लगसँ दूर होयबाक चिन्ता आशंकित क' देनि।

दिनेश बाबूक पिता पूर्णिया मे कमाइत छलथिन। पूर्णियाँ संस्कृत विद्यालयक प्रधानाध्यापक रहथिन। दिनेश बाबू अपन पितेक सान्निध्य मे शिक्षा ग्रहण कयलनि। खाली दूनू बाप-पूत रहथि पूर्णियाँमे। शेष परिवार गाममे रहनि। आठ बरखक अवस्थामे ओ पिताक संग रह' लगलाह। पिता पाठशालाक छात्रावासमे रहथिन। आर बहुत रास विद्यार्थी ओत' रहैत छल। जाहिमे ब्राह्मणक संख्या बेसी रहैक। बहुत ओहिमे निर्धन छात्र रहय। मुफ्तमे शिक्षा पयबाक आशामे ओत' रहैत छल। भोजन ओ छात्रावासक संग वृत्ति सेहो भेटैक। सभ व्यवस्था दिनशबाबूक

पितेक जिम्मा रहनि। छात्रावासमे हुनकर पिताक कठोर अनुशासन रहनि। सभ काज निर्धारित समय पर होइत छल। भोरमे पाँच बजे सभके उठि जाय पड़ैत रहैक। नहा-धो क' पढ़े लेल बैसि जाय पड़ैत छलैक। नौ बजे धरि अध्ययन अनिवार्य छल। नौ सँ दस धरि भोजन। भोजन एकटा महाराज बनबैत छल। दरभंगा जिलाक रहय। एकदम निविष्ट ब्राह्मण। भोरे-भोर स्नान क' चूल्हि पजारए। नित्य गायत्री जप करबे करए। कहियो उसना चाउर क्षेत्र मे नहि बनल। मसुरीक दालि नहि बनल। लहसुन-प्याजुक तँ नामो निशान नहि। एकदम सभटा सुअन्न। कोनो अखाद्य नहि। कतेक रास अन्न आ तरकारी वर्जित। ऐंठ-उँफतक साम्राज्य। क्षेत्र बनैली स्टेट दिससँ चलैक। गरीब छात्र सभके मुफ्त भोजन। दिनेशबाबूक पिता स्वयंपाकी छलाह। अपने दूनू साँझ भानस करथि। खबास चाउर, दालि धो दैनि। चूल्हि पजारि दैनि। तरकारी काटि क' धो-धा राखि दैनि। दिनेश बाबूके मन होइन जे क्षेत्रमे खइतहुँ। विद्यार्थी सभ क्षेत्र मे बनैत विभिन्न व्यंजनक चर्चा करए। मुदा दिनेश मन मसोसि क' रहि जाथि। पिताक कठोर आज्ञा छल। सहरगंजा भोजनमे नहि खा सकैत छी। राति क' ठीक नौ बजे पिता नित्य भोजन करथि। जें कि नौ बाजइ, पिताक स्वर सुनाइ पड़नि—'दिनेश......दिनेश.....।' दिनेश अपन कोठलीसँ जवाब देथि, 'यैह अयलहुँ बाबूजी।' दौड़ि क' झपसन पिताक भनसाघरमे पहुँचि जाथि। बादमे क्रमश: अभ्यास लागि गेलनि। नौ बजेसँ पहिनहि साकांक्ष भ' जाथि। पिताक स्वरक प्रतीक्षा कर' लागथि। जें कि स्वर आबए, ओ झट जवाब देथि। झपसन भनसाघरमे पहुँचि जाथि। आइयो धरि पिताक मृत्यु भेलोपर ओ ओहि स्वरके नहि बिसरल छथि। आइयो नौ बजे रातिक' स्वर ओहिना सुनाइ पड़ैत छनि—'दिनेश, दिनेश!' कतेक बेर बाजि उठैत छथि। ''यैह अएलहुँ बाबूजी।' फेर बोध होइत छनि जे जाह, ई तँ भ्रम छल। पिता तँ कहिया ने मरि गेलाह। आब ओ कहाँ छथि ?

ट्रेन आबि गेल रहय। महेश अपन किछु संगी सभक संग उतरल। माए-बाप के देखलक। पैर छूबि प्रणाम केलक। फेर संगी सभक लग जा गप्प कर' लागल। किछु क्षण एहिमे बीति गेल। अनीता आ दिनेश बाबू आब अगुता रहल छलाह। हुनका जल्दी डेरा घुरबाक रहनि। बेटासँ बहुत किछु पुछबाक रहनि। चिट्ठी-पत्रीसँ संतोष नहि भेल रहनि। चिट्ठीसँ जिज्ञासा शान्त नहि होइत छलनि। अनीता के सेहो बेटासँ फराके गप्प करबाक छलनि। फूट सँ डेरा पर ल' जा क' खूब खुयेबाक-पीयेबाक रहनि। बड़ी ओकरा कत्ते नीक लगैत छैक। दलिपूड़ी कत्ते पसिन्न छैक। काँट छोड़ाओल माछक साना कतेक पसिन्नसँ खाइत अछि। ई सभ चीज थोड़े भेटैत हेतैक होस्टलमे। अनीता सोचैत छथि। दलिपूड़ी बनाक' रखने छलीह। बड़ी बनेबाक लेल घाठिक ओरिआओन क' आएल रहथि। मुदा महेशक गप्प खतमे नहि भ' रहल छल। अनीता के नहि रहल गेलनि। कहलथिन

—'चल, आब डेरा चल। एकरा सभसँ तँ भेंट फेर हेबे करतौ। फेर संगहि सभ रहै जयबें। हम सभ बड़ीकालसँ स्टेशन पर छी। गाड़ी अयबामे देरी भेलैक।'

महेश माए दिस तकलक। कहलकनि—'बस, तुरन्त चलै छी माँ। प्रशान्त के पापा नहि आयल छथिन। आबि जेथिन तँ चलि चलब।' फेरसँ ओ गप्प कर' लागल रहय। दू-तीन टा ओकर संगी सभ आर रहैक। सभ क्रमश: अपन माए-बापक संग चल गेल। मुदा महेश प्रशान्तके नहि छोड़ि रहल छल। ओकर परिचय अपन माँ-बाबूजीसँ करौलक। दिनेश बाबू आ अनीता थोड़ेक काल प्रशान्तसँ गप्प-सप्प केलनि। मुदा ओकर बाप एखनो नहि आएल रहैक। आब प्रशान्तक पापा पर हुनका लोकनिके क्रोध हुअ' लागल रहनि। केहेन लोक सभ होइत अछि से नहि जानि। एतेक देरीसँ ट्रेन अयलैक अछि। मुदा एखनो धरि कतहु पता नहि छैक। प्रशान्त के एत्त' सँ मुजफ्फरपुर जेबाक छैक।

—'कत्तौ देरी भ' गेल हेतनि। अबैत होयथिन।'—अनीता कहलथिन।

—'मुदा हम सभ कत्तेकाल प्रतीक्षा करबैक। हमरा आफिसो जेबाक अछि।' —दिनेश बाबू बजलाह।

'आबि जेथिन। थोड़ेक काल तँ प्रतीक्षा करहि पड़त। चलू बेंच पर चलि क' बैसी।' अनीता हुनका भरोस देलथिन। दूनू बेकती प्रशान्तक पापाक प्रतीक्षा कर लगलाह। महेश आ प्रशान्त दूनू संगी गप्पमे लागल रहय। अनीता सोच' लगलीह जे थोड़ेक दिनक बाद महेश आ सुषमाके ल' कए नैहर जेतीह। माएके कत्ते मोन लागल छैक महेशके देखबाक लेल। एक्केटा नाति। हरदम चिट्ठी लिखैए, दुइओ दिन लेल महेशक मुँह देखा जइहें। अनीताक पिता बहुत दिन पूर्व मरि गेल छलथिन। अनीताक वियाहो नहि भेल रहैक। दसे बरखक रहए। तहियासँ माए आ पितामहीक छत्रछायामे रहल। पितामही सेहो वियाहसँ पहिने मरि गेलथिन। अनीताक बरके देखबाक सेहन्ता लगले रहि गेलनि। माए वियाह-दान करौलथिन। माएक हिम्मति आ धैर्य अनीता के बहुधा मन पड़ैत रहैत छनि। चाहै छथि जे बरखमे एक्को मास माए लग रहथि मुदा रहि नहि पबै छथि। माएक सानिध्य भेटि नहि पबैत छनि। तें मन व्याकुल रहै छनि।

प्रशान्तक पापा एखनो धरि नहि आयल रहैक। सभ आब परेसान भ' रहल छलाह। दिनेश बाबू प्रशान्तके पुछलथिन—अहाँक पापा लगैए कोनो काजमे बाझि गेलाह। हुनका बहुत देरी भेलनि। की करब अहाँ ? चलू हमरे ओहिठाम रहब।'

प्रशान्त मुदा नहि मानलक। कहलकनि 'नहि, थोड़ेक काल आर देखि लैत छियनि। तखन हम बससँ मुजफ्फरपुर चल जायब।'

—'अहाँ असगरे जा सकब ? कहियो असगरे कत्तहु गेल छी ?' —अनीता पूछि देने रहथि।

—हँ, किएक ने जा सकब ? कत्तहु असगर आइ धरि गेल तँ नहि छी। लेकिन चल जायब। की दिक्कत छैक ? लगैए पापाके कोनो झंझटि भ' गेल हेतनि।'

दिनेश बाबूके आब दिक्कत भ' रहल छलनि। ओ परेशान भ' रहल छलाह। दस बाजि रहल छल। हुनका आफिसो जेबाक रहनि। प्रशान्तके पुछलथिन—कत्तेकाल देखबनि अहाँ अपन पापाके ?

—'एक घंटा, तखन बस पकड़ि लेब।' प्रशान्त उत्तर देलक। ओ महेशकें कहलकैक—तों सभ जाइ जो। तोहर माँ-बाबूजी के देरी भ' रहल छनि। हम चल जायब।'

मुदा महेश नहि मानलक। कहलकै 'नहि, माँ-बाबूजी चल जेताह। हम तोरा बसमे बैसा क' जायब। कत्तेकाल लगतै ?' दूनू फेर गप्प कर' लागल।

दिनेश बाबू आ अनीता आब अवग्रह मे रहथि। दिनेश बाबूके आफिस जेबाक रहनि। अनीताके डेरापर बेटी सुषमा पर मन चल गेल रहनि। असगरे अछि। शहरक हालत ठीक नहि छैक। आब ओ कछमछ कर' लगलीह। लेकिन करतीह की से फुरा नहि रहल छलनि। अनिर्णयक स्थिति मे रहथि दूनू गोटे। बेटाके छोड़ि कोना जइतथि। नहि गेलापर तँ एखन दू घंटा आर लागि सकैत छनि। सभ काज मे विलम्ब भ' जेतनि। सुषमा कत्तेकाल असगर रहतैक। यैह सभ सोचैत ओ पति सँ पुछलथिन—'की करबै ? हमरा तँ डेरा जायब जरुरी अछि। सुषमा असगरे अछि।'

दिनेश बाबू कहलथिन—'हमरो आफिस जायब जरुरी अछि। दू घंटा आब नहि रहि सकैत छी। आइ जरुरी काज छैक आफिसमे।'

—मुदा एकरा सभ के असगरे छोड़िक' कोना जेबैक ?'

महेश दूनूक वार्त्तालाप सुनलक। बाजल, 'से किए, हम सभ असगरे नहि रहि सकैत छी की ? अहाँ सभ जाउ। हम प्रशान्त कें बस मे बैसाक' डेरा चल आयब।'

अनीताक उद्वेग फेर जोर केलकनि। कहलथिन, 'तों किछु खएबो नहि केलह अछि एखन धरि। डेरा चलितह तँ नहा-धो क' जलखै करितह। दलिपूड़ी बना क' रखने छियह।' महेश दुलार सँ माए दिस तकैत कहलक, 'अइ मे की छै माँ ? दलिपूड़ी बाद मे खा लेब। एखन अहीठाम प्लेटफार्म पर किछु खा लैत छी। कोने दिक्कत नहि। अहाँ सभ जाउ.....।'

दिनेश बाबू आ अनीता महेश कें स्टेशन पर छोड़ि विदा भ' गेलाह। मोन आगु-पाछू करिते रहलनि। स्टेशनक निकासद्वार लग जा क' फेर घूरि क' तकलनि। महेश आ प्रशान्त गप्प मे मगन छल।



बूढ़ा जीवैत रहलाह

बूढ़ाक दरबज्जा पर चारिटा युवक बैसल छलाह। युवक लोकनि प्रसन्न रहथि। बूढ़ो प्रसन्न छलाह। प्रसन्नता हुनकर चिकनायल मुँह पर भकरार भ' रहल छल। ओ आवेस सँ युवक सभ के ठकुआ, पिरुकिया आ अनरसा खुआ रहल छलाह। सरिसबक चटनी परसन द' रहल रहथि।

'इस्स, सरिसबक चटनी सँग अनरसा जे नीक लगै छै।' एकटा युवक के नहि रहल गेलनि। स्वादक सुख मे बाजि उठलाह।

'कत' सँ अपने एहेन चटनी आ अनरसा, पिरुकिया बनबा लैत छियैक ? के बनबैत छथि ? अपनेक घर मे तँ कियो अछि नहि।' बूढ़ा भभा' क' हँसि देलनि। आगूक टुटलाहा दुनूटा दाँतक अनुपस्थितिक कोनोटा चिन्ता सँ ओ मुक्त भ' गेल रहथि।दस बरस पहिनहि दुनू दाँत टूटल रहनि। पीच पर लें- ऊंच मे पयर पड़ि गेल रहनि। खसि पड़लाह। अगुलका दुनू दाँत टूटि गेलनि। बूढ़ा हँसैत कहलनि, 'आर के बनाओत ? गोहिक कनियाँ बना दैत छथि। सभ सरंजाम हफ्तावारी पठा दैत छियनि। जे बनबेबाक इच्छा होइए बनबा लैत छी। केहेन बनबैत छथि से तँ अहीं सभ कहब।' कहि क' बूढ़ा युवक सभक दिस ताक' लगलाह।

'इह, से की पुछैत छी अपने। बड़ दिव्य ! जेहने स्वाद तेहने खास्ता। लगैत नहि अछि जे कइक दिन पहिलुका बनल अछि।' दोसर युवक कहि देलनि। तेसर युवक के नहि रहल गेलनि। ओ सभक पेटक स्थिति सेहो स्पष्ट राखि देलनि।

'भिनसरे सँ हम सभ ओहिना अछिंजले छी। किछुओ पेट मे नहि देल अछि। भूखो बहुत लागि गेल छल।' ओ अनरसाक बाद पिरुकिया खाय लागल रहथि। बूढ़ा आग्रह क' बैसलथिन।

'दूटा क' अनरसा आर लिअ' ने। आ हे, एकटा क' पिरुकिया आ ठकुआ

सेहो दैत छी। की ? पिरुकिया मे खोआ देने छियैक। खोआ एकदम शुद्ध अछि। कोनो गड़बड़ नहि करत।' ओ उठि क' सभ कें पुन: पकवान परस' लगला। बुइआम सँ सरिसबक चटनी एक-एक चम्मच सेहो परसलनि। युवक लोकनि आराम सँ स्वाद लैत क्रमश: सभटा उदरस्थ क' रहल छलाह। खाइत-खाइत चारिम युवक अयबाक उद्देश्य स्पष्ट क' देलनि।

'मुदा हम सभ तँ अहू लेल आएल छी जे अपने के गोहिक कनियाँ सँ आब किछु बनबाब' नहि पड़ए। अपने घर मे कनियाँक इंतजाम भ' जाय।' बूढ़ा फेर भभा क' हँसलाह। कने उत्साहित सन पूछि बैसलथिन।'

'कत' सँ ? कत' सँ कथा अनने छी अहाँ सभ ? किनका ओहिठाम सँ?' पहिल युवक आब पिरुकिया के दाँत तर दबा चुकल छलाह। मुँह मे खोआ भरि गेल छलनि। जीह सँ लाड़ि-चारि ओकरा भीतर ठेल देलनि। बजलाह, 'गंगौली सँ आयल छी। मधुसूदन झा ओत' सँ। हुनके जेठ कन्या छथिन। कन्यागत एकदम विचार क' लेने छथि। अही शुद्ध मे करताह।' दोसर युवक बूढ़ा के कोनो मौका नहि देब' चाहैत छलाह। बात के आगू बढ़ौलनि।

'कनियाँक बयस चौबीस-पच्चीस सँ बेसी नहि छैक। मधुसूदन बाबू गरीब लोक छथि। बर तकैत-तकैत तबाह भ' गेल छथि। कतहु कियो नाक पर माछी नहि बैस' दैत छनि। कनियाँ छोड़ि आर किछु नहि द' सकैत छथिन। तें कियो हुनकर बेटी सँ बियाह किएक करतनि। अपनेक सम्बन्ध मे सुनल जे बियाह करबैक तें हम सभ बड़ आस ल' क' आयल छी।''

बूढ़ा विहुँसि रहल छलाह। विहुँसैते बजलाह, 'मुदा हम तँ अट्ठारह बरख सँ बेसीक कन्या सँ बियाह नहि करब। निश्चित क' लेने छी जे यदि बियाह करब तँ' अट्ठारह बरखक कन्या सँ। ने बेसी ने कम। सरकारो कन्याक बियाहक यैह अवस्था निर्धारित केने अछि। लोक सभ जे अबैत छथि तिनका कहि दैत छियनि। अहाँ सभ के हमर शर्त नहि बूझल छल की ?' कहि क' बूढ़ा हँसि देलनि। दुनूटा टुटलाहा दाँतक खाली स्थान युवक लोकनिक आब मुँह दूसि रहल छल। ओ लोकनि तमसेलाह भीतरे-भीतर। 'इह, बूढ़ाक सख ने देखू ! अपने छथि साठिक तर आ बियाह करताह अट्ठारह बरखक कनियाँ सँ।' मुदा प्रकट मे ओ लोकनि किछु बजलाह नहि। पुन: प्रयास केलनि।

'अपने के घर सम्हारैवाली कन्या चाही ने। चौबीस-पच्चीस तँ आर नीक रहत। पूरा बुझनुक। पकठोस। जे घरो चलाबए आ शीघ्रे कुल-खानदानक रक्षा लेल सन्तानो प्रदान करए। सन्ताने लेल ने बियाह करबैक एहि बयस मे।' कहि क' युवक लोकनि बूढ़ाक मुँह ताक' लगलाह। बूढ़ा फेर हँसलाह। हँसी बूढ़ाक मजबूत हथियार छल। हँसीक प्रयोग चौतरफा करैत छलाह ओ। आत्मरक्षा सँ ल' क' आक्रमण धरि हँसी बूढ़ाक काज अबैत छलनि। ओ हँसिते उत्तर देलनि।'

'औ बाबू, संताने लेल खाली थोड़े वियाह करबैक। संतानो लेल करबैक। मुदा कनियाँक बयस मे हम कोनो समझौता नहि कर' चाहैत छी। एक्केटा तँ शर्त अछि हमर। अट्ठारह बरखक कनियाँ भेटि जायत तँ बियाह करब। आर किछु नहि चाही हमरा। अप्पन धोती पहीरि क' जायब। बियाह करब आ खाली कनियाँ लेने चल आयब। आर किछु नहि।' कहि क' बूढ़ा फेर हँस लगलाह। बूढ़ाक धोधि डोलि रहल छल। लगैत छल जेना बूढ़ाक संपूर्ण शरीर खिलखिल हँसि रहल अछि। युवक लोकनिक ठकुआ, पिरुकिया सधि गेल छलनि। बियाहक मामिला मे बूढ़ाक शर्तक आगू आब कोनो जवाबो हुनका लोकनिक लग मे नहि रहनि। चारु उठि क' ठाढ़ भेलाह।

'बेस तँ आब चलैत छी। ई कथा नीक बूझल तँ लेने अयलहुँ आब कोनो अट्ठारह बरखक कन्याक भांज लागत तँ फेर आएब। मुदा अपने बियाह करियौ अवश्य। एतेक सम्पत्ति भोगनिहार कुल-खानदानक कियो तँ चाही।' युवक लोकनि चल गेलाह। बहुत दिनक बाद हुनका लोकनि के एहन स्वादिष्ट आ यथेष्ट पकवान परि लागल रहनि। बूढ़ा हुनका सभ के जाइत देखैत रहलाह। मुसकी हुनकर ठोर सँ एखन धरि गायब नहि भेल छल।

बूढ़ाक लेल सभ चिन्तित छल। बूढ़ा सँ बेसी सभ हुनकर सम्पत्तिक लेल चिन्तित छल। के भोगतनि एतेक सम्पत्ति ? बूढ़ा बहुत मेहनति सँ एक-एकटा पाइ जोड़ने छलाह। पुश्तैनी भेटल जमीन-जाल के आर बढ़ौनहि छलाह। पुश्तैनियो सम्पत्ति कम नहि छलनि। जुआनी मे बूढ़ाक रुआबो खूब रहनि। हुनकर डरें खर जरैत छल। ककरो अनट कथा सहाज नहि करैत छलाह। अपना जे बात पसिन छलनि सैह सभ सँ चाहैत छलाह। एहि मे कोनो अनट-विनट नहि। पान-जर्दा खायब ओ सहाज नहि क' सकैत छलाह। कतेक नवसिखुआ हुनका ओहिठाम जेबा सँ पूर्व ठोर आ जीह नीक जकाँ साफ क' लैत छल। चाहक तँ गप्पे सुनि क' हुनका खौंत फूँकि दैत छलनि।

'हँह, फल्लां झा जे चाह पीबैत छथि। औ बाबू ! एहन चहक्कर नहि देखल अछि। टाइम पर चाह भेटले ताकय। घर मे भने मुसरी दण्ड पेलय।' बूढ़ा पहिने कोनो गप्पक प्रसंग मे कहि बैसथि।

'आ ओ फल्लनमा जे पान चिबबैत रहैए। ताहि पर सँ सुनैत छी भरि तरहत्थी जर्दा सेहो फँकैए। कारी पत्ती—अहमद हुसैन आ' किदन त' कहैत छै पीला पत्ती—तीन सए नम्बर। कहलकै जे ! घर भूजी भांग ने आ मियां पादय चूड़ा....।' बूढ़ा गारि पढ़' लागथि। गारिक मामिला मे बूढा शुरुहे सँ फेहर छलाह। गारि धब्ब सन खसय। कखनो माटि तर चल जाय। कखनो अकास मे पसरि जाय। गप्प करबा मे सेहो बूढ़ा माहिर छलाह। बैसले-बैसल सभटा गप्प खोदि-खोदि के पूछि लितथि। फेर ओहि मे अपन मसल्ला छींटि क' आपस क'

दितथि। अहाँके खाली हुनकर मान्यताक खण्डन नहि करबाक अछि। दृष्टि सँ हटि क' किछु कहबाक नहि अछि। तखन तँ लिअ' ने। एक सँ एक गप्प ! आ किसिम-किसिमक पदार्थ।

एहन सुन्दर दही परोपट्टा मे कत्तहु नहि भेटत खाली छाल्हिए खाएब तँ खाउ। छाल्ही नहि पचैए तँ छाल्ही हटा क' खाउ। कतेक ठाम दूधक गोटा उठि गेल अछि। लोकक सामर्थ नहि रहि गेल रहैक जे दूध के गोटा बना क' खायत। मुदा बूढ़ाक ओहिठाम बनैत छलनि। एकटा खबासिनी ओही पर रहय। दछिनबरिया घरके ओसारा पर ओही लेल एकटा एकचुल्हिया गड़ल रहैक। बड़का लोहिया मे दूध चढ़ल रहैक। खबासिनी छोलनी सँ दूध के लाड़ैत रहय। ओरिका सँ औटैत रहय। ई क्रम बड़ी काल चलै। आँचक हिसाब सेहो एही सँग देखैत छल ओ। आँच एकदम मन्द चाही। रसे-रसे दूध एकदम गाढ़ भ' जाय। एकदम मोट। सैह होअय गोटा। चीनी ओहि मे मिलेबाक कोनो काज नहि। दूधे जे एतेक मधुर होइ। मुदा गोटा बनेबा मे बड़ इलम रहैक। ओ खबासिनी एहि मे एकदम पटु छल। एकोरत्ती कहियो लोहिया मे दूध सटलै नहि। सटितैक तँ गन्ध आबि जइतैक। पूरा गोटा खराब भ' जइतैक। बूढ़ा अस्सी हजार फज्झति करितथिन। फेर ओहि खबासिनी के हवेली टपनाइ बन्न भ' जइतैक। एक सँ एक पकवान बनैत रहैत छल। सभटा बूढ़ाक कोठली मे राखल रहय। बड़का-बड़का बुइयाम मे सरिया क'। बुइयाम के कियो छूबि नहि सकैत छल। ओ अपने सँ ओकरा छूताह। छिपली मे निकालि क' अहाँ लेल अनताह। ठकुआ, पिरुकिया, अनरसा, खजूर, मोरब्बा, की-की ने। खाउ जत्ते खायब। शर्त एक्केटा कोनो अनट-विनट नहि। तमाकू-पान नहि। चाह-ताहक चर्च नहि। बूढ़ाक मोनक विपरीत किछु नहि।

कतबो सावधान रहला पर जँ किछु बजा गेल तँ सुनि लिअ। आँखि-ताँखि चमका क' बूढ़ा हुड़कताह।

'इह, सभटा अहीं बूझैत छियैक ? कहलकै जे, आगूक जनमल गोड़ लाग' दे। शहर मे रहला सँ की हैत ? दुनियाँक खबरि रहैत अछि हमरा।' बूढ़ा के ठीके सभटा खबरि रहैत छलनि। पड़ोसी दियाद-वादक ओहिठाम कोना भांग घोंटल जाइत छनि। कोना भोज-भात मे पात पर भांगक गोली परसल जाइत छनि। आइ नेहरु की बजलाह। केनेडी दुनू दम्पत्ति कोन निर्जन टापू पर छुट्टी बिता रहल छथि। नर्गिस आ सुनील दत्तक बीच राजकपूर के ल' क' केहन तनाओ उत्पन्न भेल छैक। महामाया बाबू कोना-कथी लेल छौंड़ा सभ के जिगरक टुकड़ा कहलथिन। टी. पी. सिंह, चीफ सेक्रेट्रीक केहन रुआब छनि। हुनकर कनियाँ आ बेटा की करै छनि। सभटा बूढ़ा के बूझल छलनि। ओहि सभ सूचना पर ओ अपन साधिकार टिप्पणी सँ अहाँके चकबिदोर लगा सकैत छलाह। शर्त एतबे जे ओहि

बिढ़नीक खोंता मे अहाँ अपन हाथ नहि घुसिआउ। जँ हाथ देलहुँ तँ सुनि लिअ'। छोट छियनि। इलाका मे भातिज, भागिनक गट्टी मे छियनि त' बाप सँ शुरुह करताह। जेहन जे संबंध रहत ओहि सँ एक-दू पुरुखा उपरे सँ बूढ़ा धरैत छलथिन।

'अहाँक नाना कहियो रेल पर चढ़लाह ! फस्ट क्लास देखलथिन ! कहियो दरभंगा सँ आगू गेलाह ! सभ दिन तँ टुटलाहा साइकिल पर अवाम सँ सरिस' करैत रहलाह। सरिस' सँ बाहरो देखलथिन ! सभ दिन बहुक कोंचा धेने घर-बाहर। अवाम-सरिस', अवाम-सरिस'।'

'अहाँक पितामह जे रहथि मुन्नी झा। सभ दिन धमदाहा मे हाथ झरका क' भानस केलनि। दालि-भात, आलू साना। सैह जनम भरि खाइत रहि गेलाह। जाहि दिन जीर आ मरचाइ सँ छौंकि देथिन ताहि दिन महज भोज भ' जाइन। फोड़नक मरचाइ बड़ नीक लागनि। संस्कृत विद्यालय मे पढ़ाबथि आ अपने हाथें सभ दिन भानस करथि। चालीस वर्ष एही मे बीति गेलनि।'

'अहाँक बाप। एम० ए० क' गेलाह। पी-एच. डी. क' गेलाह। बड़का परफेसर कहबैत छथि। मुदा लूरि दुइओ पाइक नहि। बिना लुरिए की हेतनि। पी-एच. डी. कोन काज देतनि ?'

बूढ़ा अपने बी० ए० पास रहथि। एम० ए० नहि क' सकलाह। बाप मरि गेल छलथिन गर्भ आन्हरे। एम० ए० मे छलाह तखने पित्ती भिन्न क' देलथिन। सम्हारु अपन खेत-पथार। घर-दुआर। बूढ़ाक सभ फुटानी घोसरि गेलनि। कलकत्ता मे पढ़ैत रहथि। पढ़ाइ छूटि गेलनि। घर बैसि गेलाह। किछु दिन गामक स्कूल मे मास्टरियो केलनि। मुदा हेडमास्टर सँ झगड़ा भ' गेलनि। छोड़ि देलनि स्कूल। कहाँदन पढ़बथिन बूढ़ा बड़ बढ़ियाँ। किछु चेला सभ एखनो छनि। मोन पाड़ैए हुनकर पढ़ौनाइ। स्कूलक बाद अपने सँ खेती कर' लगलाह। खेती मे बड़ टाइट रहथि। जन सभ के खूब खटाबथि। बुझू तँ पेड़ि देथिन। मुदा खुअबथिन खूब। हुनकर जन के कहियो रोटी पर नोन-मेरचाइ नहि भेटलै। सभ दिन रोटी पर तरकारी रहैक। आ अंचार। आमक मास मे चारिटा के आम। खेरही नव भेल रहैक तँ खेरहीक उसना। कहियो क' बूढ़ा विशेष प्रयोजन पर मरुआ रोटी पर पोठी माछक इंतजाम सेहो करथि। जन सभ सुआदि-सुआदि खाए। जोश सँ काज करय। बूढ़ाक खेती चमकि गेल रहनि। बखारी बन्हने रहथि। दूटा बखारी पहिने सँ भेटलनि। कोनो दिआद-बाद के टप' नहि देथिन। पित्ती संग झगड़ा केलनि। पितिऔत सँग झगड़ा केलनि। अन्ततः समस्त दिआद सँ झगड़ा भ' गेलनि। आयब-जायब बंद। खायन-पीयन बन्द। घर मे माय आ पत्नी। तीनटा बेटा भेलनि। बेटा सभ खूब घी-दूध, खाय। गोटा खाय। दिन दुन्ना आ राति चौगुन्ना बेटा सभ बढ़' लागल। बूढ़ा सेहो खूब भोगीन्द्र रहथि। खाली आलू नहि खाथि। एकटा बंगाली डाक्टर जे हुनकर संगी रहनि, कहि देने छलनि जे आलू नहि खाउ। बूढ़ा गीरह बान्हि लेने रहथि। भोजो-

भात मे सभटा आलू पात पर छोड़ि देथिन। एहि सँ हुनका कियो हिला नहि सकैत छल। जाहि बात पर बूढ़ा जमि गेलाह तँ जमि गेलाह। हीलि नहि सकैत छथि। डोलि नहि सकैत छलाह। लोक कहय बूढ़ा पाथर छथि।

बूढ़ाक पहिने माय मुइलथिन। तखन जेठ बेटा मुइलनि। तखन दोसर बेटा मुइलनि। कियो अल्सर सँ। कियो कैंसर सँ। स्त्री मुइलथिन डाइरिया सँ। रहि गेलनि एकटा बेटा। बेटाक वियाह-दान करौलनि। बेटा पढ़ैत रहनि। पढ़ैत गेलनि। पढ़ाइ खतमे नहि करय। पढ़ैत-पढ़ैत आंखि खराब भ' गेलैक। मोटका शीशाबला चश्मा लगब' लागल। पढ़ि-लीखि क' गामे रह' लागल। घर पर बैसल रहय। सूतल रहय। बात-बात पर ओहो झगड़ा करय। कखनो बाप पर तमसाय। कखनो बहु पर तमसाय। बाप सँ झगड़ा केलक। बहु सँ झगड़ा केलक। ससुर सँ झगड़ा केलक। हाट-बजार जा क' अनको सँ झगड़ा कर' लागल। सभ सँ लड़ैत-झगड़ैत एक दिन ओहो मरि गेल। हत्या भ' गेलैक ओकर। दरभंगा टीशन पर पता नहि ककरा सँ की भेलै। छूरा भोंकि देलकै। टन्न भ' गेल। बूढ़ा के एहिबेर बेटाक हत्या साइत सहाज नहि भेलनि। कहुना के श्राद्ध करौलनि। तकर बाद घर मे बन्द भ' गेलाह। ककरो सँ भेंट नहि करथि। खाइत-पीयैत कियो नहि देखए। लोक सभ दरबज्जा पर सँ घूरि जाइत छल। दू-तीन मास यैह स्थिति रहलैक। मुदा एक दिन बूढ़ा बन्द कोठली सँ बाहर निकललाह। घोषणा केलनि जे ओ बियाह करताह। पुतहु पड़ा क' अपन नैहर चल गेलनि। कोनो सन्तान नहि भेल रहैक। कहैत छैक जे सासुर मे नहि रहब कि तँ बूढ़ाक आँखि नीक नहि छनि। कोनादन तकैत छथि।

परोपट्टा मे बूढ़ाक बियाहक बड़ चर्चा। बूढ़ा सभ के खा गेलाह। आब नबकी बहु करताह। ओकरो खेताह। बूढ़ा मनुक्खो के ठकुआ-पिरुकिया बुझैत छथि। सरिसबक चटनी औंसि देथिन आ कांचे चिबा जेथिन। मरचाइक बुकनी छीटि देथिन आ सौंसे देह चाटि लेथिन। बूढ़ा के एखनो पचै खूब छनि। एक सेर माछ आ आधा सेर माँसु खा सकैत छथि। सेर-डेढ़ सेर दही खा सकैत छथि। मुदा घर पर आब दिक्कत होइत छनि। कनियाँ औतनि तँ नीक-निकुत बना क' देतनि। कड़ू तेल लगा' मालिशो क' देतनि। राति मे लग मे सूतबो करतनि। सुतले-सूतल कुल खान-दान लेल बेटो जनमा क' देतनि।के भोगतनि एतेक सम्पत्ति ? सुनै छी बूढ़ा चन्द्रहार गढ़ा क' रखने छथि। राशि-राशि क' मरउसी गहना रखने छथि। हीरा आ मोती जड़ल। बाँहि परक जस्सन। गर्दनिक काँट। डाँरक डरकस। सभटा कनियाँ के द' देथिन। माए बला। बहु बला। सभटा द' देथिन।

क्रमशः बूढ़ाक ओहिठाम लोकक धरोहि लाग' लागल। अनेक जुआन, बूढ़, ऊधबएसू पहुँच' लगलाह। नव कथाक उपन्यास करथि,

'भराम सँ आयल छी। कन्यागत बड़ गरीब छथि। बियाहो करबाक जोगार नहि छनि। बियाहोक खर्च अपनहि के दिअ' पड़त।'.लोक कहय।

'मुदा कनियाँ केहेन छथि ? की बएस छनि !' बूढ़ाक एक्के प्रश्न रहय।

'कनियाँ देखबा-सुनबा मे बड़ा सुन्दर। दिव्य। कने बएस बेसी छैक। अपने अट्ठारहक जिद्द किए धेने छी ? जँ बियाह करबाक अछि तँ बएसक सीमा आगू बढ़ाउ।' लोक प्रस्ताव राखए। मुदा बूढ़ा टस्स सँ मस्स नहि होइथ।

'नहि, बएसक मामिला मे तँ हम निश्चय क' लेने छी। एहि मे कमी-बेसी नहि होयत।' बूढ़ा एकदम अड़ल रहलाह। लोक ठकुआ, पिरुकिया, अनरसा खाय। सरिसवक चटनीक प्रशंसा करय। कियो-कियो पैंचो-पालट माँगि लिअय। बूढ़ा सभ मामिला मे लोक के सन्तुष्ट करथि। बियाहक चर्च सेहो खूब रस ल' क' सुनथि। मुदा कनियाँक बएसक मामिला मे नाकं पर माछी नहि बैस' देथिन।

आब लोक के बूढ़ा सँ कोनो काजो रहैक तँ हुनकर बियाहक चर्चे सँ गप्प शुरुह करए। अन्त मे अपन अभीष्ट गप्प पर आबए। बूढ़ा लोक के हलसि-फलसि क' स्वागत-सत्कार करथि। जलखै कराबथि प्रेम सँ। पैंच-पालट देथिन। राशि-राशिक' गप्प सुनबथिन। लोक के बड़ मोन लगै। काजो सुतरि जाइ।

बूढ़ा अपनो कतहु जाथि तँ लोकक बियाह मादे प्रस्तुत कएल प्रस्ताव सभ कें विस्तारपूर्वक सुनाबथि। बूढ़ाक विवाहक चर्च सँ सौंसे सोतिपुरा आछन्न छल। लोक गाहे-बगाहे एकर कौचर्ज करबे करैत छल। असगर भेला सँ बूढ़ाक जीवन मे कोनो व्यतिक्रम नहि आएल छल। सभ किछु ओहिना चलि रहल छल। परिवार मे भेल सभक मृत्यु सँ जेना कोनो फरक नहि पड़ल हुअए। लोक आबिये रहल छल। गप्प-सरक्का चलिए रहल छल। ठकुआ, पिरुकिया, अनरसाक संग सरिसवक चटनी बूढ़ा प्रेम आ आग्रह सँ लोक के खुआइये रहल छलाह। शीशाक बुइआम मे सभटा सरंजाम जुटा क' राखिये रहल छलाह।

पहिने लोक बूढ़ा लग शोक प्रकट करबा लेल आबय। बूढ़ा के एहेन दिन अक्सर अबैत छलनि। लोक चुपचाप आबि क' गुमसुम बैसल रहय। लोक मृतकक सम्बन्ध मे गप्प कर' चाहए। बूढ़ा दुनियाँ-जहान क गप्प पसारि देथि। जलखै लेल आग्रह कर' लागथि। लोक नहि कर' चाहय। बूढ़ा मुदा नहि मानथिन। आग्रह क' के' पिरुकिया खुअबथिन। अनरसा खुअबथिन। नारिकेरक बर्फी खुअबथिन। लोक गम्भीर आ शोकाकुल मुँह बना क' जाय। बूढ़ाक आग्रह पर खाय-पीअए। गप्प करय। क्रमशः सभटा शोक खतम भ' जाइ। उड़ि जाइ कपूर जकाँ। घुरय तँ हलसैत-फुलसैत। पेट मे पिरुकिया गुड़कुनियाँ कटैत रहैक। बूढ़ा के दस हजार गारि पढ़य परोक्ष मे। ईह, ई बुढ़बा जे उस्सठ अछि। पाथर अछि सार। अंतिम संतान एखने मुइलै अछि। मुदा केहेन टनमन भेल अछि। ठहक्का लगबैत अछि। जेना एक्कोरत्ती दुख नहि भेलैक अछि। किछु भेले नहि होइ जेना। सभ कें खा गेल। ढेकारो नहि केलक।

बियाह लेल लोक कोनो विधवाक प्रस्ताव अनलक। बूढ़ा नहि मानलथिन। लोक एक बेर अट्ठारह बरखक एक कन्याक प्रस्ताव सेहो अनलक। कन्या गोरि-नारि देखबा मे सुन्दर। स्वस्थ। मुदा पैर सँ कने झखाइत छल। बूढ़ा नकारि देलनि। उपहास केलनि ढेकी-कुटैत कनियाँ नहि चाही। मुदा तैयो लोक सभ लागल अछि। जे नहि लागल अछि, से गप्प मारि रहल अछि। गप्पक मजा ल' रहल अछि। बूढ़ा बियाहक बखान क' रहल अछि। रस अबैत छैक लोक के बूढ़ाक बियाहक गप्प मे। इस्स, अट्ठारह बरखक कन्या के बरबाद करताह बूढ़ा ! बरबाद की, टोल-परोस के आबाद करताह ! जुआन लोकनिक संग बूढ़ा के बड़ पसिन। सदिखन जुआनेक भीड़ लागल रहय हुनका ओहिठाम। आब रंग-बिरंगी कपड़ा सेहो पहिर' लगलाह अछि। पहिने उज्जरे कपड़ा पहिरथि बेसी काल। आब लाल-पीयर, असमानी स्वेटर-कमीज पहीर' लागल छथि। राशि-राशि के जुत्ता कीनि रहल छथि। सोनाक घड़ी किनलनि अछि। हुनकर संगी बूढ़ लोकनि हरे राम...हरे राम करैत छथि। कलियुग कें दोख दैत छथि। कतेक गोटा हुनका मना क' अएलाह अछि। मुदा बूढ़ा अड़ल छथि।

'के भोगत हमर एतेक सम्पत्ति ? एतेक खेत-पथार के देखत ?'

'किअए' पुतहु तँ अछि। पुतहु देखत।'

'अहूं की गप्प करैत छी ? ओ आब एहिठाम घूरि क' नहि आओत। एहिठामक एक्कोटा पाइ नहि लेत। अपने पढ़ता पढ़ि-लीखि क' नोकरी करत। अपन पैर पर ठाढ़ हैत। कहैत अछि जे एकटा छदामो नहि लेब। एहिठामक माटियो नहि छूअब। की कहै छी अहाँ ?' बूढ़ा चुप्प क' देथि लोक के।

मुदा बूढ़ा सत्तन के चुप्प नहि क' सकलाह। ओकरा लग खुजि गेलाह। सत्तन हुनकर खास चेला रहय। प्रिय शिष्य। पढ़ने रहय हुनका सँ। ई बातो सदिखन मोन रहैक जे ओ पढ़ने अछि बूढ़ा सँ। बूढ़ा सत्तन के बड़ मानथि। हुनकर जेठ बेटाक संगी रहय ओ। जेठ बेटाक संग ओकरो बैसि क' पढ़बथिन। जेठ बेटा बड़ चन्सगर रहनि। सत्तन नोकरी करैत छल बहुत दूर हैदराबाद मे। गाम आएल तँ बूढ़ाक बियाहक मादे सुनलक। लोकक गप्प अप्रिय लगलैक। सुनैत-सुनैत अकच्छ भ' गेल। बूढ़ाक कौचर्ज एक्कोरत्ती नीक नहि लागै ओकरा। साँझ मे बूढ़ाक ओहिठाम गेल। बूढ़ा देखिते प्रसन्न भ' गेलाह। आवेस सँ बैसौलथिन। जलखै लेल पुछलथिन। ओ गुम्म भेल बैसल रहल। किछु बजिते नहि छल। बूढ़ा उकस-पाकस कर' लगलाह। बेचैन हुअए' लगलाह। सत्तन अकस्मात् जोर-जोर सँ बाज' लागल'।

'अहाँ बियाह किएक क' रहल छी ? एहि बएस मे की फूड़ि गेल अछि अहाँके। सभ चल गेल। सभ मरि गेल। स्त्री। तीन-तीनटा बेटा। सभ खतम भ' गेल।

आब फेर बियाह क' की हैत। कत्ते दिन जीयब अहाँ। कहियो टन सँ रहि जायब। किए, कोनो कुमारि कन्याक जीवन बरबाद करबैक अहाँ। अहाँके कोनो लाज-धाख नहि रहि गेल अछि ?' सत्तन तामसे आन्हर छल। ओ आइ धरि बूढ़ा के एना कहियो कहने नहि छल। ओकरा बूढ़ाक संग एना गप्प करबाक कहियो साहस नहि भेल रहैक। जोर सँ बूढ़ाक आगू मे बजबाक कल्पनो नहि केने छल। मुदा आइ बाजल। जोर-जोर सँ बाजल। सभटा क्रोध झाड़ि देलक। बूढ़ा किछु बजलाह नहि। हबोढकार कान' लगलाह। हिचुकि-हिचुकि क' कान' लगलाह बूढ़ा। बूढ़ाक कननाइ सुनि मुनिगा गाछ पर बैसल कौआ उड़ि गेल। लताम गाछ पर बैसल मैना सभ फुर्र भ' गेल। मुनहारि साँझ मे बूढ़ा हबोढकार कानि रहल छलाह। ओ कनैत बाजि रहल छलाह, ''सभ मरि गेल तँ हमहूँ मरि जाउ। हम मर' नहि चाहैत छी।'

सत्तन बूढ़ा कें कनैत देखि स्तब्ध छल। ओ बूढ़ाक कनबाक कल्पना नहि करैत रहए। ओ तँ आइ बूढ़ा सँ झगड़ा करबाक लेल आएल छल। खूब झगड़' लेल तैयार छल। एहेन झगड़ा जाहि मे बाजब-भुकब बन्न भ' जाय। आएब-जाएब बन्न भ' जाय। बूढ़ाक जवाब सुनि ओ कहि उठल, 'मर' नहि चाहैत छी तँ बियाह किए कर' चाहैत छी ? बियाह नहि करब, तँ की मरि जायब ? मरि जायब तँ मरि जायब। एक दिन त' सभ मरिते अछि। मरि जायब तँ देख' आयब जे अहाँक सम्पत्ति के भोग क' रहल अछि !'

बूढ़ा आब चुप्प भ' गेल छलाह। अपना के सम्हारि लेने छलाह। अंगपोछा सँ नोर पोछलनि। कनेक काल गुम्म रहलाह। ठोर पर आब मुसकी फेर सँ आबि रहल छलनि। बूढ़ाक चेहरा धोआ-पोछा गेल रहनि। आब बिहुँस' लगलाह बूढ़ा। बिहुँसैते बजलाह। 'तों बूड़िक बूड़िए रहि गेलह। तोहर बाप सेहो प्रचंड बूड़ि छल। की तों एतेक पढ़लह लिखलह से नहि जानि। सुनै छी बड़का विद्वान भ' गेल छह। बड़का दार्शनिक। घोड़ी-घास छह...' कहैत बूढ़ा फेर शुरुह भ' गेल छलाह। जेना किछु भेले नहि होइ। बूढ़ा हँस'लागल छलाह। खिल-खिल। हुनकर धोधि डोलि रहल छल। आगूक दुनूटा टुटलाहा दाँतक खाली स्थानक कोनोटा चिंता बूढ़ा के एकदम्मे नहि रहि गेल छलनि।



प्रतिलोम

गोबर सँ आँगन नीपि हवेली पर सँ फिरल गामबाली। अर्जुन के ओहिना केथरी ओढ़िक' सूतल देखलक। पित्त चढ़लैक। ह'...ह'...ह'...कत्ते दिन चढ़ि गेलै आ ई छौड़ा ओहिना घसमोड़ि क' पड़ले अछि। कोनो सुध-बुध छैक एकरा? अनेरे बउआ एकरा सिक्का चढ़ौने रहै छथिन।

बूढ़ा मालिकक सराध छियै। कत्ते लोक खेलकै काल्हि। धर्रोहि लागल रहैक। तै पर सँ किसिम-किसिम के चीज-वस्तु। कत्ते रास। गामवाली के सभ दिन हिसाब गड़बड़ा जाइ छै। धौर, आंगुर पर गनले नहि होइ छै। ढेकरि क' खेलाक बादो कुटुम्ब सभक पात पर दू-चारि खण्ड माछ आ दू-चारिटा रसगुल्ला रहिये गेल छलैक। कुटुम्ब सभ उठलै त' डोमिन सभ ढुकि गेल रहै। आब खबासिनी सभ अइंठ नहि उठबै छै। कोनो बेगरता नहि छै। सभके निरैठो अन्न भेटि जाइत छैक। अपन जातिवला सभ त' हवेली मे खबास आ खबासिनीक काजो करबा सँ मना करै छै। की त' एहि सँ बेइज्जती होइ छै। बात त' ठीक छै। मुदा उपायो आर कोन छै? गामबाली सोचैत रहैए। चौदह बरखक अर्जुन के छोड़ि आर ओकर के छै? धनमंती त' सासुरे बसै छै। कहियो काल नैहर अबैए।

गामवाली के मोन पड़लै-बूढ़ामालिक धनमंतीक वियाह मे कत्ते मदति केने रहथिन। बापक परोक्ष मे किछुओ कमी रहलैक ? बाप टा नहि रहै। हीरा बुच्ची अपन पेटी सँ बहार क' कए कत्ते रास सिंगार-पटारक चीज देने रहथिन। कीआ, ककबा, एना, सिनुर-टिकुली, क्रीम-पौडर। की-की ने। बड़की बुआसीन एकटा सुन्दर फूलबला पेटी देने रहथिन। दू टा नबे नूआ सहो। से बूढ़ा-मालिकक सराध मे नहिये आबि सकलै धनमंती। किछु काजे-उदम क' दितैक। मुदा बर नहि आब' देलकै। धुर, ओकरो पुरुख बड़ टेढ़िया छै।

—'रे, अर्जुन, अर्जुनमा ! रे उठ ने। कत्ते अबेर भेलौ। तोहर त' निन्ने ने

टूटै छौ। रे, बउआ खोज करै छलथुन। कहै छलथुन जे अर्जुनमा के नीन्न नहि टुटलैए। राति मे कसि क' खेने रहय। निशां लगले छै?' गामबाली आब अर्जुनक देह डोलब' लागल रहय। छौंड़ा कने सुगबुगायल। फेर केथरी सँ मुँह झाँपि क' पलटि गेल। सूति रहल। पेटकुनियाँ द' कए। माघ मासक कनकनी छौंड़ा के जतने छलैक। रतुका खायल माछक खण्ड सभ कत्ते गरमी दितैक? मुदा गामबाली के सत्ते तामस उठि गेल रहैक।

—'रौ तोहर नीन्न किए ने टुटै छौ रौ ? केहेन मोट नीन्न छै से नहि जानि। लस्सा जकाँ आँखि मे सटि जाइ छै छौंड़ा के। आँखि खुजिते नहि रहै छै।' जोर-जोर सँ ओकर देह डोलब' लागल गामबाली। देह पर सँ केथरी खीचि देलकै। अर्जुन जागि गेल। उठि क' बैसल। आँखि मिड़लक। चारुकात तकलक। देखलक केराक गाछ लग सुरुज भगवानक लाल गोल थक्का रुप बदलि क' चमकैत किरिन फेक' लागल अछि। मुदा धन छारने छै किरिन के। रोशनी अपन सामर्थ भरि फूटि रहलैए। केराक पात पर सँ ओसक बुन्न टपकि रहल छै। सौंसे केराक पात भीजल छै। धनक कारणें सभटा झलफला रहलैए। अर्जुन के लगलै जे धनक धुआँ केतलीक भाफ सन पसरि रहल छै। गाछ-पात पर बूलि रहल छै। अर्जुन अंगैठीमोर केलक। माय सँ कहलकै, 'माय, चाह नहि पियेबही ?' मायक धुआंइत तामस पर जेना दू मुट्ठा छिल्ला पड़ि गेल होइ। धधकि उठलै।

—'देखिअउ एहि छौंड़ा के सख ! सुनियौ एकर ताल। रे, हमरा एखन फुर्सति अइ जे तोरा भोरे-भोर बिछाने पर चाह बनाके देबौ। कत्ते काज पड़ल छै। लगले फेर हबेली जाय पड़तै। के एखन चुल्हा पजारतै? तै पर सँ चीनी धएले छै घर मे? कहिया ने सधलै। भेटै छै चीनी ? सभटा कोटा त' गौरीकन्त अपने चाटि लै छै। जो ने हबेली पर। कखन ने केतली चढ़लइ। दू तोर चाह बनियो गेल हेतै। तेसर तोर चलि रहल हेतै। मंजू बुच्ची सँ माँगि लिहें। वैह बनबैत हेथीन।' अर्जुनक मुँह पर कनेकाल लेल प्रसन्नताक एक मधुआएल रौद पसरलै। फेर छाहरि भ' गेलै।

—'दुर, ओ त' सुनिते नहि रहैत छथिन जेना। बड़ी काल नुड़िआए पड़ैत छै तखन जा कए एक कप चाह दैत छथि। इस्स माए गय, मुदा बनबै छथिन अलबत्त। कहाँदुन डिल्ली मे रहैत छथिन ने। सुअदगर चाहक सभटा इलम अबै छनि हुनका। दू घोंट मे जेना बिजली बर' लगै छै देह मे भुक्क-भुक्क।' गामबाली के हँसी लागि गेलै। सभटा तामस पतलोइक पजरल आगि जकाँ मिझा गेलै एक्कहि बेर। हँसैत कहलकै, 'जो ने जल्दी। माँगि क' सभ सँ पहिने चाह पीबि लिहें। देह मे बिजली भुक्क-भुक्क बर' लगतौ। कहलकै जे। एहि छौंड़ा सन इसखी ने देखू। बड़का लोक नाहित सभटा मिजाज भेल जाइ छै एकर।' हँसैत गामबाली उठि क' ठाढ़ भेल। बाढ़नि कोनटा लग सँ उठौलक। घर-आंगन बहार'

लागल। नहा-धोक' फेर लगले हबेली पर जाय पड़तैक। बड़की बुआसीन अएबाकाल टोकि देने छलथीन। 'अंगना जाइत छथि त' जाउथ। मुदा जल्दिये चल अबिहथि। एहिठाम सभटा काज पड़ले छै।' ओ हांहि-हांहि हाथ चलब' लागल। ताबत पछबारीकात सँ मैए...मैए...करैत चल जाइत मारिते रास खस्सी सभहक आवाज सुनाइ देलकै। अर्जुन कूदि क' एक्कहि छरपान मे अंगना सँ बाहर भ' गेल। कनेकालक बाद हँसैत-कूदैत अंगना मे आएल। खुशी सँ ओकर पिड़श्याम मुँह चमकि रहल छलैक। 'आबि गेलै खस्सी सभ...। आबि गेलै खस्सी सभ...। मासु खेबै...आइ त' मासु खेबै...।' अर्जुन अंगना मे कूदि रहल छल। मायके कहलकै, 'माय गे, जाइ छी हबेली पर। ओहि टोल सँ रामचन्नर कका खस्सी सभ ल' कए आबि गेलैक। आब खस्सी कटतै। आइ मासु बनतै भोज मे। कहैत यैह ले वैह ले फुर्र भ' गेल अर्जुन। गामवाली अवाक् रहि गेल। बकार मुँहे मे रहि गेलै।

X X X

अर्जुन जखन हवेली दिस विदा भेल त' उनटलहा इनार लग ओकरे टोलक चारि-पाँचटा युवक बैसल भेटलै। ओकरा सँ कने बएसे जेठ सभ रहैक। नबे-नबे मोछ-दाढ़ी भेल छलैक सभ के। कोनो बात पर ठहक्का मारि रहल छल। अर्जुन के ओकरा सभ सँ डर होइत छै। ओ सभ अर्जुन के देखि क' हँसैत अछि। ओहि युवक मे सँ एकगोटा अर्जुन के कहैत अछि,

—'की औ खबास ! बिदा भेलहुँ।'

दोसर बाजल, 'बिदा नहि हेताह त' करताह की? बउआक खनदानी खबास जे छथिन।'

तेसर हँसैत टिपलक, 'बौउआक खबास। बउआक सम्पत्ति।' चारिम सेहो चुप्प नहि रहल, 'जाउ, जाउ। मालिकक सेवा मे हाजिर होउ।' फेर ओ नाटकीय मुद्रा मे जोर सँ बाजल रहय, 'हटै जाइ जाउ। हटै जाइ जाउ! बउआ झाक खबास आब रहल छथि।' कहि क' एक जोरगर ठहक्का लगौलक ओ। सभ ओकर संग देलकै। अर्जुन चुपचाप ओकरा सभक आगू सँ ससरि गेल। हवेली पर जाइत अर्जुन के देखि क' ओ सभ पहिनहुँ बोली मारैत रहैक। अर्जुन अप्रतिभ भ' जाइत छल। सकपका जाइत रहय। पाछू सँ ठहक्का सुनाइ दैत रहलैक। ओ सभ दिन जकाँ मूड़ी झमारलक आ दरबर मारैत हबेली पर पहुँचि गेल। अंगना दिस जाय लागल त' बउआ दुरुक्खे मे भेटि गेलथिन। 'की रौ आबि गेलैं? भोर मे तोहर नीन्न नहि टूटैत रहै छौ की?' अर्जुन बात के पलटै लेल कहि उठल, 'बौउआ, खस्सी सभ आबि गेलै। कलम मे ल' गेलैए रामचन्नरकका।' 'ठीक छै। तों कलमे चल जो। जखन मासु बन' लगै त' हमरा बजा लिहें।' बउआ ओकरा आदेश देलथिन। 'कने चाह पीबि लैत छियैक। बड़ कनकनी छै। गरमी आबि जेतै।' अर्जुन

ठीके थरथर काँप' लागल। बउआ के हँसी लागि गेलनि। कहलथिन, 'बेस, जो। जल्दी पीबि क' कलम चल जइहें।' कहैत ओ आगू बढ़ि गेलाह। अर्जुन अंगना आयल त' देखलक जे सौंसे अंगना मे घोल मचल छैक। मड़बा पर मारिते रास स्रीगण सभ बैसि क' तरकारी काटि रहल छलीह। तरकारीक ढेर लागल रहैक। नजरि घुमाके तकलक त' देखलक जे उत्तरबरिया कोनक दोसर छोटका अंगना मे मंजू बुच्ची बैसल छथिन। चुल्हा पर बड़का केतली चढ़ल छैक। 'ह'...ह'...ह'...चाहक कारबार बन्द नहि भेलैक अछि।' ओ सोचलक। ताबत छोटकी बुआसीनक नजरि अर्जुन पर पड़ि गेलनि। ओ मड़बे पर सँ चिकरलीह 'अर्जुन ! भराड़ सँ मटोरि नेने आउ त'। हिनका सभके पान लगाक' दैत छियनि।' अर्जुन के भेलै जे आइ ई सभ चाह नहि पीअ' देतीह। मुदा उपाय की रहैक। भराड़ मे गेल त' ओहिठाम बौउआक बेटा आ छोटका बच्चाक बेटा बैसल रहथि। 'की रे छौंड़ा ! आबि गेलही? बुझलहुँ यार, इहो छौंड़ा जे जाबिर अछि ! लालककाजी एकरा एकदम ट्रेंडक' रहल छथिन।' छोटका बच्चाक बेटा प्रदीप मुसकुराइत बउआक बेटा सुभाष सँ टिपलनि। सुभाष हँसि देलनि। हँसैत बजलाह, 'यार, धोखो सँ एकरा किछु कहबैक नहि। ई बाबूजीक बड़का दुलारु अछि।' अर्जुन किछु नहि बाजल। एखन ओकर मोन चाह पर टांगल छलैक। चुपचाप मटोरि उठौलक आ छोटकी बुआसीन लग जा कए राखि देलकनि। झटकारिक' मंजू बुच्ची लग दुइए धाप मे पहुँचि गेल। चुल्हाक पाछू मे बैसिक' जेना आगि ताप' लागल। चुपचाप। मंजूक नजरि गेलनि। टोकलथिन,

—'की रौ, अर्जुनमा ! बड़ जाड़ होइ छौ तोरा ?'

—'हँ, बहीनदाइ। जाड़े त' कठुआएल जाइत छी।' अर्जुन के बूझल छैक। मंजूके बहीनदाइ कहनाइ नीक लगैत छनि। अपना मोने पूरा मक्खन लगौलक। मुदा मंजू कोनो ध्यान नहि देलथिन। आब अर्जुन के कोनो आन उपक्रम कर' पड़तैक। मीठ बोलें आब मलहम लगब' लागल जेना।

—'बहीनदाइ, कत्ते बेर चाह बनलैए एखन धरि ? एखन त' आर कत्ते बेर बनाब' पड़त। अहाँ त' भोरे अनरोखे सँ बना रहलियैक अछि। अकच्छ नहि लगैए अहाँके? जाड़ मे चाहक खपतो बड़ छैक।' मंजू के हँसी लागि गेलनि। बूझि गेल छलीह अर्जुनक चालि। बजलीह, 'रे, छौंड़ा। तोरा होइ छौ हम बड़ चरबरचलाक छी। सोझे कह ने एक कप चाह हमरो दिअ' ने बहीनदाइ। बैस कनेकाल चुपचाप।' अर्जुनक मोन प्रसन्न भ' गेलै। इस्स, मंजू बुच्ची बड़ नीक छै। कनेकाल मे ओकरा एक कप चाह भेटि गेलै। ओ सुड़कि लेलक धिपले-धीपल। तप्पत चाह। शरीर मे आब बिजली बर' लगलैक भुक्क...भुक्क...। दौड़ि गेल कलम दिस। निछोहे।

कलम मे खस्सी सभ बान्हल छल। कटबाक तैयारी भ' रहल छलैक। रामचन्नर संगे ओहि टोलक कपिलेश्वर झा सेहो रहथि। खस्सी आ' छागर के

झटका सँ कटबा मे हुनकर ओस्तादी नामी छलनि। दुर्गामन्दिर मे बलि प्रदान सभ बेर वैह करैत छथि। अर्जुन के सभ दिन होइत छैक जे कपिलेश्वर झा मे कोनो जिन्न-भूत बास करैत छनि। कोना क' सफाइ सँ खस्सीक मूड़ी काटि दैत छथिन। ओ खाली एक बेर कमजोर सँ भेंए...ए. टा क' पबैए। मुदा पता नहि कपिलेश्वर झा के कोनाक' ओ सभ चीन्हि जाइत छनि। अर्जुन के छगुन्ता लगैत छैक। कपिलेश्वर झाक नजदीक अबिते खस्सी-छागर सभ डरें थर-थर काँप' लगैत अछि। ओकरा सभके नदी-लगही तक भ' जाइ छै। खस्सी सभ एखन धरि बन्हले छल। मुदा जोर-जोर सँ मिमिआएब शुरु क' देने रहय। जेना ओ सभ बूझि गेल अछि जे लगले कनीकालक बाद ओकर सभक की गति हेबा लेल छैक। आब कपिलेश्वर झा खस्सी कटबाक ओरआओन क' लेने छलाह। अर्जुन सपेता गाछक नीचा मे कने दूर हटि क' बैसि गेल छल।

X X X

अर्जुनक बाप लूटन मड़र मासु नहि खाथि। कोनो बबाजी सँ कंठी बन्हवा लेने रहथि। एहि लेल गामवाली सँ बड़ झगड़ा भेल रहनि। बूढ़ा मालिक सेहो बिगड़ल रहथिन, 'अए रौ लूटना ! ई की सुनैत छियौक। तों कण्ठी ल' लेलें? तोहर खनदान मे कियो आइ धरि माछ-माँस नहि छोड़लक। तों बबाजी भ' गेलैं।' लूटन मड़र किछु नहि बाजल रहथि। बूढ़ा मालिकके ओ अपन बात बुझा नहि सकैत छलाह। मुदा ओ मोन सँ वैष्णव भ' गेल रहथि। ई सभ कथा अर्जुन के जन्मे समयक थिक। माय सँ सभ किछु सुनने रहय ओ। अर्जुनक माय के ई बात मोन मे बैसि गेल छैक जे लूटन मड़र अही दुआरे मरि गेलाह। यदि ओ वैष्णव नहि भेल रहितथि त' नहि मरितथि। राति मे छाती मे दर्द उठल रहनि। एहन दर्द जे प्राणे ल' कए छोड़लकनि। सभ दवाइ-दारु धयले रहि गेल। बूढ़ामालिकक हरबाह आ खबास एहि दुनियाँ सँ बिदा भ' गेल रहय। चारि पुश्त सँ बूढ़ा मालिक पं गणेश्वर झा आ' हुनक पूर्वज लोकनिक खबासी करैत आएल अछि ओकर खनदान। लूटन मड़रक परदादा मंशी मड़र के बसौने छलाह गणेश्वर झाक दादा। बासडीह देने रहथिन। मंशी मड़रक बेटा थोलाइ मड़र। थोलाइ मड़रक बेटा रौदी मड़र। रौदी मड़रक बेटा लूटन मड़र। यैह सभ गणेश्वर झाक बाप-दादाक हिस्सा मे पड़ल रहनि। मंशी मड़र क आन बेटा सभ, थोलाइ मड़रक दोसर-तेसर बेटा, रौदी मड़रक जमाए हुनकर आन दिआदक हिस्सा मे पड़ि गेल छल। गणेश्वर झा आ हुनकर बेटा बउआ के छोड़ि क' कियो अपन खबास के ठीक सँ डेबि नहि सकलाह। बूढ़ा मालिकक बाबा महामहोपाध्याय रहथि। थोलाइ मड़र हुनकर खास खबास रहय। बूढ़ा मालिकक पिताक समबयस्क। महामहोपाध्यायक सेवा आ ओहि घरक सम्पर्कक कारणें निरक्षर थोलाइ मड़र बेस ज्ञान अर्जित केने रहथि। शास्त्रक कतेक रास बात आ धर्मक कतेक रास खिस्सा, विचार हुनका कंठस्थ भ'

गेल रहनि। जकर उपयोग ओ अपन समुदाय मे कएल करथि। लोक हुनका ज्ञानी कहय। कइबैका रहथि। पर-पंचैती करथि। लोक हुनका नैयाइक सेहो कहैत छल। मुदा अर्जुन के ई सभ बात कोनो खास नहि बूझल छैक। कोनो खास मतलबो नहि छैक। ज्ञान मे ज्ञान ओकरा खाली एतबे भेल छै जे बउआ जे कहै छथि से करबाक चाही। ओ बउआके अपन सभकिछु बूझैत अछि।

X X X

आब कपिलेश्वर झा खस्सी के काटब शुरुह क' देने रहथि। एह, एहन अलबत्त तेज कत्ता आ एहन ओस्तादी। छप्प सँ खस्सी क मूड़ी धड़ सँ अलग भ' जाइक। धड़ अलग तड़फड़ाइत रहैक। मूड़ी कनेकाल कूदैत रहैक जोर-जोर सँ। फेर सभ शान्त। खूनक पमारा चलि रहल छल। एक... दू... तीन... चारि... पाँच... खूनक धार बह' लागल। आमक गाछक जड़ि खून सँ लाल भ' गेल। अर्जुन कखनहुँ के आँखि मूनि लिअए। कखनहुँ क' उपर ताक' लागए। पात आ डारि सभ मे ओकर नजरि बौआइत रहैक। खून, तड़पैत धड़ आ कूदैत मूड़ी आ डेराइत नदी-लगही करैत खस्सी सभ के देखि क' आब अर्जुन के डर हुअ' लगलैक। ओकरा होइक जे एहिठाम सँ पड़ा जाय। मुदा पड़ा नहि सकैत छल। बउआ कहने रहथिन जे जखन खस्सी मारल भ' जाइ आ मासु बन' लगैक तखन हमरा खबरि करिहें। बीच मे कोना एत' सँ जा सकैत अछि ? एखन मासु बनब शुरु नहि भेलैक अछि। कहीं बीच मे किनसाइत बउआ घूमैत-फिरैत एम्हर आबि गेलथिन त'...? मासु खेबाक मंसूबा मोने मे ने रह जाइ।

X X X

पं. गणेश्वर झा जखन मुइलाह त' श्राद्धक लेल हुनके काठक बड़का बक्सा सँ फिरिस्त निकालल गेल। हुनकर जेठ बालक बड़का बच्चा के ई देखि आश्चर्य भेलनि जे तीन पुश्तक श्राद्ध आ वियाह-दानक फिरिस्त ओहि मे राखल छलैक। लगभग नब्बे बरखक इतिहास। पितामहक श्राद्ध मे पाँच रुपये सेर कड़ू तेल कीनबाक आ बारह टके शुद्ध घी कीनबाक बात देखि सभके हँसी लगलैक। धिया-पूता त' आर हँसल। धोती सत्ताइस रुपये जोड़ कीनल गेल रहय। सम्पूर्ण अरहना मे सत्तरह सए उन्चास टाका खर्च भेल रहनि। कुल खर्च अन्न-पानि छोड़ि पाँच हजार तीन सए उनहत्तरि टाका भेल रहैक। मुदा आइ? ओहि फिरिस्तक हिसाबें सत्तरियो हजार सँ वेसी खर्च पड़तैक। सभ कथूक दाम बढ़ि गेल छलैक आ सभ किछु कीनबे जरुरी छलनि। मुदा सिरिस्ता तोड़ि कोना सकैत छलाह। जेना एहि घर मे काज भ' आएल छैक तहिना त' करहि पड़तनि। एहन नामी, यशस्वी लोकक श्राद्ध कोनहुना कोना भ' सकैत छलैक? तैं श्राद्धक सम्पूर्ण फिरिस्त तैयार भेल। दान-दक्षिणा सभटा विस्तार सँ टिपल गेल। सिरिस्ताक अनुसार दान मे जूता, छाता, पलंग, मसहरी, बिछान, बितान आ' अरहना, कपिला गायक अतिरिक्त

अनेक अन्य दानक लेल तद्मूल्यक टाका सेहो शास्त्रक अनुसारे विहित कएल गेल रहय। दान मे दास-दासिनक उत्सर्ग करबाक सेहो चर्चा आएल। छोटका बच्चाक जेठका बेटा प्रदीप एकर विरोध केलनि। 'दास-दासिन क दान आब एकदम गलत आ अवैधानिक बात थिक। मनुक्ख आब गुलाम नहि अछि। मनुक्ख के वस्तु नहि मानल जा सकैए। जखन मनुक्खक दान नहि भ' सकैए तखन तद्मूल्यकको? ई सभ आडम्बर आब खतम भ' जेबाक चाही। फूसि पर आधारित कर्म सँ श्राद्ध कोना भ' सकैत अछि ?' प्रदीप बेस हिम्मति सँ प्रश्न उठौने रहथि। ओ एहिपर जोर द' रहल छलाह। पहिने सभ हुनका बुझेबाक चेष्टा केलक। परम्परा आ प्रतीकक बात कहल गेल। सिरिस्ता तोड़ब कठिन आ धर्म-कर्म मे ओकर निर्वाहक अनिवार्यता क गप्प उठाओल गेल। बेसी गोटाक विचार छलनि जे, जे भ' आएल छैक तकरा किएक छोड़ल जाय। दाने हेतैक त' की हेतैक। मुदा प्रदीप अड़ि गेल छलाह। 'यदि नहिये दान हेतैक त' की हेतैक। एतेक चीज-वस्तु त' दान भइये रहल छैक।' आब बउआ गरमा गेल रहथि। एहि शहरुआ छौड़ा सभ पर ओ सभ दिन बिगड़ल रहैत छलाह। समटा धर्म-कर्म नष्ट भेल जा रहलए। ई सभ सभटा बरबाद क' देत। ओ सोचथि। प्रदीपक हठ देखि हुनका तामस चढ़ि गेलनि 'अहींटा सभटा बूझैत छियैक की हमहूँ सभ जनैत छी। तखन सँ अभद्र जकाँ बजने चल जाइत छी। कोनो विचार अछि कि नहि अहाँके ? जे भ' अएलैक अछि से हेतैक। अहाँक बापक श्राद्ध भ' रहलए कि हमरा लोकनिक बापक श्राद्ध छी। हमरा सभके जे मोन हैत से करब ?' प्रदीप चुप्प भ' गेल रहथि। हुनकर बापो जे दिल्ली मे कमाइ छथि चुप्पे रहलाह। लाल भाइक विरोध ओ नहि क' सकैत छलाह। गामक मालिक वैह छथि। ओ जे चाहताह सैह हेतैक। एवं प्रकारे दास-दासिनक दान सेहो भेल। मुदा तद्मूल्यक रुप मे शास्त्रीय मूल्य......।

X X X

श्राद्धस्थली मे मासिक शुरु भ' गेल छल। ओम्हर दरबज्जा पर कुटुम सभ जूमि गेल छलाह। जलखैक इंतजाम हुअ' लागल। जलखै मे पूरी, डालना आ' दही अमिरती रहय। नवटोलक अमिरती नामी छैक। पातर-पातर झूर गरम-गरम अमिरतीक स्वाद अपूर्व होइत अछि। ताहू मे जाड़ मास मे त' आर विलक्षण। लोक सभ टूटि पड़ल छलाह। नौ बजे भिनसरक समय। कने रौदक सुनगुनी मे अलबत्त स्वाद लागि रहल छलैक। तसलाक तसला डालना चंगेरा क चंगेरा पूरी-अमिरती। छाँछक-छाँछ दही परसाय लागल। बीच-बीच मे लोक स्वाद बदलैक लेल ओलक अंचार चीखि लैत छल। जलखै क' पान खा डबल जीरो तुलसी आ हरिशंकर नाग फाँकि लोक दरबज्जा धेलक। गप्पक फुलझड़ी छूटब आब शुरुह भ' गेल छल। राशि-राशि के गप्प। धर्मशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, भाषा विज्ञान, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, साइंस, दर्शन, साहित्य कथूक कमी नहि रहल।

सभ शास्त्र आब एहिठामक गप्प शास्त्रक आगू पेटकुनियाँ द' देलक। वेद, उपनिषद, ब्रह्म, आत्मा परमात्मा, जीवन-मृत्यु, प्रारब्ध, कर्म, स्वर्ग-नर्क सभटा शब्दें प्रत्यक्ष भ' उठल। सभहक अर्थ-निस्पत्ति छोटकी अंड़ाची सन खोंटाय लागल। खोंइचा हटैत गेल। तत्व निकलैत गेल। सभटा अंड़ाचीक लसलसीवला सुगन्धित विन्यस्त दाना मे समाहित-तिरोहित होइत रहल। जीहक उपयोग बढ़ैत गेल। स्वाद आ शब्दक संयोग साधना आ ब्रह्मतत्व बनि क' दीपित भ' उठल। लगैल छल जेना मौनक कोनो अस्तित्व नहि रहि गेल हो। मौन डरें दबकल हो जेना कोनो कोन मे।

कुटुम सभहक एक जोरदार ठहक्काक बीच अर्जुन अवतरित भेल। ओकरा संग तीनटा आर छौड़ा। बउआ के कहला पर अर्जुन ओकरा सभ के बजा अनने रहय। बीस रुपैया रोज गछने रहथिन। तै पर सँ भोज। आन काज लेल ज'न सभ तीस रुपैया रोज लैत छल। बउआ के होइत छलनि जे ज'न सभ काज मे बेस अनठबैत अछि। छौड़ा सभ मुदा खूब खटैए। छौड़ा सभ अर्जुनक संगतुरिया रहैक। चुनियाँ, स्वरुप आ जवाहर। अर्जुन अपना भरि ओकरा सभके बेस पोल्हा क' अनने रहय। पाइक अतिरिक्त भोजक लोभ देने रहैक। मासुक चर्चा विशेष रुप सँ केने छल। त' छौड़ा सभहक हाथ मे एकटा क' ट्रे रहैक। ट्रे मे पानिक गिलास सभ राखल। सभके बेरा-बेरी पानि लेल पुछलक सभ।

—'पानि लेबै?

—'पानि पीबै मालिक?'

—'पानि चाही? एक गिलास पीबि ने लिऔ।'

करीब-करीब सभ पानि पीलनि। डालना आ अमिरतीक माँगो रहैक। छौंड़ा सभक आग्रहो अपन प्रभाव छोड़लक। तकरबाद फेर सँ पान। आब अर्जुनक ड्यूटी बदलि गेल छलैक। लोक सभ आब एहि छौंडा सभके कोनो ने कोनो काज लेल बजब' लागल। सोर कर' लागल। पानि आ' पान चल' लगलैक। लोक जलखै करैत रहल। गप्प लड़बैत रहल। श्राद्धस्थली जाइत-अबैत रहल। दोसर-तेसर-चारिम-पाँचम-छठम मासिक सम्पन्न होइत रहल। पूर्वान्ह सँ अपराह्न भेल। चाह शुरुह भेल। चाहक बेर मे अर्जुनक हाथ मे पानि रहैक। ओ गओं सँ चोरा क' एक खिल्ली पान गलफर मे दबा लेने रहय। जीहके घूमा-फिराके ओकरा स्वादि रहल छल। पीक सँ मुँह भरि गेल रहैक। एक बेर पीक फेंकलक त' स्वरुपक नजरि पड़ले। चलैत-चलैत नहुयें सँ पुछलकैक, 'रे, पान खेलहीए रे? ठोर एकदम लाल भ' गेल छौ।' चुनियाँ सेहो देखलक। 'ई, बहिं, अर्जुनमा। ठोर जे लाल भेलौए। तोरा बहु बड़ मानतौ ?' अर्जुन एक धौल देलकै ओकरा। एहि क्रम मे पानक पीक कपड़ा पर खसि पड़लै। सम्हार' चाहलक मुदा सम्हरि नहि सकलै। अंगा उतारि क' पीक धोलक। तैयो कने लाल रहिये गेलै। अंगा दूरि हेबाक ओकरा कोनो

चिन्ता नहि छलैक। ठोर लाल भ' गेलैक से ओकरा लेल पैघ बात रहैक। इच्छा भेलै जे अयना मे अपन ठोर देखए। मुँह देखए। केहेन लाल भेलैए? बउआ सन भेलै की नहि? बउआ सन जँ किनसाइत भ' जइतै। मुदा एखन अयना कत' भेटतै? लेकिन देखत जरुर, अर्जुन मोने-मोन निश्चय केलक। अयनाक जोगार कर' पड़तै। माए के अयना कोनो काजक नहि छै। ओहि पर मारिते रास चेन्ह भ' गेल छै। घँसा गेलैए। मुँह ठीक सँ नहि देखाइत छै। ठोरक लाली नीक जकाँ नहि देखि सकत। ककरहु अनका सँ अयना लिअ' पड़तैक। मंजू बुच्ची सँ। नहि त' छोटकी बुआसीन सँ। अर्जुन सोचैत रहल। चाहक बाद हाथ धोइ लेल लोकके पानि दैत रहल। किछु गोटे धोथि। किछु गोटे नहियो धोथि। मुदा अर्जुन सभके हाथ धोबाक लेल कहय। लोटा बढ़ा दैन। किछु लोक बिगड़ियो जाथि।

—'दूर बूड़ि ! चाह पी क' लोक हाथ धोअत? ई छौड़ा त' अकच्छ क' देलक।'

—'रे, तूँ बड़का पण्डित भेल छैं? नियम-निष्ठा सिखबै छैं?'

—'औ, बाबू ! पण्डितक घर छियैक। नोकर-चाकर मे संस्कार छै?'

—'अरे, सोतिक खबास छियै। कोनो ठट्ठा छैक। एकदम टेढ़ अछि छौड़ा।'

—'यौ, चाह पीलाक बाद कने हाथ मे लसलसी त' लागिए जाइत छैक। पानि सँ धो लेबा मे हर्ज की?'

—'नहि, सैह टा बात नहि ने छैक। हाथ त' अइंठ भइए जाइ छै। जाबत तक जल सँ पवित्र नहि करत एहिना अपवित्र रहतैक। सम्पूर्ण देह अइंठ भ' जेतैक। ओही हाथे नाक छुअत। कान छुअत।'

—'दुर छी। एक दिन धोइए लेब ताहि सँ की हैत? आन दिन कहियो धोइते नहि छी। आइ धो लेलनि त' पवित्रता-अपवित्रता पर लेक्चर झाड़' लगलाह। बूड़ि नहितन।' आब ई चर्चा नीक जकाँ फँसि गेल रहय। पवित्रता-अपवित्रता, अइंठ-कूठि पर नीक सेमिनार शुरु भ' गेल। एक सँ एक प्राचीन आ आधुनिक विचारक लोक, विद्वान बैसल छलाह। खूब घमर्थन हुअ' लागल। विषय बोधक स्तर धरि चल आयल। विवेक पर जा कए अटकल। कर्तव्या-कर्तव्यक निर्णय हुअ' लागल। मुदा बीजारोपण केनिहार अयनाक फेर मे हवेली दिस ससरि गेल छल। ओकरा दोसरे चिन्ता छलैक। ओकरा त' एतबे मतलब छलैक जे बउआ कहने रहथिन जे लोक के चाह पीलाक बाद तों पानि देबही हाथ धोबाक लेल। सैह काज रहतौ तोहर एहि काल मे। एहि सँ वेशी एहि मादे ओकरा की बुड़बाक-जनबाक छलैक। ओ अयनाक लेल मंजू बुच्ची के गोहरबै लेल चल गेल।

श्राद्धस्थली मे मासिक सभटा खतम भ' गेल छल। खोपड़ी महक कर्म आब शुरु हैत। जकर पूर्णाहुति सपिण्डीकरण मे हेतैक। अन्य सभ पूर्वजक संग पिताक सम्मेलन। सपिण्डीकरण। आन पिण्ड सँ संयुक्त क' देब। बड़का बच्चा खोपड़ी मे बैसि क' काज शुरु क' देने रहथि। फेर सँ सव्य-अपसव्य शुरु भ' गेल छल। जनउ एक कान्ह पर सँ दोसर कान्ह पर आबि-जा रहल छल। मंत्र वातावरण मे गूंजि रहल छल। दरबाजा पर कुटुम लोकनि पवित्रता-अपवित्रता पर बहस क' रहल छलाह। बउआक उदीयमान खास खबास मंजू बुच्ची सँ अयना लेल खेखनियाँ क' रहल छल। पान सँ लाल भेल अपन ठोर देखत। जीह देखत।

X X X

भोज शुरु भेलैक त' प्रारम्भ मे वातावरण गभिनायल छल। क्रमशः मुसकी, कनफुसकी, टोका-टोकी, हँसी, ठट्ठा, ठहक्का, पिहकारी सात सुर बाज' लागल। आस्ते-आस्ते भोज मे एकटा आलाप आएल। साग, केराक साना, आलू तरल, डालनाक बाद घी परसल गेल। लोक खायब शुरु केलक। सात तरहक अंचार-चटनी रहय। राहड़िक दालि आ तुलसी फूलक भात। खएलाक कनेक कालक बाद ठोर पर मुसकी आएल। भाटा-अदौड़ी परसल जाय लागल त' कनफुसकी शुरु भेल। साग-साना, आलू तरल, डालना दौहरौल गेल त' टोका-टोकी शुरु भेल आपस मे। पापड़, रामरुचिक संग हँसी उतरल। ओलक तरकारीक स्वाद ठट्ठाक प्रारम्भ केलक। मासु परसाय लागल त' ठहक्का चल' लागल। आब लयकारी द्रुत मे आबि गेल छल। आब एकरा द्रुते मे बढ़बाक छलैक। बीच मे कखनहुँ क' तीन तालक प्रयोजन निर्धारित रहैक जे लोक दौहरौनी अथवा तीन तरहक दही मे सिद्ध, पूर्ण करैत रहल। आरोह वा अवरोह मे दही, अम्मट, श्रीखण्ड, लड्डू रसगुल्ला आ पायस क स्वाद वातावरण मे पसरैत रहल। भोज एकदम संगीतमय भ' उठल छल। स्वाद स्वर बनि गेल रहय। तीक्ख, चोख, अम्मत, कडू, खटमधूर, मधुनोन, मधूरक स्वर मे ताल-धा-नोन रहय। लोक-कुटुम सभ तृप्त भ' गेल छलाह। बूढ़ा मालिक पं गणेश्वर झाक स्वर्गकामनाक पूर्त्ति लेल तृप्ति जरुरी छल। संगहि श्राद्धक भोज सभके बहुत दिन धरि मोन रहतनि सेहो बात एकदम पक्का भ' गेल रहय। सभ विन्यस्त आ सुव्यवस्थित भोजक प्रशंसा मे श्लोक पढ़ि रहल छलाह। वातावरण एकदम बूढ़ामालिक किंवा हुनकर दादा समयक भ' गेल रहय।

अकस्मात् बउआक जोर-जोर सँ चिकड़बाक आवाज संगीत आ श्लोकक स्वर के दबबैत उमड़ि क' चारूमहर पसरि गेल। पहिलबेर आन सभ स्वर शान्त भ' गेल रहय।

—'हम तोहर ठकदरुआ छियौ रौ। नान्हिटा के छौड़ा जनमि के ठाढ़ भेलए। एकर शेखी त' देखू। जीह पकड़ि के सार घीचि लेब। तूँ हमरा चेलैंज करबें रौ। मारि डंटा सँ देह फोड़ि देबौ।' जे जत्तै सुनलक दौड़ि गेल। मुदा जे पाँती मे बैसल छलाह, भोज खतम भेलो पर उठि नहि सकलाह। जड़ भेल बैसले रहलाह। आब सभहक कान बैसल-बैसल कोनटा लगक एक-एक शब्द सुनि लिअ' चाहैत छल।

—'की भेल बउआ?'

—'किए एतेक बिगड़ि गेलहुँ।'

—के, की बाजल?'

—'के सार अहाँके चेलैंज केलक?' किछु गोटा पूछि रहल छलाह। पात पर बैसल रहनिहार उठि क' देखि नहि सकैत छलाह। इच्छा भ' रहल छलनि जे चेलैंज केनिहार के देखियैक। मुदा हुनका सभ के जेना ठकमूड़ी लागि गेल छलनि। खाली कान मे शब्द जा रहल छलनि।

—'अरे, ई जबहिरा, खच्चर नान्हिटा के छौड़ा हमरा चेलैंज क' रहलए। कहैए जे अर्जुनक जीह बदलि दिऔ। जेना कोनो पार्ट-पुर्जा रहैक।' बउआ तामसे हकमि रहल छलाह। हकमैते वृतांत सुनब' लगलाह,

'अर्जुनक जीह चून सँ कटि गेल छै। ई कानि रहल छल। सभ छोटका घेरि क' अर्जुनके मजाक उड़ा रहल छलैक। यैह सभ अर्जुन के चून बेसी द' कए पान खुआ देलकैए। छौड़ा के सौंसे जीह कटि गेल छै। एकदम खलओदार भ' गेलैए। अर्जुन के कानब-बाजब सुनि क' हम एम्हर अयलहुँ। पुछलियैक। बुझलियैक सभटा बात। ताबत बिच्चे मे ई छौड़ा जबहिरा टुभ द' बाजि देलक, 'मालिक ! एकर जीह बदलि दिऔ ने।' कहि क' हँस' लागल सार........। सभ छोटका हँस' लागल रहय।' बउआ आब चुप्प भ' गेल रहथि।

लोक सभ देखलक ओहिठाम ठाढ़ जन सभ आब हँसि त' नहि रहलए मुदा आँखि मे तमाशा देखबाक सुख ओहिना झलकि रहल छैक। बूढ़ा मालिकक छोटका बेटा छोटका बच्चा अपन जेठ भाइ बउआ के पकड़ि आंगन मे ल' अनलनि। माँझ आंगन मे स्थायी रूप सँ निर्मित मड़बा पर बैसा देलथिन। ओ एखनो हकमि रहल छलाह। पात पर बैसल कुटुम लोकनि आब उठ' लगलाह। सभक इच्छा भ' रहल छलनि जे देखी ई जबहिरा के थिक? मुदा जबहिरा हबेली मे नहि रहय। चुनियाँ आ स्वरुप सेहो नहि रहय। ओ सभ त' उनटलहा इनार लग पहुँचि गेल छल। प्रदीप ओलती मे ठाढ़ ओहि रास्ता दिस ताकि रहल छलाह जेम्हर सँ ओ छौड़ा सभ निकलल रहय।



राँड़

मामीकें विधवा रूप मे नहि देखि सकबनि। ई विचार मनीषक मोन मे जड़ि जमा लेने रहैक। आखिर मामीकें विधवा रूप मे ओ कोना देखि सकैत अछि। ओ विधवा भ' कोना सकैत छथि! की ओ मात्र विवाहिता छथि! पतिक पत्नी...बस...। मनीष सोचैत अछि।

मामाक मृत्यु भ' गेल छनि। पतिक मृत्युक बाद सभ स्त्री विधवा भ' जाइत अछि। उज्जर नुआ पहीरि लैत अछि। सिंउथ धो लैत अछि। चूड़ी फोड़ि लैत अछि। सौभाग्यक सभ चेन्ह मेटा लैत अछि। अदौ सँ ई परम्परा कायम छैक। अनकर छूल नहि खेबाक, माछ- मांस छोड़ि देबाक, अपन देह साधि लेबाक, सख-सेहन्ता जाँति लेबाक कठोर बन्धन मे कुहरैत ओ कतेको स्त्री के देखने अछि। अपन घर सँ बाहर धरि यैह सभ देखैत मनीषक चालीस बरख बीतल छैक। मनीष के होइत छैक जे स्त्रीक विधवा जीवन जतेक सहज देखाइत छैक से वास्तव मे छैक नहि। हँ, अहाँ शुतुरमुर्ग जकाँ बालु मे माथ नुका ली त' से दोसर बात। विधवाक पीड़ा आ प्रताड़ित विधवाक प्रतिशोधक कतेको खिस्सा मनीषक दिमाग मे घुरिआए लगैत छैक। ओकर मोन करुणा सँ भरि उठैत छैक। ओ निश्चय करैत अछि जे मामी के विधवा रुप मे नहि देखत। जखन अवसर औतेक मामीक उज्जर वस्त्र पर मूंगाक रंगवला शॉल ओढ़ा देतनि। ओ शॉल कीनिए क' मामी सँ भेंट कर' जायत।

जीवन मे पहिल स्त्री पितामही रहथिन जिनका मनीष सभसँ पहिने विधवा रूप मे देखने रहनि। उज्जर शांतिपूरी नुआ। माथ मे गोपी चाननक ठोप। कण्ठ मे तुलसीक माला। हाथ एकदम सुन्न। ओ अपने भानस करथिन। मुदा हुनकर भानस बड़का आयोजन हुअए। बूढ़ीक चारि पुतहु मे एक मनीषक माय रहथि। मनीषक माय के बूढ़ी सभ सँ बेसी अढ़बथिन। ओ हरदम सासुक सेवा मे लागल रहथि। अछिंजल आनि रहल छथि। भगवतीक चिनबार नीपि रहल छथि। पूजाक ओरिआओन क' रहल छथि। तरकारी काटि-धो रहल छथि। अरबा चाउर फटकि रहल छथि। टारा सँ कडूतेल निकालि रहल छथि। धनी-हरदि सिलौट पर पीसि रहल छथि। एहि सभ काज मे लागल मायक कोंचा धेने मनीष हुनका संग घुमल घुरय। मनीष के मोन पड़ै छै। पितामही खाली बैसिक' करछु-झाँझ चलाबथि। माटिक बासन प्रयोग करथिन ओ। कोहा मे भात-दालि। छन्ना मे तरकारी। भगवती पूजाक बाद बूढ़ी भानस मे लागि जाथि। ओहि सँ पूर्व भानसक सभ सरंजाम ओरिआओल रहनि। तामा मे चाउर। पथरौटी मे दालि। कठौत मे तरकारी काटल-धोअल। माली मे नोन, तेल। मसल्ला। सभ किछु। ओ आबि क' चूल्हि लग बैसथि। सुखायल छोट-छोट खुहरी पहिने चूल्हि मे देथिन। तै पर सँ सुखायल बाँसक छिल्ला राखथि। बासन चढ़ाबथि। शुरुह हुअय भानस। जांबत बूढ़ी भानस करथि, मनीषक माय चौकठि लग बैसल रहथि। कोनो आदेश ने भ' जाय। मनीष अपन मायक देह सँ सटि ओंघरायल रहय। कखनो माय ओकर केश सँ अनेरो ढील ताक' लगथिन।

दोसर स्त्री जिनका मनीष विधवा रुप मे देखलक से ओकर पीसियौत बहिन रहथिन। बहीनदाइ। बाल विधवा। बियाहक दू बरखक भीतरे हुनकर स्वामी मरि गेलथिन। सुनल छैक जे नवयुवके मे राजयक्ष्मा भ' गेल रहनि। संस्कृतक बड़ चन्सगर विद्यार्थी। बहीनदाइ साल मे किछु मास सासुर बसथिन। शेष अवधि नैहर आ मातृक मे रहथि। गोर दकदक। देह काजे झामर भेल रहनि मुदा। सदिखन कोनो ने कोनो काज मे लागल। सिबिया-कढ़िया सँ ल' क' उक्खरि मे चूड़ा कूटब धरि सभटा काज ओ अपना हाथें करथिन। हुनका एकटा बाल गोपाल छलथिन। पित्तरि के बाल गोपाल। ठेहुनियाँ दैत चलैत सन। एकटा हाथ उठल रहनि। हाथ मे गोल सन के वस्तु। मनीष के होइ जे गेन्द छियनि। बहीन दाइ के पुछलकनि,

—'बहीनदाइ, गोपालजीक हाथ मे की छियनि ?'

—'बौआ लड्डू छियनि। गोपालजी लड्डू खाइ छथि। अहाँके लड्डू नीक लगैए ?' बहीनदाइ आवेश सँ पुछने रहथिन।

—'हँ, बहीनदाइ। लड्डू हमरा पसिन्न अछि। सरिसवक लड्डू।' ओ कहने रहय। बहीनदाइ सरिस' सँ लड्डू मंगा देबाक आश्वासन देने रहथिन। छोट-छोट बुनियाक गोल-गोल लड्डू। मुदा गोपालजीक हाथ मे लड्डूक बात ओ मोन सँ नहि स्वीकारने रहय। ओकरा बेर-बेर होइ जे बाल गोपालक हाथ मे गेन्द छनि। ओ गेन्द के फेकताह। जमुना जल मे गेन्द के फेकि देताह। फेर कालिया नाग के नथताह।

बहीनदाइ के मातृक अयला सँ मनीषक माय के कने आराम होइन। हुनका सासुक सेवा-टहल सँ एकतरहें फुर्सति भ' जाइन।

मनीष आब स्कूल जाय लागल रहय। कमलाघाट पर लोअर प्राइमरी स्कूल। पहला वर्ग मे नाम लिखौल गेलैक। सभ दिन अपन टोलक संगतुरियाक संगोर क' स्कूल जाय। बस्ता मे मनोहर पोथी, सिलेट-पेंसिल राखल रहैक। स्कूल मे गुरुजी रहथिन। देखै मे एकदम भुल्ला। लोक हुनका उसनल गुरुजी कहनि। उसनल गुरुजीक हाथ मे हरदम करबीरक छड़ी रहनि। कोनो चटिया पर बिगड़थिन त' दूनू हाथ आगू पसार' कहथिन। दूनू हाथ पर सट्-सट् छड़ी बजरइ। चटिया चिचिया उठय। जोर-जोर सँ चिचिआय लागय। गुरुजीक छड़ी बजरैत रहनि। शनि दिन के सभ के शनिचरी लाब' पड़ै। एक आना पाइ। नहि त' आधा सेर कच्ची चाउर। गुरुजी लेथिन। स्कूल के सभ शनि गोबर सँ नीप' पड़ै। मैदान साफ कर' पड़ै। चोरकाँटी उखार' पड़ै। एक बेर चोरकाँटी उखारै काल महेशबा संग गप्प कर' लागल रहय मनीष। गुरुजी देखि लेने रहथिन। दूनू तरहत्थी पर सट्-सट् करबीरक छड़ी लागल रहैक। लाल भ' गेलै तरहत्थी। छड़ीक चेन्ह उखड़ि गेलैक। तहिया जे स्कूल सँ आयल त' फेर स्कूल जेबा लेल तैयारे नहि भेल। कतबो माय बुझौलथिन। संगी सभ संग करबा लेल अयलै। गुरुजी अपनो अयलथिन। मुदा मनीष कानि-कानि क' अकास माथ पर उठा लिअय। नहिएँ गेल स्कूल। पढ़ाइ छूटि गेलैक।

मनीषक बाबू बनारस मे रहथिन। मन्दिरक व्यवस्थापक। दरभंगा राजक मन्दिर। गरमी छुट्टी मे गाम अयलथिन त' सभटा खेरहा सुनलनि। मनीषक माय अपन पति सँ कहलथिन,

—'मनीष के अपना संग बनारस लेने जइअनु। एहिठाम रहताह त' मूर्ख भ' जेताह।' आ मनीष गरमीक बाद बापक संग बनारस चल गेल रहय। साते बरखक बएस रहैक तहिया। कहियो के राति क' बिछान पर लगही भ' जाइ। माय टोना-टापर केने रहथिन। चानि पर दीप लेसि क' घरक चारु कोन घुमौने रहथिन। मुदा मुतनाइ बन्द नहि भेल रहैक। एही अवस्था मे बनारस गेल। बनारस गेल त' सभटा अनभुआर सन लागै ओहिठाम। बाप के छोड़ि ककरो सँ परिचय नहि रहैक। हरदम बापक कोठली मे दुबकल रहय। बाद मे मन्दिरक घड़ीघण्ट ओकरा आकर्षित कर' लगलै। आरतीकाल मे घड़ीघण्ट बाजै। झांझ बाजै। बड़का डमरु बाजै। पाँचो मन्दिर मे एक संग आरती होइ। समूचा आसमर्द भ' जाइ। ओत्तेकाल बड़ नीक लागइ मनीष के। नहि त' आन घड़ी एकदम सुन्न, शान्त सन लागै मन्दिर। मन्दिरक जगमोहन सभ। मन्दिरक जगमोहन संगमरमरक रहैक। एकदम ऐन मेन सतरंजक खोरहा सन लागै जगमोहन। चौखुट-चौखुट। उज्जर आ कारी।

मनीष के संगमरमरक जगमोहन नीक लाग' लगलै। ओहि पर छिछलब पसिन्न पड़ै। एकदम चिक्कन रहै जगमोहन। पाँचो मन्दिर मे एकटा मन्दिर श्यामा भगवतीक रहनि। श्यामा भगवती के देखब सेहो नीक लाग' लगलै मनीष के। जखनि क' मन्दिर खुजै, मनीष श्यामा भगवतीक सोंझा मे बैसि जाय। श्यामा भगवती पीयर रेशमी नुआ पहिरने रहथि। नाक मे नकमुन्नी रहनि। कान मे कर्णफूल रहनि। हाथ मे चूड़ी रहनि। गला मे मटरदाना सन माला रहनि। मनीष के श्यामा भगवती दिस ताकब नीक लागै। ओकरा होइ जे श्यामा अपना लग बजा रहल छथिन। ओ चकित सन हुनका दिस तकैत रहय। एक दिन एहिना ओ चुपचाप श्यामा भगवती के तकैत रहय त' ओकरा एकटा स्वर सुनाइ देलकै। ओ घूरि क' तकलक। बगलवला कोठली लग ठाढ़ एकटा स्त्री ओकरा बजा रहल छलैक,

—'मनीष ! आउ, हमरा लग आउ।' ओ कनिये जोर सँ बजलै। मनीष ओहि स्त्री दिस तकलक। एक मोन भेलै जे जाइ। मुदा फेर कने डर भेलै। ओ निछोहे पड़ायल। घूरि क' तकबो ने केलक। मुदा एक दिन ओ स्त्री लग मे आबि क' ओकरा पकड़ि लेलकै। ओ जगमोहन पर बैसि क' अकास मे उड़ैत गुड्डी के देखैत रहय। नचैत गुड्डी नीक लागि रहल छलैक ओकरा। ओ स्त्री मनीष के पाँज मे ध' लेलकै। ओकरे लग बैसि गेलै। कहलकै,

—'अहाँ हमरा लग किए ने अबैत रही? बाजू। आइ त' अहाँके पकड़ि लेलहुँ हम। आब की करब?' मनीष के किछु फुड़ा नहि रहल छलैक। ओ ओहि स्त्रीक पाँज सँ छूटि क' पड़ा नहि सकैत छल। बाजल,

—'अहाँ के छी? के हैब हमर?' ओ स्त्री एहि पर हँस' लागल रहय। हँसिते बाजल,

—'हम अहींक लोक छी। अप्पन लोक। आउ, अहाँके एकटा चीज देखबै छी। चलू हमरा संग।' ओ मनीषक बाँहि पकड़ि अपन कोठली मे ल' गेलै। कोठली मे बिछान पर एकटा बच्चा सुतल रहै। आँखि मुनने निन्न। कनिऐँटा। टुनमुनिया गोल-मोल बच्चा। नीन्ने मे मुसकुराइत रहै। ओ स्त्री ओहि बच्चा के देखाक' मनीष के कहलकै,

—'देखियौ ! ई अहींक बौआ छी। अहाँके देखि नीन्नो मे केना मुसकुराय लागल अछि।' मनीष के बौआ पसिन्न पड़लै। ओ कनिऐं जोर सँ ओकर गाल छूबि लेलक। बच्चा कने कुनमुनेलै। फेर सूति रहलै। ओ स्त्री मनीष सँ पुछलकै,

—'एहि बौआ संग खेलायब अहाँ ?'

—'ई त' सूतल छै। खेलायत कोना ?'

—'जखन उठत तखन खेलायब।'

—'ई अहाँक बौआ छी ?' मनीष पुछलक।

—'हँ, हमरे बौआ छी। अहूँ त' हमरे बौआ छी ने।' ओ स्त्री कहलकै। मनीष ओहि स्त्री के देख' लागल। स्त्री मुसकुरा रहल छलैक। स्त्री मनीषक चुम्मा ल' लेलकै। मनीष के एक मोन भेलै जे अपन गाल पोछि लिअए। मुदा नहि पोछलक। बाजल,

—'आब हम जाइ छी। बाबू तकैत हेताह।'

—'ठीक छै। जाउ। फेर आएब। बौआ संगे खेलायब।'

मनीष अपन कोठली मे घूरि आयल। बाबू बैसल छलथिन। ओ हुनका लग बैसल आ पुछलकनि,

—'बाबू ! हुनका हम की कहबनि जिनका एकटा बौआ छनि, टुनमुनिया?' बाबू कने हँसलाह। फेर कहलथिन,

—'मामी कहबनि हुनका। मामी हेतीह ओ।'

—'मामीक बौआ संग हम खेला सकैत छी?' मनीष फेर पुछलक।

—'किए ने। किए ने खेलायब। एकदम खेला सकैत छी।' बाबू कहलथिन। मनीष प्रसन्न भेल रहय। आब ओकरा श्यामा भगवती दिस तकैत रहबाक आवश्यकता नहि रहि गेल रहैक।

गामीक पति श्यामभद्र मिश्र सहरसा दिसक रहथि। मनीषक पित्ती हुनकर बहिनोइ छलथिन। मनीषक पितियौतक ओ मामा रहथिन। तेँ हुनकर स्त्री मनीषक मामी भेलथिन। श्यामभद्र मिश्र के कोशी महारानीक कृपा सँ गाम छोड़' पड़ल छलनि। जीविका लेल बौआइत बनारस पहुँचल रहथि। किछु दिन त' सेठ सभक ओहिठाम पाठ-पुरस्सरण क' बुतातक इंतजाम केलनि। मुदा संयोग सँ हरिश्चन्द्र स्कूल मे किरानीक नोकरी भेटि गेलनि। कोनो मारबाड़ी सेठ एहि मे हुनकर सहायता केने रहनि। एही क्रम मे हुनका मनीषक बाबू सँ आपकता भेल रहनि। ओ मन्दिर पर हुनका लेल एकटा कोठलीक इंतजाम क' देलथिन। मन्दिर पर आर बहुत गोटे रहथि। श्यामभद्र मिश्र सेहो रह' लगलाह। बाद मे अपन स्त्री के सेहो अनलनि। बनारसे मे हुनकर पहिल संतानक जन्म भेलनि।

सभ के बूझल अछि—समय के पाँखि होइ छै। ई पाँखि समय के उड़ौने जाइ छै। निछोहे। से समय निछोहे उड़ैत गेल। मनीष स्कूल मे नाम लिखौलक। पढ़' लागल। पढ़ि क' स्कूल सँ आबय त' पड़ाय मामी लग। मामी जेना बाट तकैत रहथिन। कहियो दलिपूड़ी, कहियो छनुआ सोहारी, कहियो भुज्जा, कहियो ठकुआ....मतलब किछु ने किछु ओकरा लेल रखनहि रहथिन। अपन कोठली मे

ओकरा लेल कोपड़ा मे बेरहट राखल रहैक। भात, दालि, तरकारी...। भोर के स्कूल होइ त' ओ चाहक संग रतुका सोहारी खा क' जाय। बेरहट ओकरा नहि सोहाइ। पंचफोड़ना सँ छौंकल दालि नहि पसिन्न पड़ै। ओ हींग आ जीर सँ छौंकल दालि खाय चाहय। जेहेन ओकर माय रन्हैत रहैक। ओ माय सन अन्न-तीमन चाहय। मुदा बाबू हाथक बनाओल अन्न-तीमन ओकरा विवशता में खाय पड़ैक। राति क' बाबू भानस नहि करथिन। मन्दिरक खबास अनोन तरकारी आ सोहारी बनाबय। अनोन तरकारी मे नोन मिलाक' सभ दिन बाबू देथिन। दूधो रहैक। मुदा एकदम पानि सन। भरिसक अहीकारणे बाबू बम्बइया केरा अनथिन। दूध-सोहारी मे मिलाक' खाथिन। मनीष के केरा नहि पसिन्न रहैक। ताहू मे बम्बइया त' एकदम्मे नहि। बाबूक बनाओल भानस मे सभ दिन एक्के स्वाद लागइ। ओकरा गाम मोन पड़ै। माय मोन पड़ै। तीमन-तरकारी मोन पड़ै। आम-लताम मोन पड़ै। जलखै करेबा लेल मायक घुरिआयब मोन पड़ै। एहि आंगन सँ ओहि आंगन धरि मनीष घुरल घुरय। माय जलखै लेल ओकरा तकने घुरथिन। पकड़ा जाय त' जलखै एकदम्मे नकारि दिअय। दूध-रोटी ओ नहि खायत। दालि-रोटी खायत। जाबत दालि नहि रन्हाइ, ओ जलखै नहि करय गाम मे। माय मनबैत रहथिन। एहि आंगन सँ ओहि आंगन धरि तकैत रहथिन मनीष के।

मनीष बनारस मे बढ़ैत गेल। पढ़ैत गेल। नव-नव संगी सभ बनल गेलैक। दिनेश, मंगल, रमेश, कृपाशंकर, सिराजुद्दीन, जावेद....। गामक संगी सभ के बिसरैत गेल। व्यस्तता बढ़ैत गेलैक। पढ़ाइ भारी होइत गेलैक। मोछ-दाढ़ी भ' गेलैक। बाँहि, जाँघ, देह कसाइत गेलैक। अपन देह नीक लाग' लगलैक। दण्ड, बैसकी करय। करिया बद्धी पहिर' लागल। जवान हुअ' लागल। इच्छा हुअ' लगलैक जे लोक ओकर प्रशंसा करै। रूपक चर्च करैक। सुन्दरता के सराहै। मुदा मामी लेल धन्न सन। ओ कहियो मनीष के जवान नहि बुझलथिन। ओकर संगियो सभ के धिये-पूता बुझथिन। मुदा मनीष के की सभ नीक लगै छै से हुनका सभटा बूझल छलनि। मनीष के होइ जे अपना सँ बेसी मामी ओकरा चिन्हैत छथिन। बाबू सँ बेसी मामी ओकरा बुझैत छथिन। अपन कोनो समस्या हुनका सँ ओ नुका नहि पाबय। कोशिश कइयो क' मामीक नजरि सँ ओ बँचि नहि सकय।

—'मनीष, आइ-काल्हि अहाँके उदास देखैत छी। की बात छियै ?' ओ पूछि देथिन।

—'कहाँ किछु। यैह परीक्षा नजदीक आबि गेल अछि। मेहनति बेसी कर' पड़ैए।' मनीष असली बात नुकाब' चाहय। मुदा ओ मानथिन नहि। हुनका मनीष नहि ठकि पाबय।

—'मेहनति सँ लोक उदास किए होयत? परीक्षा समय मे त' आर प्रसन्न रहबाक चाही। सत्त-सत्त कहू की बात छै?' मामी छोड़थिन नहि। ओकरा कह' पड़ै,

—'पढ़ै छी मुदा मोन नहि रहैए। दू दिनक बाद बिसरि जाइ छियैक। लगैए परीक्षा बेर मे बात मोन रहत की नहि।' मनीष के होइ जे एहि मे मामी ओकर की सहायता करथिन। ई सभ त' पढ़बा-लिखबाक गप्प छियैक। स्मरण रखबाक प्रक्रियाक बात थिक। मामी पढ़बा-लिखबाक गप्प भले नहि बुझथिन।मुदा मनीष के चिन्हैत रहथिन। अकस्मात् पूछि देथिन,

—'सिराजुद्दीन के आइ-काल्हि नहि देखैत छियैक। ओ अहाँ संग पढ़बा लेल नहि अबैए। किए ? की बात भेलैए ? अहाँ किछु कहि देलियै की?'

—'हँ, हम ओकरा एहिठाम नहि अयबा लेल कहलियैए।'

—'से किए ? दूनू गोटा केहेन बढ़िया मीलि क' पढ़ैत छलहुँ?'

—'ठाकुरजी बाबू के कहलथिन अछि जे सिराजुद्दीन नीक लोक नहि अछि। मन्दिर पर ओकर आयब-जायब ठीक नहि। तैं पर बाबू हमरा ओकरा संग रहबा सँ मना केलनि अछि।'

—'अहाँके केहेन लगैए? की सिराजुद्दीन ठीके नीक लोक नहि अछि?' मामीक आँखि मनीष पर जमि गेल रहनि। मनीष जेना गह्वरित भ' गेल रहय। आँखि मे नोर हुलुक-बुलुक कर' लगलै। कण्ठ फाटि गेलै। बाजल,

—नहि मामी, ओ त' एकदम नीक लोक अछि। ओकरा संग पढ़बा मे हमरा बड़ मोन लगैए। ओकर संग जरूरी अछि।' मामीक स्वर तेज भ' गेल रहनि।

—'त' अहाँ बाबूक बात किए मानि लेलहुँ? गलत बात कोना स्वीकार क' लेलहुँ? अपन बात किए नहि रखलियनि हुनका लग? हमरा लगैए अहाँ कहबनि त' बाबू मानि जेताह। आइये कहिअनु। साँझ मे हमरा कहू बाबू की कहलनि।'

साँझ मे दलिपूड़ी खाइत मनीष हुनका सूचना देने रहय।

—'बाबू मानि गेलाह। सिराजुद्दीन सँ माफी मांगि अयलहुँ अछि। ओ बड़ उदार अछि। तुरन्ते मानि गेल। कहलक जे हमरो पढ़बा मे मोन नहि लगैत छल। काल्हि सँ दूनू गोटे मीलि क' फेर परीक्षाक तैयारी शुरु करब।' एकटा उल्लास मनीषक चेहरा पर पसरि जाइ। मामी सुखी होइथ। कहथिन,

—'बड़ी आर लिअ'। हींगक सुगन्धि लगैए की नहि।' मनीष कने बेसिए खा लिअए। पढ़ै मे जूमि जाय।

बनारस मे मन्दिर पर गाम दिस सँ लोक आबय। घुमबा-फिरबा लेल। गंगा-विश्वनाथ लेल। मरबाक लेल। काशी लाभक कामना सँ। मामी सभक खोज-पुछारी

करथि। कोनो प्रयोजन पर सदिखन हाजिर। साक्षी विनायक गली जा रहल छथि। विश्वविद्यालयक विश्वनाथ मन्दिर जा रहल छथि। संकटमोचन, दुर्गामंदिर जा रहल छथि। बजार जा रहल छथि। कोनो बेगरता पर सभ सँ पहिने ओ जूमि जाथिन। सुख-दुख मे एक समान। दशाश्वमेध आ मणिकर्णिकाघाट दूनू एक रंग रहनि हुनका लेल। एकटा बेटा आ एकटा बेटी रहनि हुनका। दूनू स्कूल जाय लागल रहय। श्यामभद्र मिश्र स्कूलक बाद विद्यार्थी सभ के पढ़ब' लेल सेहो जाथि। तीन-चारिटा ट्यूशन पकड़ने रहथि। दूनू बेक्ती मे अपूर्व सामंजस्य। पति ओ धिया-पुता के स्कूल पठा मामी आगन्तुक लोकक खोज-पुछारी मे लागि जाथि।

मिथिलाक कोनो गाम-शहर सँ लोक काशी लाभ लेल अबिते रहय। मोक्षक अभिलाषी मैथिल लोकनिक लेल नीलकण्ठ, श्यामामन्दिर, तारा मन्दिर, राम मन्दिर, रानीकोठा आश्रय स्थल छल। मनीष अकस्मात् देखय मन्दिरक जगमोहन पर कोनो नवागन्तुक वृद्ध वा बृद्धा पड़ल छथि। मोटरी-चोटरी, बक्सा लेने समांग सभ घेरने। मनीषक बाबू नाड़ी देखबा मे पारंगत रहथिन। ओ नाड़ी देखिक' अनुमान करथिन जे कतेक समय साँस टुटबा मे बाँकी छैक। तदनुसारे मणिकर्णिकाघाट चलबाक तैयारी हुअय। मणिकर्णिका पर सेहो रहबाक व्यवस्था रहैक। गंगाकात मे। कतेक लोक त' ओत्तहु सँ दस-पाँच दिन रहि घूरि आबय। समांग सभक उत्साह क्रमशः भंग हुअ लागै। कतेक त' एकदम अकच्छ भ' जाय।

—'ह'...ह'...ह'...आब कतेक दिन आर रह' पड़त से नहि जानि। बिया-बालिक समय भेल जाइत अछि। खेतीए-पथारी पर त' सभ टीम-टाम। खेतीए बिसुकि जायत त' की काशी लाभ आ की मोक्ष?' मुदा मोक्षकामना सँ भरल वृद्ध काशी सँ घूरि क' नहि जाय चाहथि। एक-आध समांग छोड़ि सभ गाम घूरि जाय। एहना मे काशीक लोक हुनका लोकनिक काज आबथि।

—'हे, कने देखबनि। अहीं सभक असरा अछि। काजे तेहेन भ' गेल अछि जे। एहना मे छोड़ि क' किन्हु नहि जइतहुँ।' मामी जिम्मा लेबा मे सभ सँ आगू रहथि। पति सेहो कखनहु के हुनकर सहायता करथिन। क्षेत्रन्यास कर'बला लोक हिनका सभ पर विश्वासो बहुत करय। क्षेत्रन्यास माने काशी छोड़ि आनठाम नहि जायब। मोक्ष लेल सतुआ बान्हि कँ' पड़ि रहब। काशी लाभक लेल त' लोक मास-बरख धरि प्रतीक्षा करय। समांग सभक अभाव मे मामी प्रयोजन पर हाजिर। मुदा मन्दिरक आन लोक सभ एहि मे खाली मामीक स्वार्थटा देखय। हुनकर उन्नति सँ जरय। जिम्मा लेबाक कौचर्य करय।

—'अरे, हुनका नहि चिन्हबनि अहाँ सभ। बहुत चरबर-चलाकि माउग छथि। ओहिना एहन सिंगार-पटार रहै छनि? रंग-विरंगक छपुआ नुआ। सिनूर-टुकली। भेलपूर मे दू कट्ठा जमीन...। कोनो की साँए के कमाए पर। एकटा

किरानीक ओकातिए कत्ते होइ छै।' मनीष सभटा गप्प सुनय। एक दिन पुछलकनि मामी सँ त' ओ तुरन्ते गछलथिन।

—'ई बात ठीक छै जे लोकक सेवा क' हमरा आमदनी होइए। लोक के हमर बेगरता होइ छै। मुदा हम बेगरता के दूहै नहि छियै। खुशी सँ लोक पाइ दैए। बढ़ियाँ पाइ दैए। हमहूँ जी-जान सँ सेवा करैत छियैक। जीवन सँ मृत्यु धरि सेवा। तकराबाद दाह संस्कार सँ श्राद्ध धरिक ओरिआओन। सभटा सुविधा आ सरंजाम जुटबै छी। एहि मे अहाँक मामा सेहो हमर सहायता करैत छथि। एहि आमदनी सँ हम अपन बेगरता शान्त करैत छी। पहिरै-ओढ़ै छी। धिया-पूता के नीक स्कूल मे पढ़बै छी। एकटा घर बनेबा लेल जमीन लेलहुँ अछि। की मेहनति क' कए उन्नति करब बेजाए बात थिक, मनीष? अहीं कहू?' मनीष चोट्टे उत्तर देने छल,

—'नहि, कोनो बेजाए बात नहि थिक। अहाँ कोनो बेजाए काज नहि करै छी, मामी। सभ किछु बूझल-जानल अछि अहाँके। काजक इलम अबैए। अहाँ सक्षम छी। लोक के कत्ते सुविधा होइत छै। त' अपन सेवा के पाइ मे किए नहि बदलब? एत' मरबोक लल त' कोनो गरीब नहि अबैए। पाइएबला सभ अबैए।' मामीक कलेजा सूप सन के भेल रहनि।

बनारस मे मनीष विधवा सभ के सेहो देखय। लोक कहै, 'राँड़, साँढ़, सीढ़ी, सन्यासी। एहि सँ बची त' बसी काशी।' मैथिल विधवा लोकनि रानीकोठा, अन्हरीकोठा मे रहथि। मनीष के होइ जे एत्ते विधवा सभ गाम सँ एत' कोना चल अयलीह। किएक आब' पड़लनि गाम-घर छोड़ि क'। मनीष देखय जे बनारस मे मिथिला आ बंगाल दूइए क्षेत्रक विधवा भरल छथि। अन्हरी कोठा मैथिल विधवा लोकनिक मुख्य निवास स्थान रहनि। टेढ़ी नीम मे। अन्हरीकोठा त' ठीके अन्हार रहैक। एक बेर मन्दिर पर श्राद्ध मे कनबाक लेल नेपोभाटिनक काज रहैक। ई काज मैथिलो विधवा सभ करथि। द्वादशाह दिन जखन कर्त्ता श्राद्ध कर्म समाप्त क' आबथि त' ई नेपोभाटिन सभ खूब झौहरि करय। लोक कहै जे जत्ते जोर सँ ई सभ कानत तत्ते मोक्ष पक्का हैत। एहि लेल फी विधवा टाका भेटै। रमेशक संग मनीष गेल नेपोभाटिन ठीक कर'। सातटा नेपोभाटिनक काज रहैक। अन्हरीकोठा पहुँचल त' मारितेरास मसोमात सभ ओकरा घेरि लेलकै। ओ सभ रमेश के चिन्हैत रहय। ओ पहिनहुँ आयल छल नेपोभाटिन लेल अन्हरीकोठा। मनीष देखलक मसोमात सभ विभिन्न बएसक छथि। युवती सँ ल' कए बृद्धा धरि। सभ टांस बोली मे चें...चें...करैत मारितेरास प्रश्न पूछ' लागल रहैक। अपन चयन लेल उपरौंझ कर' लागल रहय। रमेश एहि मे पटु छल। ओ सातटा मसोमात के चुनि लेलक। मुदा अन्हार आ हल्ला सँ मनीषक मोन औनाय लगलै। ओ जल्दी सँ घुरि चलबाक

लेल रमेश के कहलक। पड़ाएल ओत' सँ। फेर कहियो अन्हरीकोठा नहि गेल। मुदा बहुत दिन धरि अन्हरीकोठा आ चें...चें...करैत विधवा लोकनिक आवाज गूंजैत रहलैक। मनीष के विश्वनाथ-अन्नपूर्णा मन्दिर लग भीख मंगैत मैथिल विधवा सभ सेहो भेटै। मन्दिर लग दर्शनार्थी सँ भीखो मांगि रहल अछि। आपस मे झगड़ो क' रहल अछि। ओकरा सभ के मैथिली मे बजैत सुनि बाद मे मनीषक मोन कोनादन कर' लागइ। विश्वनाथ आ अन्नपूर्णाक दर्शन करब मुश्किल भ' जाइ। दर्शनक सभ उत्साह बिला जाइ। एक दिन राति मे ओ एकटा सपना देखलक। एकटा बड़का दैत्याकार मशीन छै। मशीन धीरे-धीरे...घर्र...घर्र...करैत चलि रहल छैक। एक दिस किशोरी सँ बूढ़ धरि सजल-धजल, लाल-पीयर-हरियर नुआ पहिरने, सिंगार-पटार केने स्त्री लोकनि ओहि मशीन मे प्रवेश क' रहल छथि। त' दोसर दिस सँ उज्जर नुआ पहिरने, पिरौंछ देह लेने, सिंगारविहीन, उदास स्त्री लोकनि बाहर आबि रहल छथि। हेंजक हेंज...। मशीन घर्र...घर्र...करैत चलि रहल अछि। निरंतर...।

मनीष के बनारस जेबाक अवसर भेटि गेल रहैक। बनारस पहुँचि क' मामी के देखबा लेल ओ बेकल रहय। मामीक हाल-चाल बूझब जरुरी रहै ओकरा लेल। ओकरा होइत छलैक जे मामीक स्वतंत्र सत्ता केवल मामाक मृत्यु सँ कोना समाप्त भ' सकैत अछि। पतिक मृत्यु सँ स्त्रीक जीवन जेना भहरि जाइत छैक तेना स्त्रीक मृत्यु सँ पतिक जीवन त' नहि भहरै छैक। मनीष अपन मायक मृत्यु देखने अछि। बाबू जीविते छलाह। तुलसी चौड़ा लग मायक लाश पड़ल रहैक। बाबू मायक माथ मे सिनूर लगबैत कहने रहथि,

—'जाउ, मनीषक माय। जीवित मे अहाँके बड़ दुख देलहुँ। बड़ क्रोध केलहुँ अहाँ पर जीवन भरि। माफ क' देब हमरा।' मुदा लाश सँ माफी मांगियो क' स्त्रीक मृत्युक कारणे हुनकर दिनचर्या मे कोनो अन्तर नहि आयल। भेष-भूसा नहि बदलल। माछ-मासु खाइते रहलाह। सभटा काज ओहिना करैत रहलाह जेना पहिने करथि। कोनो अन्तर नहि।

मनीष बनारस पहुँचल त' ओकरा संग मूंगाक रंग-बला शॉल रहैक। ओ निश्चय केने रहय जे मामीक उज्जर वस्त्र के मूंगाक रंगबला शॉल सँ झाँपि देत। अपना हाथें मामी के रंगीन शॉल ओढ़ा देतनि।

मुदा मनीष जखन मामीक सोंझा गेल त' हुनका आसमानी रंगक नुआ मे देखलक। आसमानी रंगक नुआ-ब्लाउज पहिरने मामी जेना सम्पूर्ण अकास के समेटने छलीह। हाथ मे घड़ी रहनि। सोनाक चूड़ी रहनि। मनीष के कने धक्का लगलै। ओ स्तब्ध रहि गेल। मुदा प्रसन्नता लगले भकरार भ' गेलै। मामीयो के मनीष के देखि खुशी भेलनि। मनीष मूंगाक रंगबला शॉल निकालि हुनका ओढ़ा

देलक। मामी आर प्रसन्न भेलीह। प्रसन्नता हुनकर आँखि सँ मोती बनि क' निकलल। कहलथिन,

—'हमरा अहाँ सँ यैह आशा छल मनीष। हम जनैत रही जे अहाँ विधवा रूप मे हमरा बरदास्त नहि क' सकब। हम राँड़ नहि भेलहुँ अछि मनीष। हम राँड़ नहि छी।' मनीष के अकस्मात् मायक मृत्युक बादक बाबूक जीवन मोन पड़लै। बाजल,

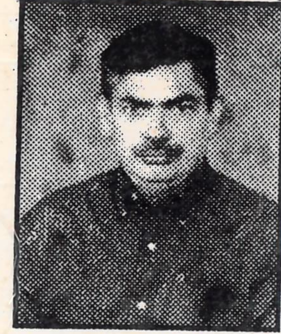
—'नहि, अहाँ विधवा नहि भेलहुँ अछि। अहाँ विधवा कोना भ' सकैत छी, मामी !' मनीष देखलक मामीक बेटा-बेटी, पुतहु सभ स्नेह सँ मनीष दिस ताकि रहल छथि। सभक चेहरा पर उल्लासक इजोत पसरल छलैक। तखने मनीषक नजरि पलंग पर सूतल एकटा बच्चा पर गेलैक। ओ बच्चा लग गेल। बच्चा मामीक पोता रहनि। मनीष बच्चाक गाल छूलक। बच्चा कने कुनमुनेलै। फेर नीन्न मे मुसकुराय लगलै। ई सभ देखि मामी के हँसी लगलनि। मामी मनीष सँ पुछलथिन,

—'अहाँके त' भूख लागल हैत। की खायब ?'

—'दलिपूड़ी आ बड़ी। बहुत दिन भ' गेल मामी, अहाँक हाथक दलिपूड़ी खयना।' मनीष बच्चा जकाँ ठुनक' लागल रहय। मामी आब भभाक' हँसलीह। दुलार सँ बजलीह,

—'के कहैए अहाँ बड़का इंजीनियर भ' गेल छी। अहाँ त' एकदम ओहिना छी। बच्चा...एकदम बच्चा...।' मनीष मामी के देखि रहल छल।





अशोक

जन्म	अठारह जनवरी, 1953
जन्मभूमि	लोहना (मधुबनी)
शिक्षा	: बी०एस०सी०, डी०सी०एम० (यू०एस०एस०आर०)
वृत्ति	चाकरी, बिहार सहकारिता सेवा
सम्पर्क	सी/407, आफिसर्स फ्लैट, बेलीरोड, पटना-800 001
प्रकाशन	**चक्रव्यूह** (कविता संग्रह)
	त्रिकोण (सहयोगी कथा संग्रह)
	ओहि रातिक भोर (कथा-संग्रह)
	पृथ्वीपुत्र (नाट्य रूपान्तर)
	मातबर (कथा-संग्रह) —'सगर राति दीप जरय' कार्यक्रम मे पठित, विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित, पुस्तकाकार प्रकाशनक बेर मे परिवर्तित-परिवर्द्धित।
सम्पादन	**सन्धान** (अनियतकालीन पत्रिका)

